

बुनियादी शिक्षा

गांधीजी



नवजीवन प्रकाशन मंदिर
अहमदाबाद

बुनियादी शिक्षा

गांधीजी

“मने यह सुझानेका साहस किया है कि शिक्षाको स्वयंसेवात्मक बनाना देना चाहिये, फिर गले ही लोग मुझे यह कहें कि मेरे अल्पकालिक रचनात्मक कार्यकी योग्यता नहीं है। . . . बुस्के स्वावलंबी होनेको ही मे उसकी सफलताकी कसौटी मानूँगा।”



नवजीवन प्रकाशन मंदिर
अहमदाबाद

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाजी देसाजी
नवजीवन मूद्रणालय, अहमदावाद-९

सर्वाधिकार नवजीवन प्रकाशन नम्ब्याके 'अजीन

पहली आवृत्ति ३,००० — १९५०

दूसरी आवृत्ति ३,०००

प्रकाशकका निवेदन

‘वुनियादी शिक्षा’ की यह दूसरी आवृत्ति पाठकोके सामने रखते हुअे हमे बडी खुशी होती ह। बिसमे पृष्ठ १०४ पर प्रकरण २१ का चौथा खड, पृष्ठ १०५ पर ‘अेक मन्त्रीका स्वप्न’ नामक लेख और पृष्ठ १४५ पर पाँचवें भागके शुरूमें ‘म्युनिसिपैलिटियाँ और प्राथमिक शिक्षा’ नामक लेख नया जोडा गया है। बाकी सब पहली आवृत्ति जैसा ही है।

बिस बीच देशके विभिन्न हिस्सोमे वुनियादी शिक्षाका काम काफी आगे बढा है। बिसमे कोअी शक नही कि भारतकी आजकी परिस्थितियोमें हमे अगर शिक्षाको देअव्यापी बनाना है, तो अुसका अेकमात्र अुपाय गाधीजी द्वारा प्रतिपादित वुनियादी शिक्षा या नवी तालीमके सिद्धान्तोके आधर पर दी जानेवाली स्वानलम्बी शिक्षा ही हो सकती है। आशा है बिस दिशामे यह पुस्तक सवका नही मार्गदर्शन करेगी।

१५-१२-५३

निवेदन

जिमके पाम जीवनके विषयमे आदिसे अन्त तकके पूर्ण विचार हो, जिजासा हो और अुसकी साधनाके लिअे सतत पुरुषार्थ हो, अुसके पात शिक्षाके वारेमें अपना अेक खास तत्त्वज्ञान — दर्शन — जरूर है, अैसा कहना गलत नही होगा। भले वह व्यक्ति शिक्षाशास्त्र या मानस-शास्त्रकी कोअी परिभाषा कदाचित् काममे न लेता हो — न भी ले सकता हो, लेकिन परिभाषा दर्शन नही है। सभव है परिभाषा होने पर भी दर्शन न हो और दर्शन हो तो परिभाषाकी जरूरत सीमित हो जाती है। दर्शन स्वय अपनी भाषाकी रचना कर लेता है। गाधीजी अिसी प्रकारके शिक्षाशास्त्री थे। अैमे लोगोके मनमें जीवनकी सच्ची शिक्षा और जीवनकी मफलताके लिअे सच्ची साधनामें कोअी फर्क नही होता। केवल अुस साधनाको पाठशालाओंमें दाखिल करना होता है। गाधीजीने वैसा करनेका प्रयत्न लगभग जीवनभर किया। अैसा कहा जा सकता है कि वे जबसे सयाने और जिम्मेदार बने, तबसे अपने व्यक्तिगत विकासके लिअे और वालकोकी जिम्मेदारी आअी तबसे अुनकी शिक्षाकी दृष्टिसे, अुन्होंने सारी जिन्दगी शिक्षाका काम किया। अिस दृष्टिसे अुनके 'सत्यके प्रयोग' (आत्म-कथा) अुनके 'शिक्षाके प्रयोग' ही है।

अिसके अलावा, जिसे साधारण तौर पर शिक्षा कहा जाता है, अुसके वारेमें भी अुन्होंने काफी लिखा है। अिन सब लेखोसे, अुनके साररूप अब तक दो ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमे गाधीजीके शिक्षा-सवधी विचार लगभग समग्र रूपमे मिल जाते हैं

१ सच्ची शिक्षा

२ शिक्षाकी समस्या .

५

५

जिनमें मनुष्यके सर्वांगीण विकासकी दृष्टिसे शिक्षाके सिद्धान्तका और उसके विविध अंगोंका निरूपण किया गया है। सन् १९२० में गांधीजीने राष्ट्रीय शिक्षाका जो महान् प्रयोग शुरू किया, उसका भी सागोपाग वर्णन जिनमें आ जाता है।

सन् १९३७ के बाद शिक्षामें दो मुख्य बातोंकी तरफ गांधीजीको खास ध्यान देना पड़ा (१) राष्ट्रभाषाका प्रचार, (२) राष्ट्रकी सार्वत्रिक शिक्षा। अतः उन्होंने १९३७ से १९४७ तकके दस वर्षोंमें जिन दो-बातोंकी विशेष चर्चा की और देशमें जबरदस्त आन्दोलन चलाया। उनमें से पहली बातका निरूपण करनेवाले लेखोंका संग्रह— 'राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी'—पहले प्रकाशित हो चुका है। दूसरीसे संबंधित लेखोंका यह संग्रह अब प्रकाशित हो रहा है।

एक तरहसे देखा जाय तो जिस दूसरे संग्रहकी जिस समय बहुत जरूरत है। सन् १९३७ में वर्षा-शिक्षा-योजना या बुनियादी शिक्षाका जन्म हुआ। दो तीन वर्ष तक उसका काम अमग और श्रद्धाने चला। फिर राजनैतिक अलट-फेरके कारण यह काम लगभग १९४६-४७ तक गड़बड़ीमें पड़ गया। उसके तरह-तरहके नये अर्थ किये गये और नयी शाखा-अपशाखाओं निकली। १९४७ से सरकारोंने फिरसे जिन कामको सँभालना शुरू किया है। जिसलिसे दरअसल यह कहा जा सकता है कि १९३७ में १९४७ तकके दस वर्षोंके अरसेमें वर्षा-शिक्षा-योजनाका प्रयोग व्यवस्थित रूपमें नहीं चला। और यदि हम यह कहें कि व्यवस्थित प्रयोग तो १९४७ में आजादी प्राप्त होनेके बाद ही शुरू हुआ, तो गलत न होगा। जैसे समय गांधीजीके विचार वास्तवमें क्या थे, जिसका मनन करना चाहिये, जिससे जिसकी नीतिके बारेमें बीचके समयमें जो अचित्त-अनुचित या अल्ट्रा-सीवा हुआ हो, उसके विषयमें प्रजा और सरकारको साफ-साफ मालूम हो जाय।

वर्षा-योजनाके रूपमें गांधीजीने जो विचार पेश किये, वे उनके पूर्व विचारोंमें या शिक्षाके प्रयोगोंमें बिलकुल अलग और नये ही थे,

ऐसा नहीं है। अनुमें यदि कोई फर्क हो, तो वह अनुकी पृष्ठभूमिके कारण ही। १९२० से गांधीजीने जो प्रयोग शुरू किये, वे देशमें स्वराज्य लानेवाली शिक्षाके प्रयोग थे। १९३७ के बाद अिन प्रयोगोकी भूमिकामें अपने आप परिवर्तन हो गया और ये प्रयोग जो प्रान्तीय स्वराज्य आया, उसकी शिक्षाके थे। अर्थात्, पहले जो मर्यादा थी वह मिट गयी और उसकी जगह देशव्यापी विचार और पुनर्गठनकी भूमिका अर्पणना जरूरी हो गया। गांधीजीने ही कहा है

“मेरा पेश किया हुआ शिक्षाक्रम भी रचनात्मक कार्यका ही एक बड़ा अंग है। जो रूप उसे मैं आज दे रहा हूँ, उसे कांग्रेसने अपना लिया है, यह कहनेका मेरा आशय नहीं है। पर मैं जो लिख रहा हूँ, वह १९२० से राष्ट्रीय शालाओंके लिये जो कुछ मैंने कहा है या लिखा है, उसकी जड़में छिपा हुआ ही था। वह समय आने पर मेरे सामने अकेलेके प्रकट हुआ है, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।” (देखिये पृ० ४३)

जिसलिये वर्धा-योजनाके सागोपाग अध्ययनकी अच्छा रखनेवाले व्यक्तिको गांधीजीकी शुरूमें बतायी हुयी शिक्षा-सवधी दोनों पुस्तके भी पढनी चाहिये। अनुमें उसे वर्धा-योजनाकी पूरी भूमिका मिल जायगी। पर आज सबके लिये विशेष जरूरी यह है कि गांधीजीने जो चीज आजकी आवश्यकताफो देखकर पेश की है, उसे उसके मूल रूपमें समझ लिया जाय। उसमें परिवर्तन करनेकी मनाही नहीं हो सकती, परन्तु जिस परिवर्तनका विचार किया जाय, वह उसमें सुधार करनेवाला होना चाहिये, योजनाके मूल बुद्देश्यको बिगाडनेवाला नहीं। वर्धा-शिक्षा-योजनाकी दिशामें ऐसा शुद्ध प्रयाण करना हो, तो उसके बारेमें गांधीजीने जो कुछ लिखा है उसका पुस्तकरूपमें सग्रह अम्यासियो, शिक्षाशास्त्रियो, शिक्षको और अध्यापन-भदिरो सबके लिये उपयोगी हो सकता है।

वर्धा-योजनाको अमलमें लानेमें आज जो बड़ी कठिनायी है, अमुके वारेमें गाधीजीने स्वयं भी स्पष्ट कहा है। वह कठिनायी अुनी प्रकारकी है, जैसी हरबेक क्रांतिकारी कदम अुठानेमें आती है। प्रत्येक पुनर्गठनके भाग्यके साथ वह जुड़ी ही होती है। वह है पुराना परम्परागत शिक्षा-तंत्र, अुसमें अुत्पन्न हुअे मूल्य तथा अुसके साथ गुये हुअे स्थापित न्वायं। गाधीजीने अिम नवधमें कहा था :

“ मैं आपकी मुश्किलोको खूब समझता हूँ। जो लोग (शिक्षाकी) पुरानी परम्परामें पले है, अुसके लिये अुसे अेकवारगी ठुकरा देना आमान काम नहीं है।” (पृ० १४९)

अिमोलिये, अुदाहरणायं, गाधीजीके ठेठ १९३८ में यह वात स्पष्ट कह देने पर भी कि अंग्रेजीको पहले सात वर्षोंकी पढाअीमें हटाना विलकुल जरूरी है, यह कदम दम बरम दाद १९४७ में अुठायी गया और अुठाले ही अुसे अधूरा भी बना दिया गया। अ्रद्धा और निष्ठा-अन्य अिन्यरताके बिना यह अडचन दूर नहीं हो सकती। अियीअिये अुन्होने मंत्रियों और शिक्षा-विभागको मलाह दी थी

“अगर मैं मंत्री होता, तो मैं अिम तरहकी न्वात हिदायते जारी करता कि आअिन्दामे शिक्षामे मन्वन्व रखनेवाला नरकारकां नमूना काम नहीं तालीमकी अाअिन पर चलेगा। अिनस्पेअरों और शिक्षा-विभागके दूसरे अफसरोकी अगर अिम नीतिमें अ्रद्धा नहीं है, या वे अीमानदारीसे अिम पर अमल करता नहीं चाहते, तो मैं अुन्हे अिस्तीफा देकर चले जानेकी छूट दूंगा। अेअिन अगर मंत्री अपना अर्ज समझ लें और अिम नीतिको अमली अकल देनेकी कोशिश करें, तो यह नौबत ही न आये। अिअं हकम अिवाअल देनेमें काम नहीं चलेगा।” (पृ० १४९)

अिममें भी बड़ी कठिनायी तो अुद्योगकी शिक्षा और अुद्योग अंग शिक्षा अिम तरह ही जाय, अिम मूल अिन्चारके अमलमें वारेमें

पंदा हुआ है। बुद्योग अंक साधन है, साथ ही साथ वह साव्य भी है। दूसरे विषयोका अंश नहीं है। अतः बुद्योगको अंक साव्यके रूपमें ठीकसे मिथाना चाहिये। बुसका काम व्यवस्थित होना चाहिये। तभी शिक्षाके अंक साधनके तौर पर वह अपनी शक्ति दिखा सकता है। पुरानी शिक्षा-पद्धतिको शरीरश्रमसे धृणा है, बुसमें अंच-नीचका भाव भी धुस गया है। जिसलिअे स्कूलोंमें अपर वतायी हुआ दृष्टिमें बुद्योग नहीं चला। और दूसरी तरफ बुसे साधनके तौर पर काममें लेनेके लिअे शिक्षा-शास्त्रियोने अनुवचके नामसे अंक विचित्र ही पहलूका निर्माण किया। बुसे 'अंक्तिविटी' और 'प्रोजेक्ट' पद्धतिके साथ जोडा गया। असा करनेसे भी शिक्षा अच्छी तरह नहीं सुघर सकी। और बुद्योगको, केवल प्रयोगशालाके अंक प्रयोगके रूपमें ही अपनाानेके वाद बुसके विषयमें तरह-तरहकी जानकारीकी वातो और पुस्तको पर ही शिक्षा-पद्धति लौट गयी। और नियत अभ्यासक्रम तो पूरा करना ही चाहिये, अतः बुद्योगकी शिक्षा क्रमग कम होती गयी। पाठक देखेंगे कि गाधीजीके लेखोंमें 'अनुवन्ध' शब्दका प्रयोग नहीं हुआ है। वे तो 'बुद्योग द्वारा शिक्षा' कहते हैं, और यदि समझदारीसे बुद्योग किया जाय, तो बुसमें से अभ्यासक्रम जैसी जो वस्तु निकलेगी, वही सच्चा स्वाभाविक अभ्यास है, असा बुन्होंने कहा है। वर्तमान शिक्षा-पद्धतिमें अभ्यासक्रमका यह स्थान नहीं है। अमुक निश्चित अभ्यास-क्रम वर्षभरमें पूरा हो, असा पहलेसे ही बुसके सचालक तय कर लेते हैं। वे वर्धा-पद्धतिका यह अर्थ करते हैं कि बुस अभ्यासक्रमको अनुवचसे चलाया जाय। साथ ही, पढाजीकी पुरानी कल्पना भी नहीं मिटी है। जिस वारेमें गाधीजीके लेखोंका यह संग्रह अत्यन्त विचार-प्रेरक सिद्ध होगा, जिसमें कोवी शका नहीं।

जिस सग्रहसे अंक दूसरी वस्तु भी स्पष्ट होगी। वर्धा-योजना केवल शिक्षा-पद्धति ही नहीं है। वह बुससे कुछ ज्यादा है। वह तो शिक्षा द्वारा भारतके पूरे राष्ट्रीय प्रश्नको हल करनेका अंक रास्ता

है। जिसीसे गाधीजीने अुस भारतके लिअे अपनी सबसे बडी भेंट कहा था। जिसका रहस्य अुनके, लेखोका यह सप्रह बतायेगा।

किसी देशकी राष्ट्रीय शिक्षा-पद्धतिकी जडमें देखे, तो पता चलेगा कि अुसके भीतर अंक खास श्रद्धा, खास दृष्टि और अुसके अनुरूप प्रयोजन और अुद्देश्य छिपे हुअे रहते हैं। शिक्षा-पद्धति अुस परमे विकसित होती है और अपना स्वरूप ग्रहण करती है। जैसी श्रद्धा, जैसी दृष्टि होगी, वैसा ही कालांतरमे अुसका रूप हो जायेगा। आजकल हमारे यहाँ जो शिक्षा-पद्धति प्रचलित है, अुसकी श्रद्धा व दृष्टि मेकालिकी दी हुअी है। अुसका प्रयोजन और अुद्देश्य है अंग्रेज शासको द्वारा की हुअी रचनाकी आवश्यकताओकी पूर्ति। पर वे आवश्यकतायें राष्ट्रहितकी नहीं थी। अुनका प्रयोजन ग्रह नहीं था कि सारे देशके लोग स्वतंत्र, समझदार और अुद्यमी बनकर सच्चे लोकतंत्रको जन्म दे। वह जमाना अब बीत गया और स्वराज्य व लोकतंत्र आया है। अतः स्पष्ट है कि अुपरकी सभी बातोंमें परिवर्तन होना ही चाहिये। अर्थात् देशकी शिक्षा-पद्धतिकी आत्मा ही बदल जानी चाहिये। लेकिन वह बदली नहीं है, बदल भी नहीं सकती, क्योंकि श्रद्धाकी कमी है। मेकालिकी दी हुअी आत्मा कालग्रस्त हो गयी है, तब भी अुसका हाडपिंजर खीचा जा रहा है और अुसीमें कुछ स्थापित स्वार्थ सुखका अनुभव करते हैं। अतः मीरावाणीके भजनकी अुस कड़ीकी तरह हमारे शिक्षा-तंत्रकी हालत हो गयी है, जिसमे कहा है—

'बूडी गयो हंस, पींजर पडी तो रहधु'*

शिक्षाके अिस निष्प्राण ढाँचेको वुनियादी तालीम प्राणवान बनानेवाली है। यह काम गाधीजी जैसे ही कर सकते हैं। जिसीलिअे जब १९३७ में अुनका समय नजदीक आता लगा, तो सहज ही अुनकी प्रतिभासे

* 'हंस (जीवात्मा) अुड़ गया, पिंजरा (शव) पडा रह गया।'

अिन योजनाका मत्र प्रकट हुआ । अुमका सच्चा अर्थ समझनेमे यह सग्रह सहायक होगा ।

अिन सग्रहके लेखोंको पांच भागोमे बांटा गया है । सव लेखोंको अेक नाथ पढनेसे अुनका अेक दूसरेके साथ जो पूर्वापर सबध मालूम हुआ, अुसके आधार पर ये विभाग किये गये हैं । अुनमे कौबी पहलेसे की गयी कल्पना या व्यवस्था नहीं है । मन् १९३७ में जब यह योजना शुरु हुई, तवसे लेकर १९४७ तककी गाधीजी द्वारा अिस त्रिषयमें की हुई चर्चा अिसमे आ जाती है । १९४७ से यह काम आगे कैसे किया जाय, अिसका भी अुन्होंने विचार किया है । वह भाग अतमे आता है । वह आज भी हमारा पूरी तरह मार्गदर्शन करता है^१ । अिस तरह यह पुस्तक वर्धा-योजनाके वारेमे सक्षिप्त किन्तु मत्र तरहसे पूरा चित्र प्रस्तुत करनेवाली है ।

अेक बात और । कुछ लोगोका अंसा खयाल मालूम होता है कि वर्धा-शिक्षा-योजना अर्थात् केवल प्राथमिक शिक्षाका अेक नया नमूना । पुस्तक पढकर पाठक देखेगे कि यह खयाल गलत है । अुसमे सपूर्ण शिक्षाके पुनर्गठनका राष्ट्रीय सिद्धात पेश किया गया है । अुसका अमल शुरुआतने करने लगे, तो आगे अपने आप जरूरी वातावरण तैयार होगा और रास्ता मिलेगा । अिसीलिअे प्राथमिक या वुनियादी शिक्षाका विचार पहले और विस्तारसे किया गया है । वैसे यदि पाठक देखेगे तो साफ मालूम होगा कि सन् १९३७-३८ मे जब गाधीजीने वर्धा-परियद्मे पेश करनेके लिअे शिक्षामे आतकी अपनी सूचना की, तव अुन्होंने सपूर्ण शिक्षाको दृष्टिमे रखकर ही आलोचना की थी । (देखिये पृ० ४९ से ५२) अुसमे अुन्होंने शिक्षाक्रमके दो बडे-बडे भागोंकी कल्पना की थी

१ सार्वत्रिक शिक्षा, जो सव नागरिकोंको मिले और जिसे 'वुनियादी शिक्षा' कहा गया ।

२. अुसके आगेकी विशेष शिक्षा, जिसे हम 'अुच्च' कहा करते हैं। अुसमें "कभी प्रकारके अुद्योग और अुनसे सबष रखनेवाली कलाओं, साहित्य, सगीत, चित्रकला, शास्त्रादि शामिल नमझे जायें।" (पृ० ५२)

मावंत्रिक शिक्षा भारतके प्रत्येक बालकको मिले और अुसकी मात्रा लगभग 'अग्रेजी छोडकर मेट्रिक' के बराबर या (अुद्योग पद्धतिसे कार्य हो तो) स्वभावत अुससे अधिक होनी चाहिये — वंसा मोचा गया है। अिस भागका काम सरकार सँभाले और अुसकी पद्धतिकी योजना अिस प्रकार बनावे कि जिससे विद्यार्थी अपने चरित्र और शिक्षाके मगठनके साथ-साथ अुसे स्वावलंबी भी बना सकें।

दूसरा विशेष शिक्षाका भाग गांधीजी खानगी प्रयत्नो पर छोड देते हैं। अिस सूचनामे युनिवर्सिटीवाले लोग खूब घबराये थे। परतु यह वस्तु तो गांधीजीकी कल्पनामे चुनियादी विभागके साथ ही जुडी हुअी थी। यदि वस्तुस्थिति देखी जाय तो भारतमें तथाकथित अुच्च शिक्षाने आधुनिक शिक्षा-तंत्रमें जितना प्रमुख स्थान ले लिया है कि अुसके बारेमें जडमूलसे ही नये विचार किये बिना काम नही चलेगा। गांधीजीकी योजनामें अग्रेजीके स्थान और नये विश्वविद्यालय खोलनेके बारेमें अुनके विचार, स्वभापाके माध्यमका स्वाभाविक सिद्धांत, स्वावलम्बन और शरीरश्रमका तत्त्व, राष्ट्रभाषा — यह सब शिक्षाके अिस अुच्च माने जानेवाले भागको स्पर्श करता है और वह अिमका अनिवार्य अंग है।

१९३७ में अुन्होंने यह सपूर्ण चित्र नक्षेपमें पेश तो किया था, परतु अुन त्रकन अुनकी मर्यादा बाँधकर कामको आगे बढाया था

"मैंने जो प्रस्ताव विचारार्थ रखे हैं, अुनमे प्राथमिक शिक्षा और कौशिकी शिक्षा दोनोंका ही निर्देश है। पर बाप नोग तो अधिकतर प्राथमिक शिक्षाके बाग्में ही अपने विचार

जाहिर करे। माध्यमिक शिक्षाको मँने प्राथमिक शिक्षामे शामिल कर लिया है, क्योंकि प्राथमिक कही जानेवाली शिक्षा हमारे गाँवोके बहुत ही थोड़े लोगोको मयस्सर होती है। मुख्य प्रश्नके हल होते ही कॉलेजकी शिक्षाका गौण प्रश्न भी हल हो जायगा।” (पृ० ७९)

१९३७ में जिस तरह मर्यादित किये हुअे कामका जब १९४७ में फिरसे हिसाब लगाया गया, तब बुन्होंने मनुष्यकी आजीवन शिक्षाका पूरा नकशा बनाया और यह बताया कि बसमें बुनियादी शिक्षा किस तरह केन्द्रीय सूर्यके समान है। बुन्होंने यह भी स्पष्ट कहा है कि यदि सचमुच जिसे अँसा स्थान दिया जा सके, तो जिसमें आगेके कामकी समस्याका हल भी छिपा हुआ है। और वे यह बताकर चले गये कि अब यह काम देशको करना है।

यह पुस्तक जिस लम्बी कथाको सुन्दर ढंगसे पेश करती है। यो तो बसके प्रकरण, जब वे लिखे जा रहे थे तब, 'हरिजन' में पढे थे। परंतु बुनको पुस्तकके रूपमें अेक साथ देखनेसे जो चित्र खडा हुआ, वह तब दृष्टिगोचर नहीं हुआ था। यह भी मालूम हुआ कि गाधीजीको जिस विषयमें जो कुछ कहना था, वह सब जिसमें स्पष्ट रूपमें आ गया है। अत संपादन करते समय जो चित्र मेरे सामने खडा हुआ, उसे विस्तारसे मँने यहाँ दे दिया है। मैं मानता हूँ कि जिससे पाठकको बुनियादी शिक्षाके प्रयोगकी दस वर्षोंकी विचार-यात्राका कुछ नकशा भी मिल जायगा।

अनुक्रमणिका

प्रकाशकका निवेदन

निवेदन मगनभाभी देसायी

पहला भाग : पुनर्गठनका सिद्धान्त

१. शिक्षाके पुनर्गठनकी आवश्यकता
२. कुछ प्रश्न
३. तब क्या करेंगे ?
४. अनावश्यक भय
५. स्वावलम्बी शिक्षा
६. स्वावलम्बी शिक्षा पर कुछ और चर्चा
७. 'अंक सव्यापक' की गलतफहमी
८. ग्रहरोके लिये भी यही
९. राष्ट्रीय शिक्षाकोमे
१०. रचनात्मक कार्यकर्ताओमे

द्वितीय भाग - वर्तमान-शिक्षा-परिषद्

११. राष्ट्रीय शिक्षानास्त्रियोमे
१२. वर्तमान शिक्षा-पद्धतिवालोमे
१३. बुधोमे द्वारा शिक्षा
१४. कुछ कीमती मन

१५	कुछ आलोचनाओं	७१
१६	वर्धा-शिक्षा-परिषद्	७८
१७	शेक, कदम आगे	१०

तीसरा भाग : वर्धा-शिक्षा-योजना

१८	'पश्चिमका अनुकरण नहीं'	९३
१९	'दिमाग ठीक है'	९५
२०	योजनाका हृदय	९६
२१	नयी तालीमका नयापन	१०१
२२	शेक मन्त्रीका स्वप्न	१०५
२३	तकली वनाम खिलौने	१०६
२४	किसमे अंग्रेजीको स्थान नहीं	१०७
२५	कुछ आपत्तियाँ	१०९
२६	शिक्षकोके कुछ प्रश्न	१११
२७	वर्धा-पद्धतिके शिक्षकोसे	१२३
२८	योग्य शिक्षकोकी कठिनायी	१२५
२९	श्रद्धा चाहिये	१२६
३०	'बौद्धिक विषय' वनाम बुद्धोग	१३१
३१	शरीर-श्रम और बुद्धिका विकास	१३३
३२	नयी तालीममे डॉक्टरीकी जगह	१३५

चौथा भाग . कुछ महत्त्वके प्रयोग

३३	दस्तकारी द्वारा शिक्षा	१३७
३४	कतामी और चारित्र्य	१३९

३५	बिहार प्रान्तकी आलाखे	१४२
३६	मेरी अपेक्षा	१४४

पाँचवाँ भाग : आगेका काम

३७	म्युनिनिपैलिटियाँ और प्राथमिक शिक्षा	१४५
३८	कांग्रेसी मंत्रि-मडल और नली तालीम	१४७
३९	ग्राम-विद्यापीठ	१५६
४०	नये विश्व-विद्यालय	१५७
४१	तालीमी सुधके मदस्त्योमे आतचीत सूची	१६२
		१७४

बुनियादी शिक्षा

पहला भाग ॥ पुनर्गठनका सिद्धान्त

शिक्षाके पुनर्गठनकी आवश्यकता!

['बुद्धि-विकास वनाम बुद्धि-विलास' नामक लेख]

त्रावणकोर और मद्रासके भ्रमणमें, विद्यार्थियो तथा विद्वानोके सहवासमें मुझे असा लगा कि मैं जो नमूने अउनमे देख रहा था, वे बुद्धि-विकासके नही, किन्तु बुद्धि-विलासके थे । आधुनिक शिक्षा भी हमें बुद्धि-विलास सिखाती है और बुद्धिको अुलटे रास्ते ले जाकर अुसके विकासको रोकती है । सेर्गावमें पडा-पडा मैं जो अनुभव ले रहा हूँ, वह मेरी अिस बातकी पूर्ति करता दिखायी देता है । मेरा अवलोकन तो वहाँ अभी चल ही रहा है । अिसलिअे अिस लेखमें आये हुअे विचार अुन अनुभवोके अुपर आघार नही रखते । मेरे ये विचार तो अज मैंने फिनिक्स सस्थाकी स्थापना की तभीसे है, यानी सन् १९०४ से ।

बुद्धिका सच्चा विकास हाथ, पैर, कान आदि अवयवोके सदु-पयोगसे ही हो सकता है, अर्थात् शरीरका ज्ञानपूर्वक अुपयोग करते हुअे बुद्धिका विकास सबसे अच्छा और जल्दीसे जल्दी होता है । अिसमे भी यदि पारमार्थिक वृत्तिका मेल न हो, तो बुद्धिका विकास अेकतरफा होता है । पारमार्थिक वृत्ति हृदय यानी आत्माका क्षेत्र है । अत यह कहा जा सकता है कि बुद्धिके शुद्ध विकासके लिअे आत्मा और शरीरका विकास नाथ-साथ तथा अेकसी गतिमे होना चाहिये । अिससे कोअी अगर यह कहे कि ये विकाम अेकके

वाद अंक हो सकते हैं, तो यह भूपरकी विचार-श्रेणीके अनुसार ठीक नहीं होगा।

हृदय, बुद्धि और शरीरके बीच मेल न होनेसे जो दुसह परिणाम आया है वह प्रकट है, तो भी गलत आदतके कारण हम उसे देख नहीं सकते। गाँवोंके लोभोका पालन-पोषण पशुओंमें होनेके कारण, वे मात्र शरीरका उपयोग यंत्रकी भाँति किया करते हैं, बुद्धिका उपयोग वे करते ही नहीं और बुद्धि करने भी नहीं पडता। हृदयकी शिक्षा अंनमें नहींके बराबर है, जिसलिये अंनका जीवन यों ही गुजर रहा है, जो न जिस कामका रहा है, न अुस कामका। और दूसरी ओर आधुनिक कॉलेजों तककी शिक्षा पर जब नजर डालते हैं, तो वहाँ बुद्धिके विकासके नाम पर बुद्धिके विलासकी तालीम दी जाती है। लोग ऐसा समझते हैं कि बुद्धिके विकासके साथ शरीरका कोई मेल नहीं। पर शरीरको कसरत तो चाहिये ही, जिसलिये अुपयोग रहित कसरतसे अुसे निभानेका मिथ्या प्रयोग होता है। पर चारों ओरसे मुझे जिस तरहके प्रमाण मिलते ही रहते हैं कि स्कूल-कॉलेजोंसे पास होकर जो विद्यार्थी निकलते हैं, वे मेहनत-भगवत्तके काममें मजदूरीकी बराबरी नहीं कर सकते। जरासी मेहनत की कि अंनका माया दुखने लगता है और घूपमें घूमना पडे तो चक्कर आने लगते हैं! यह स्थिति स्वामात्रिक मानी जाती है। बिना जुते खेतमें जैसे घास अुग आती है, अुसी तरह हृदयकी वृत्तियाँ आप ही अुगती और कुम्हलाती रहती हैं; और यह स्थिति दयनीय मानी जानेके बदले प्रशंसनीय मानी जाती है।

जिसके विपरीत यदि बचपनमें बालकोंके हृदयकी वृत्तियोंको ठीक तरहसे भोडा जाय, अुन्हे खेती, चरखा आदि अुपयोगी कामोंमें लगाया जाय और जिम अुद्योग द्वारा अंनका शरीर खूब कमा जा सके, अंन अुद्योगकी अुपयोगिता और अंनमें काम आनेवाले बीजारों

वर्गोंकी बनावट आदिका ज्ञान बुद्धि दिया जाय, तो बुद्धिकी वृद्धिका विकास सहज ही होता जाय और नित्य बुद्धिकी परीक्षा भी होती जाय। ऐसा करते हुअे गणित शास्त्र आदिके जिस ज्ञानकी आवश्यकता हो, वह बुद्धि दिया जाय और विनोदके लिअे साहित्य आदिका ज्ञान भी देते जायें, तो तीनों वस्तुअें समतोल हो जायें और बुद्धिकी कोअी अग अविकसित न रहे। मनुष्य न केवल बुद्धि है, न केवल शरीर, न केवल हृदय या आत्मा। तीनोंके अेक समान विकासमे ही मनुष्यका मनुष्यत्व सिद्ध होगा। जिसमें सच्चा अर्थशास्त्र है। जिसके अनुसार यदि तीनों विकास अेक साथ हो, तो हमारी बुद्धि हुअी समस्याअें आसानीसे सुलझ जायें। यह विचार या जिस पर अमल तो देशको स्वतंत्रता मिलनेके वाद ही होगा, अैसी मान्यता भ्रमपूर्ण हो सकती है। करोडो मनुष्योको अैसे-अैसे कामोंमें लगानेसे ही स्वतंत्रताका दिन हम नजदीक ला सकते हैं।

हरिजनसेवक, १७-४-'३७

२

कुछ प्रश्न

['साप्ताहिक पत्र' मे से]

[तीथलमें २२ मअी, १९३७ को गुजरातके राष्ट्रीय स्कूलो और कॉलेजोके अध्यापकोकी अेक छोटीसी परिषद् हुअी थी। परिषद्के सयोजकने आमत्रित सज्जनोके पास यह प्रश्नावली पहलेसे भेज दी थी

१ हमारे गाँवोकी आवश्यकताओके लिअे सबसे अुपयुक्त और लाभदायक शिक्षा कौनसी है? अैसी शिक्षाको हरअेक गाँवमें किस तरह फैलाया जाय ?

२ जनताकी निरक्षरता और उसके अज्ञानको किस तरह दूर किया जाय ?

३ क्या पूर्ण वैदिक विकासके लिये साक्षरता अनिवार्य रूपसे जरूरी है ? साक्षरता द्वारा शिक्षा शुरू करनेकी पद्धति क्या वैदिक विकासको रोकती है ?

४. औद्योगिक शिक्षणको समस्त शिक्षाका मध्यबिन्दु बनानेकी आवश्यकता।

५. मौजूदा राष्ट्रीय स्कूलोंका भविष्य।

६ बालकोको अनुकी मातृभाषा द्वारा समस्त शिक्षा देनेकी शक्यता और साधनोंका विचार।

७ मौजूदा स्कूलोंमें राष्ट्रीय शिक्षाके किन मूल तत्वोंकी कमी है ?

८ प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाके प्रारम्भिक वर्षोंमें हिन्दी-हिन्दुस्तानीको लाजिमी बनानेकी आवश्यकता।

अिन प्रश्नों पर अपने विचार जाहिर करनेके लिये गाँवीजीको नी कहा गया था। मुन्होंने कुछ व्यक्तिगत अुदाहरण देकर अपने विचार प्रगट किये। नीचे मैं उन विचारोंको संक्षिप्त करके देता हूँ। अुदाहरणोंको छोड दूँगा, क्योंकि वे साधारण पाठकोंके मतलबके नहीं हैं। — महादेव देसायी]

अगर हम ऐसी शिक्षा देना चाहते हैं, जो गाँवोंकी आवश्यकताओंके लिये सबसे अधिक अुपयुक्त हो, तो विद्यापीठको हमें गाँवोंमें ले जाना चाहिये। विद्यापीठको हमें अेक शिक्षणशालामें परिणत कर देना चाहिये, जिससे कि हम ग्रामवासियोंकी आवश्यकताओंके अनुसार अध्यापकोंको शिक्षा दे सकें। शहरमें शिक्षणशाला रखकर उनके द्वारा ग्रामवासियोंकी आवश्यकताओंके अनुसार आप अध्यापकोंको तालीम नहीं दे सकते, न आप अुन्हे गाँवकी हालतमें दिलचस्पी लेनेवाले बना

सकते हैं। शहरके लोगोको गाँवके प्रश्नोमे दिलचस्पी लेने और वहाँ रहनेके लिजे तैयार करना कोअी आसान काम नही। सेगाँवमें रोज ही मेरा यह मत दृढ होता जाता है। मैं आपको यह यकीन नही दिला सकता कि हम सेगाँवमे अेक वर्ष रहकर गामवानी बन गये है, या किसी सार्वजनिक हितमें हमने अुनके साथ अँक्य स्थापित कर लिया है।

प्राथमिक शिक्षाके बारेमे मेरा पक्का मत यह है कि वर्णमालासे तथा वाचन और लेखनसे शिक्षाका आरम्भ करनेसे बालकोकी बुद्धिका विकास कुठित-सा हो जाता है। जब तक अुन्हे अितिहास, भूगोल, जवानी गणित और कताबीकी कलाका प्रारम्भिक ज्ञान न हो जाय, तब तक मैं अुन्हे वर्णमाला नही सिखाऊँगा। बिन तीनों चीजोके द्वारा मैं अुनकी बुद्धिको विकसित करूँगा। यह प्रश्न पूछा जा सकता है कि तकली या चरखेके द्वारा किस तरह बुद्धि विकसित की जा सकती है। अगर यह कला महज यत्रकी तरह न सिखायी जाय, तो वह आश्चर्यजनक रीतिसे बुद्धिका विकास कर सकती है। जब आप बालकको हरअेक क्रियाका ठीक-ठीक कारण समझायेंगे, जब आप अुत्ते तकली या चरखेके हरअेक कल-पुरजेके बारेमें बतायेंगे, जब अुमे कपासके और स्वयं सभ्यताके साथ अुसके सम्बन्धके अितिहासका ज्ञान देंगे और अुसे आप अपने साथ गाँवके कपासके खेतमे ले जायेंगे, और जब अुसे आप अुसके काते हुअे सूतके अेकमापन और मजदूतीको मालूम करनेका तरीका या तार गिनना सिन्वायेंगे, तब आप अुमका दिल तो कताबीकी कलाकी तरफ जाकर्षित करेगे ही, साथ ही अुसके हाथो, अुसकी आँखो और अुसकी बुद्धिको भी आप नाचते पायेंगे। बिस प्रारम्भिक शिक्षाको मैं ६ महीने दूँगा। अितने समयमें बालक शायद यह सीखनेके लिजे तैयार हो जायगा कि वर्णमाला रिक्त तरह पडी जाती है, और जब वह वर्णमाला जल्दी-जल्दी पडनेके योग्य हो जायगा, तो सादा ड्राइंग मीखनेके लिजे तैयार हो जायगा। और जब

रेखागणितकी शकले तथा चिडियो वर्गैराके चित्र खीचने लगेगा, तो वह अक्षरोंको विगाडकर नहीं लिखेगा। मुझे अपने बचपनके दिन याद है, जब मुझे वर्णमाला सिखायी जाती थी। मैं जानता हूँ कि मुझे कितनी कठिनायी पडती थी। किसीको यह परवाह नहीं थी कि मेरी बुद्धि पर क्या खग लगाया जा रहा है। लेखन-कलाको मैं अके ललित कला मानता हूँ। छोटे-छोटे बच्चोंकी बुद्धि पर वर्णमालाको लादकर और असे शिक्षाका श्रीगणेश मानकर हम जिस कलाका गला घोट देते हैं। जिस तरह हम लेखन-कलाके साथ हिंसा करते हैं और असके योग्य समयके पहले ही वर्णमाला सिखानेका प्रयत्न करके हम बालककी वाढको मार देते हैं।

असलमें मेरी रायमें हमारे अफसोस करने और लज्जित होनेका कारण निरक्षरता अतना नहीं है, जितना कि अज्ञान है। जिसलिये प्रौढ-शिक्षाके लिये भी मुझे अतना अज्ञानाधिकार दूर करनेका अके जबरदस्त कार्यक्रम बनाना चाहिये। और जिसके लिये असे शिक्षाको ध्यान देकर चुनना चाहिये, जो ध्यानपूर्वक बनाये हुअे पाठ्यक्रमके अनुसार गाँवोंके बालिग लोगोको तालीम दे सके। मेरे कहनेका मतलब यह नहीं है कि मैं अन्हें वर्णमालाका ज्ञान नहीं कराऊँगा। नहीं, जिसकी तो मैं अतनी अधिक कीमत आँकता हूँ कि शिक्षाके अके साधनके रूपमें मैं असे हलकी नजरसे नहीं देखता, असके गुणोंकी कमकद्री भी नहीं करता। वर्णमालाको सरल बनानेमें प्रो० लॉवेकने जो भारी परिश्रम किया है, असकी मैं कद्र करता हूँ और प्रो० भागवतके भी जिसी दिशामें किये हुअे महान और व्यावहारिक प्रयत्नका मैं कायल हूँ। मैंने तो प्रो० भागवतको जब वे पसन्द करे तब सेगाँव आने और वहाँके पुरुषों, स्त्रियो और बच्चों पर भी अपनी लिपि-कलाको आजमानेके लिये निमन्त्रण दे रखा है।

गाँवकी दस्तकारियोंकी तालीमको शिक्षाका मध्यबिन्दु समझनेकी आवश्यकता और महत्त्वके विषयमें मुझे जरा भी शक नहीं है।

हिन्दुस्तानकी शिक्षा-संस्थाओंमें जो प्रणाली अस्तित्व की गयी है, उसे मैं शिक्षा नहीं कहता, वह मनुष्यकी बुद्धिके सर्वोत्तम अंगको विकसित करनेवाली शिक्षा नहीं है, बल्कि बुद्धिका विलास है। बुद्धिको वह किसी तरह सूचनाओंसे अवगत करा लेती है। बुद्धिका सच्चा व्यवस्थित विकास तो शुरूसे ही गाँवकी दस्तकारियों द्वारा बुद्धिको शिक्षा देनेकी प्रणालीसे होगा, और फलतः बौद्धिक शक्ति और अप्रत्यक्ष रीतिसे आध्यात्मिक शक्तिकी भी अउससे रक्षा होगी। यहाँ भी जिससे यह न समझ लिया जाय कि मैं ललित कलाओंकी वेकद्री करता हूँ। पर मैं अन्धे गलत जगह पर नहीं रखूँगा। बेठौर रखे हुअे कचनको जो कचरा कहा है, नो ठीक ही है। मैं जो कह रहा हूँ, अउसके प्रमाणमें ढेरके ढेर निकम्मे और अश्लील साहित्यको पेश कर सकता हूँ, जिसकी हमारे अऊपर वाढ-सी आ रही है, और अउनका परिणाम तो अेक राह चलता आदमी भी देख सकता है।

हरिजनसेवक, ५-६-३७

३

तब क्या करेंगे ?

१

['आलोचनाओंका जवाब ' नामक लेखमें मे]

शिक्षाका सवाल दुर्भाग्यवश शरावके साथ जोड दिया गया है। शरावकी आय बन्द हो जाय, तो शिक्षाका क्या होगा ? निम्नदेह नये कर लगानेके और भी तरीके हो सकते हैं। अध्यापक नाह और खमाताने यह दिखाया भी है कि अिन गरीब देशमें भी कुछ नये नये कर लगानेकी गुजाअिश है। संपत्ति पर अमी काफी कर नहीं लगा है। ससारके अन्य देशोंमें जो कुछ भी हो, यहाँ तो व्यक्तिगत पान अत्यधिक सम्पत्तिका होना भारतीय मानवताके प्रति अेक अपराध

हीं नमज़ा जाना चाहिये। जिसलिखे सम्पत्तिकी अेक निश्चित मर्यादाके बाद जितना भी कर बस पर लगाया जाय, थोडा ही होगा। जहाँ तक मुझे पता है, अंग्लैडमें आदमीकी आय अेक निश्चित सख्या तक पहुँच जानेके बाद अुनसे आयका ७०% तक कर लिया जाता है। कोअी बजह नहीं कि हिन्दुस्तानमें हन जिससे भी काफ़ी अधिक कर क्या न लगावे? किसी मनुष्यके मरनेके बाद दूसरेको जो विरासत मिले, अुन पर कर क्यों न लगाया जाय? करोड़पतियोंके लड़कोंके वालिग होने पर भी अब विरासतमें पैतृक सम्पत्ति मिलती है, तो जिस विरासतके कारण अुन्हें नुकसान अुठाना पडता है। जिस तरह राष्ट्रकी तो दूनी हानि होती है। जो विरासत असलमें राष्ट्रकी होनी चाहिये, वह अुने नहीं मिलती, और दूसरे, राष्ट्रका जिस तरह भी नुकसान होता है कि सम्पत्तिके बोझके कारण जिन वारिस्तोंके सम्पूर्ण गुणोंका विकास भी नहीं हो पाता। अैसा अुत्तराधिकारकर डालनेकी प्रान्तीय सरकारोंको मत्ता नहीं है, जिससे मेरी दलीलमें कोअी बाधा नहीं पहुँचती।

परन्तु समस्त राष्ट्रकी दृष्टिसे हम अिज्ञानें जितने पिछड़े हुअे हैं कि अगर अिज्ञान-अ्रचारके लिखे हम केवल धन पर ही निर्भर रहेंगे, तो अेक निश्चित समयके अन्दर राष्ट्रके प्रति अपने फर्जको अदा करनेकी आशा हम कभी कर ही नहीं सकते। जिसलिखे मैंने यह सुझानेका साहस किया है कि अिज्ञानको हमें स्वावलम्बी बना देना चाहिये, फिर चाहे लोग भले हो मुझे यह कहें कि मेरे अन्दर किसी रचनात्मक कार्यकी योग्यता नहीं है। अिज्ञानसे मेरा मतलब है वच्चे या मनुष्यकी तनाम शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियोंका सर्वनामूखी विकास। अक्षर-ज्ञान न तो अिज्ञानका वारम्भ है और न जन्मिन लक्ष्य। वह तो अुन अनेक अुपायोंमें से अेक है, अिनके द्वारा स्त्री-मुरुषोंके अिज्ञान किया जा सकता है। फिर सिर्फ अक्षर-ज्ञानको अिज्ञान कहना गअ्त है। अिनलिखे वच्चेकी अिज्ञानका प्रारम्भ मैं

किसी दस्तकारीकी तालीमसे ही करूँगा और अुसी क्षणसे अुसे कुछ निर्माण करना सिखा दूँगा। जिस प्रकार हरअेक पाठशाला स्वावलम्बी हो सकती है। शर्त सिर्फ यह हो कि बिन पाठशालाओकी बनी चीजें राज्य खरीद लिया करे।

मेरा मत है कि जिस तरहकी शिक्षा-अणाली द्वारा अूँचीसे अूँची मानसिक और आध्यात्मिक अुन्नति प्राप्त की जा सकती है। सिर्फ अेक वातकी जरूरत है। वह यह कि आजकी तरह प्रत्येक दस्तकारीकी केवल यात्रिक क्रियायें सिखा कर ही हम न रह जायें, बल्कि वच्चेको प्रत्येक क्रियाका कारण और पूर्ण विधि भी सिखा दिया करे। यह मैं आत्म-विश्वासके साथ कह रहा हूँ, क्योंकि अुसके मूलमे मेरा अपना अनुभव है। जहाँ-जहाँ भी कार्यकर्ताओको कताओी सिखाओी जाती है, न्यूनाधिक पूर्णताके साथ जिसी पद्धतिका अवलम्बन किया जाता है। मैंने खुद जिसी पद्धतिसे चप्पल बनानेकी तथा कताओीकी शिक्षा दी है और अुसके परिणाम अच्छे आये हैं। जिस पद्धतिमें ब्रितिहास और भूगोलका वहिष्कार भी नहीं है। मैंने तो देखा है कि जिस तरहकी साधारण और व्यावहारिक जानकारीकी वाते जवानी वहनेसे ही अधिक लाभ होता है। लिखने और पढनेसे वच्चा जितना नहीं सीखता, अुससे दस गुनी अधिक जानकारी अुमें जिस पद्धति द्वारा दी जा सकती है। वर्णमाला (के चिन्हो) का ज्ञान वच्चेको बादमें भी दिया जा सकता है, जब वच्चा गेहूँ और चोंकरको पहचानने लग जाय और जब अुसकी बुद्धि और रुचि कुछ विवसित हो जाय। यह प्रस्ताव क्रांतिकारी जरूर है, पर जिसमे परिश्रमकी दूब वचत होती है और विद्यार्थी अेक सालमें बितना नीख जाना है कि जिम्के लिअे सावारणतया अुसे बहुत अधिक समय लग सत्ता है। फिर बिन पद्धतिमे सब तरहमे किफायत ही किफायत है। हाँ, विद्यार्थीको गणितका ज्ञान तो दस्तकारी नीखते हुअे अपने आप ही होना रहता है।

प्राथमिक शिक्षा मेरी नजरमें सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण चीज है। बसकी मर्यादा मैंने यही कायम की है कि जितनी पढाबी मैट्रिक तक — अग्रेजीको छोड़कर — होती है, उतनी ही जिसमें हो जानी चाहिये। फर्ज कीजिये कि कॉलेजोंके पढे हुये और पढनेवाले सब लोग यकायक अपनी सारी पढाबी भूल जायें, तो बिन कुछ लाख लोगोके स्मृति-नाशमे जितनी हानि देशको हो सकती है, वह बस हानिके मुकाबलेमें कुछ भी नहीं है, जो भुन तीस-पैंतीस करोड़ लोगोको अज्ञानके सागर जैसे महा अन्वकारके कारण अब तक डुबी है और हो रही है। करोड़ो ग्रामवासियोके अज्ञानकी थाह हम केवल निरक्षरतासे होनेवाली हानिसे कभी नहीं पा सकते।

कॉलेजकी शिक्षामें भी मैं जबरदस्त क्रान्ति कर देना चाहूँगा। उसे मैं राष्ट्रीय जरूरतोसे जोड़ दूँगा। यत्रो तथा जैसी ही अन्य कला-कौशल सम्बन्धी निपुणताकी कुछ अपाधियाँ होगी। वे भिन्न-भिन्न अुद्योगोसे सबध रखेंगी और यही अुद्योग अपने लिये आवश्यक विशारदोको तैयार करनेका खर्च बरदास्त करेंगे। मसलन, टाटा कपनीसे यह अपेक्षा की जायगी कि वह यत्रकला-विशारदोके लिये अेक महा-विद्यालय राज्यकी देख-भालमें चलावे। इसी प्रकार मिलोके लिये आवश्यक विशारद पैदा करनेके लिये अेक कॉलेज मिल-मालिकोका सध चलावे। यही अन्य अुद्योग भी करें। व्यापारियोका भी अपना कॉलेज रहे। अब रहे जाते हैं साधारण ज्ञान (आर्ट्स), आयुर्वेद और खेती। साधारण ज्ञानके कितने ही खानगी कॉलेज आज भी स्वाश्रयी हैं ही। इसलिये राज्यको अपना कोजी स्वतत्र कॉलेज खोलनेकी जरूरत नहीं रहेगी। आयुर्वेद-सम्बन्धी महाविद्यालय प्रमाणित औषधालयोके साथ जोड़ दिये जायेंगे, और चूँकि घनिक लोगोको ये प्रिय होते ही हैं, इसलिये उनसे यह जरूर अपेक्षा की जा सकती है कि वे चन्दा करके बिन विद्यालयोको चलावें। रहे खेतीके विद्यालय। सो अगर अब जिन्हें अपने नामकी लाज रखनी हो, तो जिन्हें भी स्वावलम्बी

वनना ही पडेगा। मुझे अिन विद्यालयोमे शिक्षा-प्राप्त कुछ अुपाधि-धारियोका दु खद अनुभव हुआ है। अुनका ज्ञान छिछला होता है। अुन्हें व्यवहारका भी अनुभव नहीं है। अगर अुन्हे राष्ट्रकी जरूरतीकी पूर्ति करनेवाली स्वावलवी खेतियो पर काम सीखनेका मौका मिला होता, तो अुन्हें अुपाधि प्राप्त करनेके बाद और अपने मालिकोके धन पर अनुभव प्राप्त करनेकी जरूरत हरगिज नहीं रहती।

यह कोअी निरा कल्पना-विलास नहीं है। सिर्फ अपनी मानसिक जडताको दूर करने भरकी देरी है कि हम देखेगे कि कांग्रेसके मन्त्रिमडलके अर्थात् कांग्रेसके सामने खडे हुअे शिक्षाके सवालका यह हल अत्यत युक्तिसगत और व्यावहारिक भी है। यदि वे घोषणाअें सत्य हो, जो कि हाल ही मे ब्रिटिश सरकारकी ओरसे की गयी हैं, तो मन्त्रिमडलोके पक्षमें तो अुनकी योजनाओको सफल बनानेके लिअे सिविल सर्विसकी सुसगठित बुद्धि-चातुरी और सगठन-शक्ति भी है। सिविल सर्विसके अधिकारियोको तो वह कला याद है, जिसकी सहायतासे अैसी-अैसी शासन-नीतिको भी वे अमलमें ले आते हैं, जो अुनके लिअे झक्की गवर्नर या वाअिसरॉय बनाकर दे देते हैं। अिसी तरह मन्त्री भी अेक निश्चित और विचारपूर्ण नीति कायम कर दें। अुस पर अमल करना सिविल सर्विसका काम रहेगा। अुनकी ओरसे जो वचन दिये गये हैं, अुनका पालन करके सिविल सर्विसके अधिकारी अुन लोगोके प्रति अुत्प्रेण हो, जिनका कि नमक वे खा रहे हैं।

अब शिक्षकोका सवाल रह जाता है। प्रो० शाहने अभी अपने अेक लेखमें जो विचार प्रगट किये हैं, मैं अुन्हे पसन्द करता हूँ। यही कि विद्वान स्त्री-पुरुषोके लिअे यह लाजिमी करार दे दिया जाय कि वे अपने जीवनके कुछ—मसलन पाँच—वर्ष अैसा विषय पढानेके लिअे देगको अर्पण कर दे, जिसकी अुन्हे अच्छी रुचि और अध्ययन भी हो। अिसके लिअे अुन्हे कुछ खर्च भी दिया जा सकता है, जो देशकी आर्थिक स्थितिको ध्यानमें रखते हुअे हो। आज अुच्च शिक्षणकी

संस्थाओंमें शिक्षकों और अध्यापकोंको जो अंची-अंची तनखाहें दी जा रही हैं, वे बन्द कर दी जायें। साथ ही, आजकल गाँवोंमें काम करनेवाले मौजूदा शिक्षकोंको हटाकर अुनके स्थान पर अधिक योग्य शिक्षक हमें वहाँ भेजने चाहियें।

हरिजनसेवक, ३१-३-३७

२

['शिक्षाकी समस्या' नामक टिप्पणीमें से]

“बिन सुधारोंके अन्दर सबसे निष्कर्षण बात तो यह है कि अपने बच्चोंको शिक्षा देनेके लिये हमारे पास शरावकी आयके अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं।” कांग्रेस-मंत्रियोंने अपने पद ग्रहण किया, तबसे बिन विषय पर अनेक लोगोंने गांधीजीने जो बातचीत की, अुनमें से अेकमें अुन्होंने कहा : “यही तो शिक्षामें हमारे सामने नदने बड़ी समस्या है। पर बिनने हमें धराराना नहीं चाहिये। हमें बिसका हल ढूँढना ही होगा। पर बिनका हल ढूँढते हुये हमें शरावकी पुर्ण बन्दीके अपने आदर्शमें जरा भी ढील नहीं करनी चाहिये। फिर बिसकी चाहे जो कीमत हमें देनी पडे। हमारे लिये तो यह खयाल भी शर्मनाक और अपमानजनक मालूम होना चाहिये कि अगर हमें शरावकी आय न मिले, तो अपने बच्चोंको हम शिक्षा ही न दे सकेंगे। पर अगर यह भी नोबत आ पहुँचे, तो 'अर्थ त्यजति पठित.' बिस न्यायने हमें अुने कबूल कर लेना चाहिये। अेक तो हम मन्थ्याके मूतने न धरारयें; और दूसरे, बच्चोंको आज बिन किस्मकी शिक्षा दी जा रही है अुनके मोहकी छोड दें, नो यह समस्या भी नारी नहीं है।”

बिनसे पाठकोंको पता चल जायगा कि क्यों गांधीजी बिन वान पर बितना जोर दे रहे हैं कि देण्डे शिक्षा-शास्त्रियोंको अेकन होकर अेक अैनी शिक्षा-प्रपाली ढँढनी चाहिये, जो हमारी अमर्य

ग्रामीण जनताकी जरूरतको पूरा भी कर दे और साथ ही कम खर्चीली भी हो।

अुपर्युक्त बात सुनकर अेक प्रश्नकर्ताने बड़े आश्चर्यके साथ पूछा. "तब तो आप सचमुच ही माध्यमिक शिक्षाको विलकुल अुडा देना चाहते हैं और मैट्रिक तककी सारी शिक्षा ग्रामीण पाठशालाओंमें ही पूरी कर देना चाहते हैं ? "

गांधीजीने कहा. "विलकुल ठीक । आखिर आपकी जिस माध्यमिक शिक्षामे सिवा जिसके है ही क्या कि विद्यार्थी जो बात अपनी मातृभाषामे दो सालके अन्दर सीख सकता है, अुसीको विदेशी भाषामे पढावें और जिसमे सात वर्ष बरवाद कर दें ? आज हमारे बच्चोको अपने सारे विषय विदेशी भाषाके माध्यमसे पढने पढते है । हमे अेक तो यह भार बच्चो परसे अुठा लेना है और दूसरे, अुन्हे अपने हाथ-पैरोसे जिस तरह काम लेना सिखा देना है, जिससे कुछ लाभ हो सके । अितना किया कि हमारी शिक्षा-समस्या भी हल हुयी । अगर शराबकी सारीकी सारी आय हम छोड दे, तो भी हमे भीतरसे अैसी कोयी हिचकिचाहट नही होनी चाहिये कि हमने कोयी बुरा काम कर डाला । सबसे पहले जिसे छोडनेका हम निश्चय कर लें, और तब यह सोचें कि बच्चोकी शिक्षाका प्रबध क्या और कैसे करे । सबसे पहले यह बडी बात करें। "

हरिजनसेवक, २१-८-'३७

अनावश्यक भय

१

तीन सालमे गराववन्दी करनेके कांग्रेसी कार्यक्रमकी खूब सराहना करते हुअे अेक लिवरल मित्रने शिक्षाके वारेमें अपना भय जिस प्रकार प्रकट किया है

“कांग्रेसका शिक्षा-संवधी कार्यक्रम कुछ परेशान करनेवाला मालूम पडता है। जिस बातका डडा डर है कि जिसके कारण कही अुच्च शिक्षाकी प्रगति न रुक जाय। अत मुझे आशा है कि जिसके लिये अच्छी तरह सोच-विचार करके ही कोबी योजना बनायी जायगी और जो कुछ परिवर्तन करना हो, अुसकी काफी पहले सूचना दी जायगी। जनताको कांग्रेसी योजना पर पूरी तरह विचार करनेका मौका दिये बगैर जिस सवधमें कोबी जल्दवाजी तो हरगिज नही करनी चाहिये।”

यह भय बिलकुल अनावश्यक है। कांग्रेस कार्य-समितिये जिस वारेमें अपनी कोबी आम नीति निर्धारित नही की है। कांग्रेस काशी विद्यापीठ, जामिया मिलिया, तिलक विद्यापीठ, विहार विद्यापीठ, गूजरात विद्यापीठ जैसी अनेक शिक्षा-संस्थाओंके लिये जिम्मेदार जरूर है, लेकिन जिस वारेमें अुसने कोबी आम घोषणा नही की है। मैंने जिस वारेमें जो कुछ लिखा है, वे सब मेरे अपने विचार हैं। जिसमें कोबी शक नही कि मौजूदा शिक्षा-प्रणालीने हमारे देशके नीजवानोको और भारतकी भाषाओं तथा सामान्य सस्कृतिको जो भारी नुकसान पहुँचाया है, अुसको मैं बहुत तीव्रतासे महसूस करता हूँ। जिस सवधमें मेरे विचार वडे तीव्र हैं, लेकिन मैं यह दावा

नहीं करता कि कांग्रेसियोंको भी आम तौर पर मैंने अपने विचारोंके अनुकूल बना लिया है, तब भला अनु शिक्षा-शास्त्रियोंके बारेमें मैं क्या कह सकता हूँ, जो कांग्रेसी वातावरणसे भी बाहर हं और भारतीय विश्वविद्यालयों पर कब्जा किये हुये हं? अनुके विचारोंको बदलना कोई आसान काम नहीं है। मेरे मित्र और अनुका-सा भय रखनेवाले दूसरे लोगोंको जिस बातका विश्वास रखना चाहिये कि जो लोग शिक्षामें हेर-फेर करनेका प्रयत्न कर रहे हैं, वे श्री शास्त्री द्वारा दी गयी सलाह पर पूरा ध्यान रखेंगे और शिक्षा-सवधी मामलोंमें जिन लोगोंकी सलाहका महत्त्व है, अनुसे काफी सलाह और विचार किये वगैर जिस दिशामें कोई बड़ा कदम नहीं उठायेगे। यहाँ मैं यह भी बता दूँ तो अप्रसिद्धिक न होगा कि बहुतसे शिक्षा-शास्त्रियोंके साथ अभी भी मेरा पत्र-व्यवहार चल रहा है और अनुकी वेशकीमती राये मुझे मिल रही है, और मुझे यह कहते हुये खुशी होती है कि वे आम तौर पर मेरी योजनाके अनुकूल ही हैं।

हरिजनमेवक, २८-८-३७

२

['साक्षरताके बारेमें' नामक लेख]

जिस पत्रके जरिये शिक्षाके बारेमें मैं जो विचार प्रतिपादित कर रहा हूँ, अनु पर मुझे बहुत-सी राये मिली हैं। अनुमें से कुछको मैं जिस पत्रमें अपने खयालके मुताबिक दे भी सकूँगा। लेकिन अभी तो मैं एक विद्वान मित्रने मुझ पर साक्षरताकी अपेक्षाका जो अपराध लगाया है, उसीका जवाब देना चाहता हूँ। मैंने जो कुछ भी लिखा है, उसमें मैंसा खयाल बना लेनेका कोई भी कारण नहीं है। क्योंकि क्या मैंने यह नहीं कहा है कि मेरे मनमें जिस तरहके स्कूलकी कल्पना है, उसके विद्यार्थियोंको उन्हें सिखायी

जानेवाली दस्तकारीके जरिये हर तरहकी तालीम दी जायगी ? जिसमें साक्षरता भी शामिल है । जुदा-जुदा विषयों पर मेरी जो तजवीजें हैं, उनमें हाथ अक्षर बनाने या लिखनेकी कोशिश करनेके पहले मौजार चलानेका काम करेंगे, आंखें जैसे जिन्दगीकी दूसरी चीजें देखती हैं, उसी तरह अक्षरों और गन्दोंके चित्र दिखेंगी, कान चीजों और वाक्योंके नाम और अर्थको समझेंगे । सारी शिक्षा कुदरती और रस पैदा करनेवाली होगी और बिसीलिजें देशकी सब शिक्षाओंसे तेज रफ्तारवाली और सस्ती रहेगी । बिसलिजें मेरे स्कूलके लडके जितनी तेज रफ्तारमें लिखेंगे, उससे भी बहुत तेज रफ्तारसे वे पढ़ने लगेंगे । और जब वे लिखना शुरू करेंगे, तो भद्दी लकीरें नहीं खीचेंगे, जैसे कि मैं अब तक (बिअकोकी कृपासे) खीचता रहता हूँ, बल्कि जिम तरह वे अपनेको दिखायी देनेवाली दूसरी चीजोंकी ठीक शकलें खीच सकेंगे, उसी तरह अक्षरोंकी भी ठीक शकलें बना सकेंगे । अगर मेरे कयासके स्कूल कभी कायम हो, तो मैं यह कहनेका साहस करता हूँ कि वाचनके मामलेमें वे सबसे आगे बढ़े हुअे स्कूलोंके साथ होड कर सकेंगे, और अगर यह आम खयाल हो कि लिखावट, जैसी कि आजकल ज्यादातर मामलोंमें होती है वसी गलत नहीं, बल्कि मही तरीकेकी हो, तो लिखाबीमें भी मेरे ये स्कूल आजके मुअ्ततमें मुअ्तत स्कूलकी बराबरी कर सकेंगे । मेगांव स्कूलके विद्यार्थियोंका लिखना मौजूदा ढगके अनुकूल भले ही हो, लेकिन मेरे खयालमें तो वे स्लेट और कागज खराब ही करते हैं ।

हरिजनमेवक, ४-९-'३७

स्वावलम्बी शिक्षा

डॉ० जे००० रूमीपतिने मद्राससे लिखा है

“मैंने मिशनरियों द्वारा नचालित कुछ सस्यामें देखी हैं। वहाँ मद्रमे सुबह लगते हैं और शामको विद्यार्थियोंसे या तो स्वेतीका या किनी गृह-अद्योगका काम लिया जाता है। और जैसा नया जितना जिमका काम होता है, उसके अनुसार अने मजदूरी भी दी जाती है। जिस तरह सस्या न्यूनाधिक परिमाणमें स्वावलम्बी बन जाती है, और चूँकि विद्यार्थी भी कमसे कम अपनी आजीविका प्राप्त करने लायक कुछ न कुछ काम सीख लेते हैं, पढाजी छूटने पर वे अपने आपको असहाय महसूस नहीं करते। मैंने यह भी देखा कि बिन पाठशालाओंका वायुमडल सरकारी शिक्षा-विभागों द्वारा सचालित टकसाली पाठशालाओंके आकर्षणहीन कार्यक्रमने कही भिन्न था। लडके अधिक स्वस्थ और प्रसन्न दिखायी दिये — जिस कल्पनासे कि वे कुछ अपयोगी काम कर सके हैं। अनेके शरीरकी गठन भी मजबूत है। ये पाठशालाओं कुछ दिन बिलकुल बन्द भी रहती हैं, क्योंकि अने दिनों लडकोको मारे दिन खेतों पर काम करना पडता है।

“शहरोंमें भी जैसे लडकोको तरह-तरहके व्यापार या घघमें लगा सकते हैं, जिनमें अपने आपको उसके लायक बना देनेकी शक्ति हो। यह परिवर्तन मनोरजनका काम भी देता है। सुबहके वर्गोंमें जो आष घटेकी छुट्टी होती है, अने वक्त जिन्हें जरूरत हो अथवा जो चाहें, अने सबके लिये अने वारके भोजनका प्रवध भी किया जा सकता है। जिस तरह गरीब

लड़के तो खुद-ब-खुद लुगीने दौड़ते हुये पाठशालाओंमें जाने लग जायेंगे और माता-पिताका भी अपने बच्चोंको नियमित रूपसे पढ़नेके लिये भेजते हुये अनुसाह होगा।

"अगर यह आठे दिनकी पाठशालाओंकी भोजना जारी की जा सके, तो कुछ अध्यापकोंका उपयोग गांवोंमें प्रौढोंकी शिक्षाके काममें किया जा सकता है। और बिनके लिये अन्हें अलग मेहनताना देनेकी भी जरूरत नहीं रहेगी। बिस तरह बिमारत व पढ़नेकी अन्य मामगीका भी अुपयोग हो सकता है।

"मद्रासके शिक्षा-मन्त्रीसे मैंने भेट की है और अन्हें पर भी लिखा है, जिसमें मैंने बताया है कि वर्तमान पीढीकी शारीरिक दुर्बलताका अेक खाम कारण पाठशालाओंका यह अनुविधाजनक समय ही है। मेरा तो यह खयाल है कि तमाम पाठशालाओं और कॉलेज केवल नवरे ही यानी ६ बजेसे ११ बजे तक लगा करें। ४ घटेका अन्यानक्रम काफी होना चाहिये। दोपहरको लडके घर पर रहें और शामको खेलें-कूदें तथा अपने शरीरके विकासकी ओर भी ध्यान दें। कुछ लडके दोपहरमें अपनी आजीविका कमानेमें लग सकने हैं और कुछ अपने माता-पिताके काम-काज या व्यापार-व्यवसायमें मदद कर सकते हैं। बिन तरह विद्यार्थी अपने माता-पिताके सम्पर्कमें जाँचकर रह सकेंगे, जो कि किसी भी पंथ या परम्परागत व्यवसायके लायक अन्हें बनानेके लिये जरूरी है।

"अगर हम यह अनुभव कर लें कि शारीरिक बिकास अेक प्रकारका राष्ट्र-निर्माण है, तो पाठशालाओं के समयमें यह प्रत्याबित परिष्करण अुपरसे दीर्घकालमें प्रगल्भतागी होने हुये भी हिन्दुत्वकी आर्थात्ता और पुगने गिदान्के अनुसूच ही मादम श्रेण और अत्रिगत लोम अिगता ग्वागन भी करे।"

विद्यालयोंका नमय केवल नुबहका ही रखनेके सबधमें डॉ० अ० न्दभीपतिका यह जो सुनाय है, बिराके सबधमें मुझे विशेष कहनेकी अिच्छा नहीं है, सिवा अिगके कि शिक्षा-विभागके अधिकारियोंसे मैं अिनकी सिफारिश कर दूँ । और न्यूनाधिक परिमाणमें स्वाश्रयी बनने-वाली अिन गन्थाओंके बारेमें तो यही कहना होगा कि अगर अुन्हें अपना मारा या कुछ खर्च निकालना है और विद्यार्थियोंको भी किसी लयक बनाना है, तो वे सिवा अिमके कुछ कर ही नहीं सकती । फिर भी मेरी सूचनाओंने कभी शिक्षा-शास्त्रियोंको जवरदस्त आघात पहुँचाया है — महज अिमीलिये कि वे शिक्षा देनेका आजसे दूसरा तरीका जानते ही नहीं । शिक्षाको स्वावलम्बी बनानेकी बात सुनकर ही अुन्हें अँमा मालूम होने लगता है, मानो अुसका सारा महत्त्व चला गया । सीधे बच्चोंमें ही अिम तरह अुनकी शिक्षाका मुआवजा लेना अुन्हें बड़ा खटकता है । पर शिक्षाके सबधमें यहूदियोंके अेक प्रयत्न पर लिखी गयी किताब मैं आजकल पढ रहा हूँ । यहूदी पाठशालाओंमें जो धधेका शिक्षण जारी किया गया है, अुसके सबधमें लेखकने लिखा है

“अिस तरह लडके अपने हाथमें जो काम करते हैं, वह खुद भी बड़ा कीमती होता है । चूँकि कामके साथ-साथ बच्चोंको मोचना भी पडता है, अिसलिये कामसे अुन्हें थकावट नहीं आती और अुसके मूलमें देशहितकी भावना होनेके कारण अिस शरीर-श्रमको अेक प्रकारका गौरव प्राप्त हो जाता है ।”

अगर हमें जैसे चाहिये वैसे शिक्षक मिल जायँ, तो हमारे बच्चे श्रमधर्मके गौरवको समझने लगेंगे और अुसे वे अपने बौद्धिक विकासका साधन और महत्त्वपूर्ण अंग भी मानने लगेंगे । साथ ही, वे यह भी अनुभव करने लगेंगे कि वे जो शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, अुसका मूल्य श्रमके रूपमें चुकाना भी अेक प्रकारकी देश-सेवा ही है । मेरे सुझावका आगय तो यह है कि हम बच्चोंको दस्तकारियोंकी शिक्षा

महज जिसलिये न दे कि वे कुछ उत्पादक काम करना सीखें, बल्कि जिसलिये दे कि उसके द्वारा बुनकी बुद्धिका विकास हो। सचमुच अगर राज्य ७ से १४ वर्षकी बुन्नके अन्दरके बच्चोको अपने हाथमें ले ले, उत्पादक श्रम द्वारा बुनके मन और शरीरको विकसित करनेकी कोशिश करे और फिर भी यह शिक्षा स्वावलंबी न हो सके, तो कहना होगा कि निश्चय ही वे पाठशालाओं ठगोके म्यान है, और बुनमें काम करनेवाले शिक्षक निरे बेवकूफ है।

मान लीजिये कि अके लडका या लडकी यत्रकी तरह नहीं, बल्कि अकलमन्दीके साथ काम करने लग जाय और अके विशेषज्ञके मार्गदर्शनमें होनेवाले सामूहिक कार्यमें दिलचस्पी भी लेने लगे, तो अके वर्षकी शिक्षाके बाद हरअके औसत दर्जेके विद्यार्थीको फी घटा अके आना कमाने योग्य हो जाना चाहिये। जिस तरह अगर महीनेमें २६ दिन मदरसा लगे और रोज बच्चा ४ घंटे काम करे, तो हरअके विद्यार्थी ६० ६-८-० महीना कमा लेगा। अब सवाल सिर्फ यही है कि क्या हम जिस तरह करोडो बच्चोके श्रमका लाभदायक उपयोग कर सकेंगे? अके वरसकी तालीमके बाद भी अगर हम बच्चोकी शक्ति और बुद्धिको जिस लायक न बना सकें कि बुनकी बनायी चीजें बाजारमें भेजने पर बुनसे अितनी कीमत आ सके, जिससे लडकोको फी घटा अके आनेके हिसाबसे मजदूरी पड जाय, तो समझना चाहिये कि हमारी बुद्धिका दिवाला ही निकल गया है। मैं जानता हूँ कि हिन्दुस्तानमें आज कहीं भी गाँवोके लोग अितना नहीं कमा सकते, जिससे कि फी घटा अके आनेकी मजदूरी पड जाय। पर जिसका कारण तो यह है कि हमने अपनेकी आज गरीबो और अमीरोके बीचकी गहरी विपमताका आदी बना लिया है, और दूसरे यह भी कि शहरके निवासी गाँवोको लूटनेमें शायद अनजानमें अग्रेजोके साथी बने हुये हैं।

हरिजनसेवक, ११-९-३७

स्वावलम्बी शिक्षा पर कुछ और चर्चा

[श्री महादेव देसाजीके 'स्वावलम्बी शिक्षा पर कुछ और चर्चा' नामक लेखमें से । —स०]

गांधीजीने इस विचारके खिलाफ चेतावनी दी कि स्वावलम्बी शिक्षाका विचार शराववन्दीको जल्दीसे जल्दी अमलमें लानेकी आवश्यकताके कारण पैदा हुआ है। अन्होंने आगे कहा

“दोनो अेक-दूसरीसे स्वतंत्र आवश्यकताअे है। आपको इस श्रद्धाको लेकर चलना होगा कि सरकारी आय-हो या न हो, शिक्षा दी जा सके या न दी जा सके, पूर्ण शराववन्दी करनी ही होगी। इसी तरह आपको इस श्रद्धाके साथ चलना होगा कि हिन्दुस्तानके गाँवोकी आवश्यकताअोको देखते अुअे, अगर हमे शिक्षाको अनिवार्य बनाना है, तो हमे अपनी ग्राम-शिक्षाको जरूर स्वावलम्बी बनाना चाहिये।”

अेक शिक्षा-शास्त्रीने, जो अुनके साथ चर्चा कर रहे थे, कहा “पहली श्रद्धा मुझमें गहराअीमे बैठी अुअी है। मेरे लिये शराववन्दी स्वय अेक लक्ष्य है और मैं स्वय अिसको अेक बडी भारी शिक्षा मानता हूँ। अिसलिये शराववन्दीको सफल बनानेके लिये मैं शिक्षाका सर्वथा वल्लिदान करना हो, तो करनेके लिये तैयार रहूँगा। लेकिन दूसरी श्रद्धाका मुझमें अभाव है। मैं अब भी विस्वास नही कर सका हूँ कि शिक्षा स्वावलम्बी बनायी जा सकती है।”

गांधीजीने कहा “अुसमें भी मैं चाहता हूँ कि आप अुसी श्रद्धाको साथ लेकर चले। ज्यो ही आप अुस पर अमल करना शुरू करेंगे कि अुपाय और साधन आप ही पैदा हो जायेंगे। मुझे खेद है कि अिन

आवश्यकताका खयाल मुझे बितनी बढी हुयी अुम्रमे हुआ, नही तो मे बुद ही यह परीक्षण करता। अब भी यदि औध्वरकी कृपा हुयी तो यह दिखानेके लिये कि शिक्षा स्वावलवी हो सकती है, मुझे जे कुछ हो सकेगा मे कहूंगा। लेकिन बिन नव वर्षोंमे मेरा नमय दूसरी बातोंने, जो आयद बितनी ही जरूरी थी, ले लिया। और यह तो मेरा मेगांवका निवास ही था, जिमने मुझमे यह विश्वास पैदा किया। अभी तक हमने अपने बच्चोंको कभी शक्तिसपन्न और बुझत बनानेका खयाल किये बिना अुनके दिमागोंमे किताबी बातें ठूसनेमे ही अपनी मारी ताकत लगायी है। हमें अब जिमे रोक देना चाहिये। और अपरी कार्यकी तरह नही, बल्कि बौद्धिक शिक्षाके प्रधान माघनकी तरह हाथ-पैरके कामके जरिये बच्चोंको अुचित रूपमे शिक्षा देनेमे अपनी शक्ति केन्द्रित करनी चाहिये।”

अुन मज्जनने कहा “यह भी मे समझ सकता हूं, लेकिन अुम्रमे मे स्कूलका पूरा खर्च निकलना ही चाहिये, अैसी बात क्या ?”

गावीजीने जवाब दिया “यह अुसकी अुपयोगिताकी कमीटी होगी। चौदह वर्षकी अुम्र होने अर्थात् सात वर्षका शिक्षाक्रम समाप्त करनेके बाद बच्चेको अेक कमाअु बिकाजीकी तरह स्कूलसे छुट्टी दे ईनी चाहिये। अब भी गरीब आदिमियोंके बच्चे अपने माता-पिताको अपने आप सहारा देते हैं। बिनमें अुनके मनमे यही भाव होता है कि अगर वे अुनके साथ काम न करेंगे, तो अुनके माता-पिता क्या नो बुद खायेंगे और क्या अुन्हें खानेको देंगे। यह स्वय ही अेक शिक्षा है। अिनी तरह राज्य भी सात वर्षकी अुम्रमे बच्चेको अपनी देव-रेखमें ले लेता है और फिर अुसके कुटुम्बको अेक कमाअु बिकाजीके रूपमें नौष देता है। आप शिक्षा भी देते हैं और अुनके साथ ही साथ बेकारीकी जड भी काटते जाने हैं। आप बच्चोंको अेक या किमी दूसरे धकेके लिये नैयार करते हैं। आप बिन खान धकेके साथ ही अुसके दिमागको माघते हैं, शरीरको मुगठित करते हैं, हाथकी लिखावटको

सुधारते हैं, उसकी कलाकी भावनाको अन्नत करते हैं। अिस तरह उसे मिखायी जानेवाली दस्तकारीका वह अुस्ताद हो जाता है।”

अुन सज्जनने पूछा “मान लीजिये कि लडका सादी बनानेकी कला और विज्ञानको लेता है, तो क्या आप समझते हैं कि जिन हुनरकी वह मीखता है, अुमका अुस्ताद बननेमें अुमें गान वरग रगने ही चाहिये ?”

गाधीजीने जवाव देते हुअे कहा “हां, अगर वह यात्रिक ढगने न सीखेगा तो अैसा होगा ही। वितिहास अथवा भाषाके अध्ययनमें हम वर्षों लगाते हैं? क्या अिन विषयोंमें, जिन्हें अभी न अितना बनावटी महत्त्व दे रखा था, हुनर या दस्ताकारी कुछ ग महत्त्वकी चीज है ?”

“लेकिन क्योंकि आप गमकर फनाओं और बुनाओंके गन्म मोचते रहते हैं, अिनलिअे यह माफ ही है कि आप अितने बुनाओंके स्कूल जारी करनेकी धात नोच रहे हैं। हो सकता है कि गारगी रचि बुनाओंके काममें न होकर किमी दूसरे गममें हो।

“बिलकुल ठीक। न अ हम अुने कोमी गमन हुनर गियाग, धारणा यह है कि २५ लडकोंके लिअे हम अेत गिअर ग, अ जितने गिअक आपको गिअ सवे अुनही मददने अर ह लडकोंके लिअे अेव वर्ष या स्कूल गीअ गाने हैं, और अिनमें हरअेक स्कूलके लिअे अलग-अलग अेक हुनर और गारगीकी गारगी या अूता बौरा दानेग पधा गिया ग गजने है। लिअे या अ आपकी ध्यानमें गदनी गीगी कि अिन लडकोंके हुनर का गन्म गरिये आप लडकोंके गिअारा गिअ ग गे है। गन्म ही अ का पर मैं और और दुगा। गार गारको अर अरको अर ली, अ अानी गन्म गेअिअ रीअने। अ गन्म है। गार गे अिन गन्मके अेके गमन है। यदि गन्म है अर अरको अर अरको गन्म

कल्पना ही नहीं कर सकते। अगर वे मिथिल और मेकेनिकल इंजीनियर ही होना चाहेंगे, तो वे मात्र वर्षकी शिक्षा खतम करनेके बाद भिन बुच्च और खास विषयोंके लिये बने हुअे खास कॉलेजोंमें चले जायेंगे।

“नाथ ही, मैं अेक बात पर और जोर दूंगा। दस्तकारीकी तालीमसे लिखाबी-पढाबीकी शिक्षाको दूर करनेके कारण हम ग्रामीण हुनरोको नीची निगाहने देखनेके बादी हो गये हैं। दस्ती हुनर कुछ नीचे दर्जेका काम समझा जाने लगा, और वर्णाश्रमकी भीषण चिकित्सेके कारण हम लोग धुनिये, जुलाहे, साती और मोचियोको नीची जातिके समझने लगे। हुनरको बौद्धिक शिक्षासे बहिष्कृत नीचे दर्जेकी कोबी चीज समझनेके दूषित रिवाजके कारण हमारे यहां क्रॉम्पटन और हारपीव जैसे आविष्कारक पैदा न हो सके।’ विद्या या बिल्मको जैसा दर्जा मिला हुआ है, अगर पेने या हुनरको भी स्वतंत्र रूपसे वैसा ही दर्जा मिला होता, तो अपने ही कारीगरोंमें से हमें बहुतसे आविष्कारक मिल जाते। अवश्य ही नवाविष्कृत यंत्रोंने आगे बढकर जल-शक्ति और दूसरी चीजोंको खोज निकाला, जिससे मिलोने हजारों मजदूरोंका स्थान ले लिया। मेरे खयालमे यह पैशाचिकता थी। हम गाँवों पर अपनी शक्ति लगाते समय बिस बातका खयाल रखेंगे कि हुनरकी प्रचुर शिक्षाके कारण जो आविष्कारका माहा पैदा होगा, वह सामूहिक रूपमें ग्रामीणोंके लिये सहायक होगा।”

हरिजननेवक, १८-९-१९३७

‘अेक अध्यापक’ की गलतफहमी

[‘स्वावलवी स्कूल’ नामक लेख]

“हमारी आजकी आर्थिक स्थितिका मुख्य अग यह है कि हमारे देशकी साधन-सामग्री पर आघार रखनेवाले मनुष्योंकी सख्याका बोझा बढता जा रहा है। अुदाहरणार्थ, हिन्दुस्तानमें पडती जमीने विशाल मात्रामे नहीं है, न हमारे पास अुपनिवेशो और पूंजीकी ही बहुलता है। अत हमारी साधन-सामग्रीमें से माल पैदा करनेका काम सीखे हुअे लोगोको ही मीपा जाना चाहिये। सौ व्यक्ति जमीनके सौ अलग-अलग टुकड़े जोते, तो ५० व्यक्तियोंके लिअे पूरी हो सके, अुत्तनी खुराक ही पैदा होगी। पर यदि ये सब टुकड़े अिकट्ठे किये जायें और २० चतुर (निष्णात) व्यक्ति अुस पर खेती करे, तो यही जमीन सौ व्यक्तियोंको निभा सकती है। आजकल अैसी खोजें हुअी हैं, जिनकी वदौलत मजदूरका गृहजीवन अच्यवस्थित नहीं होगा और न अुसकी स्वतंत्रताका ही हरण होगा, और फिर भी अुसकी अुत्पादन शक्ति बढ जायगी। अत अब अधिक व्यक्तियोंको काम करनेमें रोकनेकी जरूरत निश्चिन रूपसे अुत्पन्न हो गअी है। मनुष्योंको ५० वर्षकी अुम्रमें पेन्शन देनेके नियमसे बहुत खराबी पैदा होती है, क्योकि मामान्य व्यक्तिकी मानसिक और शारीरिक शक्ति अिम अुम्रके बाद ही अधिकमें अधिक खिलती है। योग्य मार्ग तो यह है कि मनुष्य पूरी शिक्षा पाकर तैयार न हो, नर नरु अुनको जीवनमें प्रवेश न करने दिया जाय।

“हिन्दुस्तानकी अवनतिका मुख्य कारण यही है कि उसके मजदूर अपने जीवनकी शुरुआत बहुत जल्दी करते हैं। बढ्ती अपने लडकेको जीवनमें अितना जल्दी प्रवेश कराता है कि वह १२ वर्षकी मुम्रमे अपनी कमानेकी चरम सीमा पर पहुँच जाता है। उसके बाद वह शादी करता है और थोड़े ही नमयमे अपना अलग स्वतंत्र घघा गुरु करता है। जिसने अुत्पादन और वितरणके नये तरीके अुनके दिमागमें अुतर ही नहीं सकते। अुनकी मजदूरीका आर्थिक दृष्टिसे ब्या महत्त्व है, जिसकी अुमे कुछ समझ नहीं हैनी। अैसे कागीगरको कोअी भी व्यक्ति बोला दे सकता है और अुनका शोषण कर सकता है। अुमे अपनी छोटी सकुचित दुनियामें कुअेके मेढककी तरह मुठिकलसे रोजी कमाकर जीनेमें और परिवार बढानेमें मतोष रहता है। हिन्दुस्तानमें मकृचितता, मनोषवृत्ति, भाग्यवाद, जातिप्रथा, जराव व अफीमके व्यसन, जिन सबकी जड यही है। मैं लकाके चायके वगीचोंको देखने गया था। वहाँ मुझे सबसे ज्यादा दुख वालकोंको मजदूरी करत देखकर हुआ। वहाँ स्कूल तो थे, पर माता-पिताका रख बच्चोंको मजदूरी पर लगानेका होता है। बडी अुम्रके लोगोंकी पीढी हमेशा नमी पीढीकी तरफके अपने कर्तव्यको मिर परमे अुनार देनेके लिअे प्रयत्नशील रहती है। राज्यका काम अुन प्रवृत्तियोंको रोकनेका है, जो व्यक्तियोंके लिअे लाभदायक पर समाजके लिअे हानिकारक हो। लका जैसे देशमें नी, जहाँ प्रकृतिके मामग्री-भजारको खोजकर अुनका अुपयोग करनेके लिअे आवग्यर आवदी नहीं है, बच्चोंको मजदूरी पर लगानेकी प्रयाका बचाव नहीं हो सकता, तो हिन्दुस्तानमें, जहाँ बच्चोंको काम पर लगानेमे बडे बेकार बनते हैं, अुनका बचाव हो ही कैसे सकता है ?

“माल तैयार करके बाजारमें बेचनेवाले कारखानो जैसे स्वावलम्बी स्कूल शिक्षा देंगे, अैसी भाति रखना अुचित नही है। व्यवहारमे तो वह कानूनमे मान्य की हुअी बाल-मजदूरी ही हो जायगी। अुदाहरण स्वरूप, अेक स्कूल कातनेका काम शुरू करेगा, तो चरखा चलाना अेक यात्रिक क्रिया बन जायेगी। अेक थानके लिये कितना सूत चाहिये, यह गिनकर गणित सीखा जा सकता है या रूअीके विकास और सुधारको देखकर विज्ञान और भूगोल सिखाया जा सकता है, यह बात मेरे गले नही अुतरती। ये वस्तुअे मनको अेक-दो बार सतेज बना सकती है, पर वर्षों तक यदि ये चालू रहे, तो मनका विकास होना बंद हो जायेगा और वह किसी निश्चित लकीर पर ही काम करने लग जायेगा। आंख, कान और हाथकी शिक्षा बहुत आवश्यक है और हाथसे की जानेवाली मेहनत सभी स्कूलोमे अनिवार्य कर दी जानी चाहिये। पर हमे यह नही भूलना चाहिये कि जिमे हाथकी शिक्षा कहते है, वह वस्तुतः दिमागकी ही शिक्षा होती है। कोअी भी स्कूल शिक्षा देना चाहता हो, तो अुसे बेचा जा सके अैसा माल बनानेका विचार छोड ही देना चाहिये। अुसे वच्चोको भांति-भांतिका कच्चा माल और यत्र देने चाहिये। अुस पर प्रयोग करके वच्चे अुमे भले ही विगाडे। विगाड तो होगा ही। श्री नरहरि परीखने मावरमती हरिजन आश्रमकी बालाओकी कताअीके जो आंकडे दिये है, अुनका ध्यानपूर्वक अध्ययन करनेसे प्रकट हो जाता है कि स्कूल अेक ही काम लेकर चलता है, और अुसमें शिक्षा पाये हुअे बडी बुन्रके बालक होते है, तब भी कोफ़ी मात्रामें विगाड होता है। घघेको भिखानेवाला स्कूल विज्ञानके कॉलेजकी तरह प्रयोग करने और माषन-नामश्री विगाडनेकी जगह है। हिन्दुस्तान जैसे गरीब देशमें तो अैसे स्कूल कमसे कम आवश्यक मज्यामे खोले जाने चाहिये और वे

कुछ खास केन्द्रोंमें होने चाहियें। गोरखपुर या अवधके लडकोको चुनकर चमडा कमानेका काम सीखनेके लिये कानपुर भेजा जाय, तो उससे राष्ट्रको कोसी नुकसान नहीं होगा। पर घघा सिखानेवाले अगणित स्कूल खोलनेसे तो विगाड होगा ही।

“दूसरा अेक तरहका नुकसान आम तौर पर ध्यानमें नहीं आता। अेक रतल रूमीमें से यदि प्रौढ वयका कुशल मजदूर चार मनुष्योंकी जरूरत पूरी हो सके, बितने कपडे बना सकता है, तो बिना सीखा हुआ मजदूर मुदिकलमे दो मनुष्योंकी जरूरतके कपडे बना सकेगा। जिसका अर्थ यह है कि हिन्दुस्तानके लिये वस्त्रोंकी जरूरतको पूरा करनेके लिये आजके मुकाबले दुगुनी जमीनमें कपास बोनी पड़ेगी। दूसरे शब्दोंमें कहें तो बिना सीखे हुअे मजदूरोंसे काम लिया जाय, तो हिन्दुस्तानकी वस्त्रोंकी जरूरत पूरी करनेके लिये जरूरी कपास अुगानेके लिये जितनी जमीन चाहिये, अुतनी जमीनमें यदि कुशल मजदूरोंसे काम लिया जाय, तो हिन्दुस्तानकी अन्न और वस्त्र दोनोंकी आवश्यकता पूरी हो सके, बितना अनाज और कपास पैदा हो सकते हैं।

“जिस नुकसानका अेक तीसरा पहलू भी ध्यान देने लायक है। यह कहा जाता है कि स्कूलके बालक तरह-तरहकी सुदरे चीजें बना सकते हैं। कुछ दिन पहले अेक अुद्योगशालामें पढकर आये हुअे लडकेको मैंने ‘प्लाञ्जीवुड’ से खिलौने बनाते देखा था। वह जो लकडी, नगूचा और औजार बिस्तेमाल करता था, वे सब विदेशी थे। अैसे अुद्योग विदेशी मालकी सपतको, यदि वह हमारे यहाँ न हो तो, नये सिरेमे पैदा करते हैं। कोसी यह कहेगा कि हम अपना ‘प्लाञ्जीवुड’ पैदा कर सकते हैं। पर अमेरिकामें जिस पेडको अुगानेके लिये जो फालतू जमीन पडी है, वह हिन्दुस्तानमें नहीं है। कच्चे माल और पूंजीका

अुपयोग बेकार चीजें पैदा करनेमें होता हो, तो अुसे रोकना चाहिये, अुसे अुत्तेजन देना योग्य नहीं।

“स्कूलो या कॉलेजोमें कोमल दिमागवाले विद्यार्थी जैसे और नफे-टोटेकी नहीं, पर विचारो और आदर्शोकी नृष्टिमें बसते हैं। अैसी कोमल वयमें यदि अुनके सामने माल पैदा करने, बेचने और अुसके पैसे पैदा करनेका आदर्श रखा जाय तो अुससे बालकोका विकास रुकेगा। और आज जो जगतमें धनकी बहुलताके बीच भी लोगोको दरिद्रतामें रहना पडता है, वह स्थिति बहुत बढ जायेगी। श्री रामकृष्ण अुद्योगकी शिक्षाको कुछ भी महत्त्व नहीं देते थे, यह भी अंक जानने लायक बात है।

“हम शिक्षाके वेगको बढा सकेंगे और आज लडका जो चीज सात वर्षमें सीखता है, अुसे दो वर्षोंमें सिखा देगे, अैसा मानना भी अंक विचित्र भ्रम है। लडकेका दिमाग कोअी खाली बरतनकी तरह नहीं है कि अुसमें जो कुछ भरना हो, सो भरा जा सके। बालक जो वस्तु १६ वें वर्षमें सीख सकता है, अुसे वह ८ वें वर्षमें सीखनेका प्रयत्न नहीं कर सकता, न अुसे करना चाहिये। विदेशी भाषाके कारण देरी लगती है, अैसा नहीं है, और लोग मानते हैं अुतना समय भी अिस विषयको नहीं दिया जाता। निवघ-लेखन दिमाग और भावनाका शिक्षण है। अैसी शिक्षा तो धीमी होगी ही। दिमागका विकास करनेके लिये काममें लिये जानेवाले तरीके शायद अनुत्पादक, नुकसानदेह तथा धीमे लग सकते हैं, पर अितना याद रखना चाहिये कि शिक्षाका अुद्देश्य मनको बलवान बनाना और जीवनमें मनको जरूरी समाधान करना सिखाना है। स्कूल मनुष्य ही नहीं पर माल भी तैयार करें, यह माँग करना हमारे लिये अुचित नहीं है।

“जिस सबका सार यही है कि स्कूल नमूदा और राष्ट्र दिवालिया बने, अनी अल्पदृष्टि वाली नीति रखना गलत अर्थगान्त्र है।

‘अंक अध्यापक’

यह लेख अंक प्रसिद्ध विश्वविद्यालयके अंक अध्यापकका है। अिनके साथके कागज पर लेखके हस्ताक्षर हैं, पर यह लेख बिना हस्ताक्षरका है, अिनलिसे मैं लेखकका नाम नहीं देता। पाठकों तो लेखसे मतलब है, लेखकने नहीं। गहरी जड़ जमाकर बैठी हुई कल्पनावसि मनुष्यकी दृष्टि कैसी मकृचि हो जाती है, अुनका यह अंक जोरदार अुदाहरण है। अिन लेखकने मेरी योजनाको नमस्कारका कष्ट नहीं अुठाया। मेरी कल्पनाके स्कूलके ँडकोका वे लकाके अर्ध गुलामी-वाले चायके अगीचोके लडकोके नाथ मुकाबला करते हैं, अिसमें वे अपनी ही बुद्धिका प्रदर्शन करते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि अुन अगीचोमें काम करनेवाले लडकोको विद्यार्थी नहीं गिना जाता। अुनकी नजदूरी अुनकी शिक्षाका हिस्सा नहीं है। मैं अिन तरहके स्कूलोकी हिनायत करता हूँ अुनमें तो ँडके हाथीस्कूलोमें अंर्जीको छोडकर अितना नीलते हैं, वह सब और अुनके अुपरात अुवायद अगीत, अालेखन और वेधक अंकाष अुद्योग — अितना नीलते। अिन स्कूलोंको ‘मारखाना’ कहना अनेक अ्पट हकीकतोंको नमस्कारसे अिनकार करनेके अरावर है। किमी अ्यअिने अन्दरके सिवाय कोअी प्राणी देखा ही न ही और मनुष्यका अंन — कुछ ही अंशोने — अन्दरके अर्पणने अिलना हो अिसी अरण वह मनुष्यका अर्णत अटनेने अिनकार कर दे अिन तरहकी यह अान है। मैंने अपने नुस्खाअों ने अितने परिणाम पैदा करनेका अाना अिया है वे सब परिणाम अुबेगे ही, अनी जाशान रखनेकी अेनाअनी अिन अध्यापकने लोंगोंको दी होनी। तो अुनके कहनेने कुछ तथ्य है, अनी नमसा जाना। पर वह अेनाअनी भी अनावश्यक होती, अ्योंकि मैंने अुअं अह अेनाअनी दे दी है।

मेरा सुझाव नया है, यह मैं मानता हूँ। पर नवीनता कोभी अपराध नहीं है। जिसके पीछे काफी अनुभव नहीं है, यह भी मैं मानता हूँ। पर मेरे साथियोंको जो अनुभव मिला है, उस परसे मुझे यह माननेके लिये प्रोत्साहन मिलता है कि यदि जिस योजनाको पूरी निष्ठासे अमलमे लाया जाय तो वह सफल होगी। यह प्रयोग निष्फल हो, तब भी जिसे आजमा लेनेमें राष्ट्रका कोभी नुकसान नहीं होगा। और यदि यह प्रयोग कुछ अशोमें ही सफल हो, तो भी उसे अपार लाभ होगा। दूसरे किमी तरीकेसे प्राथमिक शिक्षा मुफ्त, अनिवार्य और असरकारक नहीं बनायी जा सकती। आजकलकी प्राथमिक शिक्षा तो अंक जाल और भ्रमरूप है, यह निर्विवाद वस्तु है।

श्री नरहरि परीखके दिये हुअे आँकडे जिस योजनाका जितना मर्मथन हो सके, अतना करनेके लिये ही लिखे गये हैं। जिन आँकडो परसे ही आखिरी निर्णय नहीं किया जा सकता। ये आँकडे प्रोत्साहन अवश्य देते हैं। अुत्साही व्यक्तिको ये अपने काममें आगे बढ़नेके लिये हकीकतोका अच्छा सहारा देते हैं। सात वर्षका समय मेरी योजनाका अविभाज्य अंग नहीं है। यह भी हो सकता है कि मेरी सोची हुअी बौद्धिक भूमिका पर पहुँचनेमें अधिक वक्त लगे। शिक्षाके समयको बढ़ानेसे राष्ट्रको कोभी नुकसान होनेवाला नहीं है। मेरी योजनाके आवश्यक अंग ये हैं

१ सब तरहसे देखते हुअे 'अंक (या अनेक) अुद्योग लडके या लडकीके सर्वांगीण विकासका अच्छेमे अच्छा सावन है और जिनलिअे सारा पाठ्यक्रम अुद्योग-शिक्षाके आगपास गूँथा जाना चाहिये।

२ जिस कल्पनाके अनुसार, दी हुअी प्राथमिक शिक्षा कुल मिलानर स्वावलम्बी अवश्य होगी यद्यपि पहले वर्षके या दूसरे वर्षके पाठ्यक्रममें शायद वह पूर्ण स्वावलम्बी न दने। यह प्राथमिक शिक्षाका अर्थ, अपरोक्त विधामे है।

गणित और दूसरे विषय बुद्योग द्वारा सिखानेके बारेमें विन अध्यापकने शका की है। जिसमें वे विना अनुभवके बोलते हैं। मैं मेरे अनुभवमे कह सकता हूँ। दक्षिण अफ्रीकामें टॉल्स्टॉय फार्म पर जिन लडके-लडकियोंकी शिक्षाके लिये मैं नीवा जिम्मेदार था, उनका सर्वांगीण विकास करनेमें मुझे कोजी मुश्किल नहीं हुआ। वहाँ शिक्षाका केन्द्र-बिन्दु करीब आठ घंटेका बुद्योग था। उनको अंक या बहुत हुआ तो दो घंटेकी अक्षर-ज्ञानकी शिक्षा मिलती थी। बुद्योगमें खोदना, खाना पकाना, पाखाना साफ करना, झाड़ू लगाना चप्पल बनाना, सादा बड़जी-काम और सदेवे लाना ले जाना—ये काम थे। बालकीकी बुम्र ६ ने १६ वर्षकी थी। यह प्रयोग उनके बाद तो खूब फला-फूला है।

हरिजनवधु, ३-१०-३७

८

शहरोंके लिये भी यही

['बम्बयीमें प्राथमिक शिक्षा' नामक लेख]

अब तक मैंने जो चर्चा की है, वह ग्राम-शिक्षाके बारेमें की है, क्योंकि यही सारे हिन्दुस्तानका प्रश्न है। यदि जिसको हम नीवी तरहसे हल कर सकें, तो शहरोंके लिये बठिनायी नहीं होगी, यह समझकर मैंने शहरोंके बारेमें कुछ नहीं लिखा। पर बम्बयीके शिक्षामें दिलचस्पी लेनेवाले अंक नागरिकका नीचेका प्रश्न उत्तर माँगता है-

“प्राथमिक शिक्षाके भारी खर्चके प्रश्नको हल करनेमें कांग्रेसका मन्त्रि-मंडल लगा हुआ दीखता है। शिक्षाका खर्च शिक्षामें से ही निकल सकता है, अना नुस्राया गया है। बम्बयी जैसे शहरमें किस तरहसे और कितने अंशमें शिक्षा दिशामें बढ

सकते है, बिस प्रश्नकी चर्चा आवश्यक लगती है। कहा जाता है कि शिक्षाके पीछे बम्बयी कॉरपोरेसनके खर्चका अदाज बिस सालके लिअे ३५ से ३६ लाख रुपयेका है, और सारे शहरमे शिक्षा अनिवार्य करनेमे दूसरे कितने ही लाखका खर्च बढ जायेगा। शिक्षाकी तनख्वाहमे २० लाखसे और किरायेमे ४ लाखसे ज्यादा रकम खर्च होती है। प्रति विद्यार्थी औसत सालाना खर्च ४० से ४२ रुपये होता है। विद्यार्थी पढते-पढते अितनी रकमका काम करे, तभी शिक्षाका खर्च शिक्षामे से निकल सकता है। यह कौने हो सकता है ? ”

मेरा तो दृढ विश्वास है ही कि यदि अुद्योगका तत्त्व बम्बयीके स्कूलोमे दाखिल हो, तो अुससे बम्बयीके बालकोको और बम्बयी शहरको लाभ ही होगा। शहरमें बडे हुअे बालक तोतेकी तरह कविताबे रटेगे और सुनायेंगे, नाचेंगे, दूसरे हाव-भाव दिखायेंगे, ढोल बजायेंगे, कूच करेंगे, अितिहास-भूगोलके जवाब देंगे, तो कोअी थोडा अक-गणित जानेंगे, पर अुससे आगे नही बढेंगे। मैं भूल गया। वे थोडी अंग्रेजी जरूर जानते होंगे। पर अेक टूटी हुअी कुर्सी ठीक करनी हो, अथवा फटा हुआ कपडा सीना हो, तो वे नही कर सकेंगे। अैसी बातोमे हमारे शहरोके लडके जितने पगु देखे जाते है, अुतने पगु लडके मैंने दक्षिण अफ्रीका या अिंगलैण्डके अपने प्रवासमे कही नही देखे।

बिसलिअे मैं तो मानता ही हूँ कि शहरोमे भी यदि अुद्योगों द्वारा ही शिक्षा दी जाय, तो बालकोको बेहद लाभ हो सकता है और पूरे ३५ लाख नही, तो अुसका अेक बहुत बडा हिस्सा तो बच ही सकता है। ४२ के बजाय वार्षिक ४० रु० ही प्रति बालक गिने जायें, तो म्युनिसिपैलिटी ८७,५०० बालकोको पढाती है, अैसा कहा जा सकता है। दस लाखकी आबादी हो तो बालकोकी नख्या

कमने कम डेढ लाख होनी चाहिये, अर्थात् लगभग ६२ हजार बालक विना शिक्षाके दृष्टे होंगे। ये सत्र गरीब नहीं होंगे और प्राइवेट स्कूलोंमें जाते होंगे, असा मानें तब भी ५६,००० बालक वचते हैं। उनके लिये जितनी हिसाबमें २२ लाख ४० हजार रुपये और चाहियें। जितने पैसे बम्बजी कब पैदा करे और कब सब बालकोको पढावे? और क्या पढावे?

मैं मानता हूँ कि शिक्षा अनिवार्य और मुफ्त होनी ही चाहिये। पर बालकोको अुपयोगी बुद्योग देकर अुसकी मारफत ही उनके मन और शरीरकी शिक्षा होनी चाहिये। मैं यहाँ भी पैसोंकी गिनती करता हूँ, वह अनुचित नहीं है। अर्थशास्त्र नैतिक और अनैतिक दोनों प्रकारका होता है। नैतिक अर्थशास्त्रमें दोनों बाजू बराबर होंगी। अनैतिकमें तो जिसकी लाठी अुमकी भैस। विमका प्रमाण कितना हो, यह अुसकी ताकत पर आधार रखता है। अनैतिक अर्थशास्त्र जैसे घातक है, वैसे ही नैतिक आवश्यक है। अुसके विना धर्मकी पहचान और अुसका पालन मैं असंभव मानता हूँ।

मेरा नैतिक शास्त्र मुझे यह सुझाता है कि बच्चीके बालक हर महीने खेलते-कूदते तीन रुपयेका काम कर सकते हैं। वे यदि ४ घंटे काम करे और हर घंटेके दो पैसे गिने जायें, तो महीनेमें २५ दिन खुलनेवाले स्कूलमें वे ५० आने यानी २० ३-२-० का काम कर सकते हैं।

जब शिक्षाके रूपमें बुद्योग भिखाया जाय, तब यह माननेका कोभी कारण नहीं है कि बालक कामके बोझसे दब जायेंगे। नाममात्रके शिक्षक इतिहास-भूगोल जैसे सरल और रसप्रद विषय सिखाते हुये भी शिष्योको बोझरूप लगते हैं। सच्चे अध्यापक हँसते-खेलते अपने शिष्योको बुद्योग सिखाते हैं, यह मैंने अपनी आँखोंसे देखा है। जैसे शिक्षक कहाँसे ढूँढे जायें, असा तो कोभी नहीं कहेगा। कोभी चीज

करने लायक है, असा माननेके बाद असे करनेवाले तैयार करना तो स्वाभाविक ही असे माननेवाले व्यक्ति या सस्थाका धर्म हो जाता है। असे शिक्षकोको तैयार करनेमे समय तो लगेगा ही। आजकी अयोग्य शिक्षाकी रचनामे और असेके लिअे शिक्षक तैयार करनेमें जितना समय गया, असेका शताश भी अिसमें नही लगेगा। खर्च तो प्रमाणमे कम ही लगेगा। यदि मेरे हाथमे बबअी कॉरपोरेशन हो, तो मैं अपनी कल्पनामे अद्वा रखनेवाले शिक्षा-शास्त्रियोकी अेक छोटी समिति नियुक्त करके अुनसे अेक महीनेके भीतर योजनाकी माँग करूँ और असेका अमल शुरू कर दूँ। अिसमे यह मान्यता अवश्य आ जाती है कि मुझे अिस कल्पनाकी सभावनाके बारेमे अचल अद्वा है। पराअी अद्वासे आज तक कोअी अच्छे व महान कार्य नही हुअे।

अेक प्रश्न बाकी रहता है। कौनसे अुद्योग शहरोमे सरलतापूर्वक सिखाये जा सकते हैं? मेरे पास तो अुत्तर तैयार ही है। मैं जो चाहता हूँ, वह तो गाँवकी ताकत है। आज गाँव शहरोके लिअे जीते हैं, अुन पर अपना आघार रखते हैं। यह अनर्थ है। शहर गाँवो पर निर्भर रहें, अपने बलका सिंचन गाँवोसे करें अर्थात् अपने लिअे गाँवोका बलिदान करनेके वजाय खुद गाँवोके लिअे बलिदान व त्याग करें, तो अर्थ सिद्ध होगा और अर्थशास्त्र नैतिक बनेगा। असे शुद्ध अर्थकी सिद्धिके लिअे शहरोके बालकोके अुद्योगका गाँवोके अुद्योगोके साथ सीघा सवघ होना चाहिये। असा होनेके लिअे मेरे खयालमें अभी तो पीजनसे लेकर कताअी तकके अुद्योग आते हैं। आज भी कुछ तो असा होता ही है। गाँव कपास देते हैं और मिले अुसमे से कपडा बुनती है। अिसमे शुरूसे आखिर तक अर्थका नाश किया जाता है। कपास जैसे-तैसे बोअी जाती है, जैसे-तैसे चुनी जाती है और जैसे-तैसे साफ की जाती है। अिस कपासको कअी बार नुकसान सहकर भी किसान राक्षसी जिनोमे बेचता है। वहाँ वह विनौलेसे अलग होकर, दबकर, अघमरी बनकर मिलोमें गाँठोके रूपमें जाती है। वहाँ असे पीजा जाता है, काता

जाता है और बुना जाता है। ये सब क्रियाएँ जिस तरह होती हैं कि कपासका तत्त्व—सार—तो जल जाता है और उसे निर्जीव बना दिया जाता है। मेरी भाषासे कोसी द्वेष न करे। कपासमें जीव तो है ही। जिस जीवके प्रति मनुष्य या तो कोमलतासे वरताव करे या राक्षसकी तरह। आजकलके वरतावको मैं राक्षसी व्यवहार मानता हूँ।

कपासकी कुछ क्रियाएँ गाँवोंमें और शहरोंमें हो सकती हैं। असा 'होनेसे शहर-गाँवोंका भ्रव नैतिक और शुद्ध होगा। दोनोंकी वृद्धि होगी और आजकी अव्यवस्था, भय, शका, द्वेष सब मिट जायेंगे या कम हो जायेंगे। गाँवोंका पुनरुद्धार होगा। जिस कल्पनाका जन्म करनेमें थोड़ेसे द्रव्यकी ही जरूरत है। वह आसानीसे मिल सकता है। विदेशी बुद्धि या विदेशी यंत्रोंकी जरूरत ही नहीं रहती। देशकी भी अलौकिक बुद्धिकी जरूरत नहीं है। अके छोर पर मुखमरी और दूनरे छोर पर जो अमीरी चल रही है, वह मिटकर दोनोंका मेल सवेगा, और विग्रह तथा खूनखराबीका जो भय हमको हमेशा डरता रहा है, वह दूर होगा। पर विल्लीके गलेमें घटी कौन बाँधे ? बम्बयी कॉरपोरेशनका हृदय मेरी कल्पनाकी तरफ किस प्रकारसे मुड़े ? मिमका जवाब मैं सेगाँवमें हूँ, जिसके बजाय तो यह पत्र लिखनेवाले बम्बयीके विद्यारसिक नागरिक ही ज्यादा अच्छी तरह दे सकते हैं।

हरिजनबधु, २६-९-३७

राष्ट्रीय शिक्षकोंसे

जो किसी भी प्रकारकी राष्ट्रीय शिक्षण-संस्था चला रहे है, उन शिक्षकोंको मेरी यह सूचना है कि यदि प्राथमिक शिक्षाके बारेमें आजकल में जो कुछ लिख रहा हूँ, वह उनके गले अतरा हो, तो वे खुस पर यथावक्ति अमल करें, उसका पद्धतिपूर्वक हिसाब रखें और अपने-अनुभव मुझे लिख भेजे। जो मेरी सुझावी हुयी पद्धतिके अनुसार स्कूल चलानेको तैयार हो, जो अभी खाली या बेकार हो और जो दूसरा काम करते हो, पर उसे छोडकर स्कूल चलानेको तैयार हो, वे मुझे लिखे।

मेरी मान्यता यह है कि प्राथमिक स्कूलको स्वावलम्बी बनानेका तुरत नजरमें आनेवाला बुद्योग कताबी, पिजाबी वगैरा है। जिसमें कपास चुननेसे लेकर रग-विरगी तथा बेल-बूटेवाली खादी बनाने तककी सब क्रियाओका समावेश होता है। जिसमें मजदूरी अंक घटेकी कमसे कम दो पैसे गिननी चाहिये। स्कूल यदि पाँच घटे चले, तो चार घटे तक मजदूरी और अंक घटे तक जो बुद्योग सिखाया जाय उसका शास्त्र तथा अन्य विषय — जो बुद्योग सिखाते हुअे नहीं सिखाये जा सकते हो — सिखाये जायें। बुद्योग सिखाते हुअे जो विषय सिखाये जा सकते है, उनमें कुछ अशोमे या पूर्णत अतिहास, भूगोल और गणितशास्त्र आते है। भाषा-ज्ञान और उसके साथ ही व्याकरण तथा शुद्ध उच्चारण तो आ ही जायेगा। क्योंकि शिक्षक बुद्योगको जिस सारे ज्ञानका वाहन या माध्यम समझेगा और जिससे बालकोकी बोली स्पष्ट करावेगा। असा करते हुअे सहज ही व्याकरणका ज्ञान

दे देगा। पहलेसे ही गिननेकी क्रिया तो बालकोको सीखनी ही चाहिये। अत गणितमे ही 'श्री गणेशाय नम' होगा। स्वच्छताका विवेक तो अलग विषय होगा ही नहीं। बालकोके हरभेक कार्यमें स्वच्छता होनी ही चाहिये। अुनका स्कूलमें प्रवेग ही स्वच्छतासे शुरू होगा। अत अभी तो मेरी कल्पनामें अेक भी विषय अैसा नहीं जाता, जां अुद्योग सिखाते-सिखाते बालकोको नहौ सिखाया जा सके।

मेरी कल्पना अैसी है कि जिस तरह, मने मीखनेके विषयोको अलग-अलग नहीं गिना, वल्कि यह माना है कि सब अेक दूसरेमें ओत-प्रोत है और सब अेकमें से ही अुत्पन्न हुअे है, अुसी तरह शिक्षककी भी अेककी ही कल्पना है। विषयवार अलग-अलग शिक्षक नहीं, पर अेक ही। वर्षोके अनुसार अलग-अलग हो सकते है। अर्थात् सात कक्षाअे हो तो सात शिक्षक होंगे और अेक शिक्षकके पाम २५ मे अधिक लडके नहीं होंगे। यदि शिक्षा अनिवार्य हो, तो शुरूसे ही बालक व बालिकाओके लिअे अलग कक्षाअे होनेकी मुझे आवश्यकता लगती है। क्योकि आखिरमे हरअेकको अेक ही घघा नहीं सिखाया जायगा, बिसलिअे पहलेसे ही अलग वर्ग हो तो अधिक सहूलियत होगी, अैसी मेरी मान्यता है।

जिस पद्धतिमें, घटोमें, शिक्षकोकी सख्यामे या विषयोके अनुक्रममें भले ही कुछ फेरफारकी गुजाबिघ हो, पर जिस सिद्धातका अवलबन करके हरअेक स्कूलको चलना होगा, अुस सिद्धान्तको अचल समझकर ही मेरी कल्पनाका स्कूल चल सकता है। अभी चाहे जिस सिद्धातका अमल करके किसी प्रकारका परिणाम नहीं बताया जा सके, पर जो शिक्षक अैसी शिक्षाकी शुरुवात करनेकी अिच्छा रखता हो, अुसे जिस सिद्धातके प्रति श्रद्धा होनी ही चाहिये। और यह श्रद्धा बुद्धि पर आधारित है, बिसलिअे अधी नहीं, वल्कि ज्ञानमय होनी चाहिये। ये सिद्धात दो है.

(१) शिक्षाका वाहन या माध्यम कोभी भी आमोपयोगी बुद्योग हो,

(२) कुल मिलाकर शिक्षा स्वावलम्बी होनी चाहिये। अर्थात् पहले अेक-दो वरस भले ही वह स्वावलम्बी न हो, पर सात वर्षका हिसाब निकालने पर जमा व खर्च दोनों बराबर होने चाहिये। मैंने जिस शिक्षाके ७ वर्ष गिने हैं। पर जिसमे कमी-बेशीको स्थान है।

हरिजनवधु, १९-९-'३७

२

। ['प्राथमरी अध्यापकीके अुम्मीदवारोसे' नामक टिप्पणी]-

मैंने राष्ट्रीय अध्यापकोंको लक्ष्य करके जो लिखा था, अुसके जवाबमें मेरे पास रोज अनेको खत आ रहे हैं। यह सन्तोषकी बात है। जिन पत्रोसे मैं देखता हूँ कि अिन्हें लिखनेवालोने मेरी अपीलका ठीक-ठीक अर्थ समझा नहीं। अिन्हें किसी लाभदायक दस्तकारी द्वारा शिक्षा देनेके विषयमें पूर्ण अ्रद्धा न हो और जो जिस कामको केवल प्रेम-भावसे और सिर्फ जीविका लायक पैसा लेकर करनेके लिये तैयार न हो, अुनकी जरूरत नहीं है। अुन्हें मेरी यह सलाह है कि वे कातनेकी कलामें और अुसके पहलेकी तमाम क्रियाओमें पूर्ण निष्णात बन जायें। जिस बीचमें मैं अुन सबके नाम नोट करके रख लेता हूँ। मेरी योजनाके अमलमें जो प्रगति होगी, अुसकी अुन पत्रलेखकोको यथासमय खबर दे दी जायगी। सातो प्रान्तीय सरकारे अगर मेरी योजनाको मजूर कर ले और अुसका प्रयोग करनेके लिये तैयार हो जायें, तो अुनकी माँग पूरी करनेके लिये मेरा यह प्रयत्न है।

हरिजनसेवक, १६-१०-'३७

रचनात्मक कार्यकर्ताओंसे

['स्वाश्रमी शिक्षा' नामक लेख]

सरकारीका अर्थ नात प्रातोमें काग्रेस-सरकारी समझना चाहिये। पर काग्रेस-सरकार बन गयी, विमल्लिजे जो मानस काग्रेसवादी लोगोका न था, वह यथायक हो जाय, यह माननेका कोखी कारण नहीं है। यद्यपि काग्रेसका रचनात्मक कार्यक्रम १९२० के महापरिवर्तन कालसे चलता आ रहा है, तो भी जिसके लिये काग्रेसवादियोंमें जीवित वातावरण पैदा हो गया है, यह नहीं बूटा जा सकता। फिर जो लोग काग्रेसमें बाहर है, अन्के बारेमें तो कहना ही क्या ? पर यद्यपि ('सहारक' जिन विशेषणका अहिंसक रचनामें उपयोग करना अयोग्य न हो तो) सहारक या निषेधात्मक कार्यक्रम जितना लोकप्रिय हों गया, अतना रचनात्मक अथवा उत्पादक कार्यक्रम नहीं बन सका, तब भी काग्रेस अने १९२० ने सहन करती आयी है। काग्रेसने अने कभी रद्द नहीं किया। और काग्रेसजनोंने अने अच्छी नृत्यामें अपना लिया है; जिससे जिन क्षेत्रमें जो कृच्छ हो सका है, वह काग्रेसवादीयोंने ही हो सका है और प्रगति होनेकी आशा भी जहाँ काग्रेस-सरकार बनी है, वहीं रहती जा सकती है। पर काग्रेस-सरकार बन गयी जिनलिये रचनात्मक कार्यमें श्रद्धा रखनेवाले धीमे न पड़े, गफलतमें न रहे। काग्रेस-सरकार बननेने अतना धर्म अधिक जाग्रत, अधिक अृद्यनी और अधिक अन्ध्यासी होनेका है। और अना होगा तनी काग्रेस-सरकारके बारेमें जो आशा रखी होगी, वह नफल होगी। काग्रेस-सरकारका अर्थ है, लोकतंत्रके प्रति जिम्मेदार। जिन सरकारको लोकतंत्र यदि आज हटाना चाहें, तो हटा सकता है। लोकतंत्रकी जिच्छा और

सत्ता पर ही यह सरकार निर्भर है। बिनासे कांग्रेसवादी लोग चाहे तो रचनात्मक कार्यक्रमको स्वीकार कर सकते हैं और उसका अमल भी कर सकते हैं और तभी वह हो सकता है। सरकारके पास स्वतंत्र ताकत यानी तलवारका जोर नहीं है। उसका कांग्रेसने ही अच्छा-पूर्वक त्याग कर दिया है। यह ताकत तो ब्रिटिश सरकारके पास है। जब कांग्रेस-सरकारको ब्रिटिश सत्ताका यानी तलवारकी ताकतका अपुयोग करना पड़े, तब समझना चाहिये कि तिरगा झंडा नीचे गिर गया। कांग्रेस-सरकार उस दिनसे खतम हुई समझना। यदि लोग कांग्रेसकी अर्थात् कांग्रेस-सरकारकी बात नहीं मानेंगे या उनमें अहिंसाने प्रवेश नहीं किया होगा, तो आज तेजस्वी लगनेवाली सरकार कल निस्तेज हो जायगी।

अतः रचनात्मक कार्यक्रममें श्रद्धा रखनेवाले कांग्रेसवादी सावधान हो जायें। मेरा पेश किया हुआ शिक्षाक्रम भी रचनात्मक कार्यका ही एक बड़ा अंग है। जो रूप उसे मैं आज दे रहा हूँ, उसे कांग्रेसने अपना लिया है, यह कहनेका मेरा आशय नहीं है। पर मैं जो लिख रहा हूँ, वह १९२० ने राष्ट्रीय शालाओंके लिये जो कुछ मैंने कहा है या लिखा है, उसकी जड़में छिपा हुआ ही था। वह समय आने पर मेरे सामने यकायक प्रकट हुआ है, और मेरा दृढ़ विश्वास है।

अब यदि प्राथमिक शिक्षा बुद्धोग द्वारा ही देनी है, तो यह काम खास कर चरखे और दूसरे ग्रामोद्योगोंके वारेमें विश्वास रखनेवालोंसे ही अभी तो हो सकता है। क्योंकि ग्रामोद्योगोंमें मुख्य वस्तु चरखा है। उसके बुद्धोगमें चरखा-नघने काफी जानकारी प्राप्त कर ली है और दूसरे बुद्धोगोंके वारेमें ग्रामोद्योग सघ जानकारी प्राप्त कर रहा है। अतः जो तात्कालिक रचना हो सकती है, वह चरखे आदि ग्रामोद्योगों द्वारा ही हो सकती है, ऐसा मुझे लगता है। पर जिनको चरखेमें श्रद्धा है, वे सब शिक्षक नहीं होते। हरएक बढ़ती बढ़ती शिरीका

शास्त्री नहीं होता। जो बुद्धोगका शास्त्र नहीं जानता, वह बुद्धोग द्वारा सामान्य शिक्षा नहीं दे सकता। जिससे जिनको शिक्षा-शास्त्रमें दिलचस्पी है और चरखे अित्यादिमें दिलचस्पी है, जैसे मनुष्य ही प्राथमिक शिक्षामें मेरा सुझाया हुआ क्रम दाखिल कर सकते हैं। मेरे पाम आया हुआ श्री दिलखुश दीवानजीका पत्र जैसे लोगोको मदद करेगा, यह मानकर उसे नीचे पेश करता हूँ

“स्वाश्रय और बुद्धोग द्वारा शिक्षाके वारेमे आप 'हरिजन' और 'हरिजनबन्धु' में जो सुन्दर विचार और अनुभव लिख रहे हैं, उनसे मुझे अपने यहाँके जिस दिशाके कार्यमें अितना अधिक प्रोत्साहन और उत्तेजन मिलता है कि मैं यह पत्र लिखनेको प्रेरित हुआ हूँ और आपकी सारी योजना कितनी योग्य है, उसके वारेमें मेरा अुत्साह बतानेके लिये लिखना है। दो बरससे मैं यहाँ छोटीसी बुद्धोगशाला चला रहा हूँ। उसके अनुभव आपके विचारोसे खूब मिलते जा रहे हैं, जिससे मुझे बहुत हर्ष होता है। जिसलिये आप जो क्रांतिकारी विचार बताने रहे हैं, उनका मैं पूरी तरहसे स्वागत करता हूँ और उसमें मेरी सौ फी सदी सहमति दे सकता हूँ। यह मेरी अध-श्रद्धाका परिणाम नहीं है, बल्कि अनुभवजन्य श्रद्धाका प्रतीक है, ऐसा आप समझ सकेंगे। आप सारे देशको अुपयोगी हों, ऐसी शास्त्रीय और सम्पूर्ण योजनाका विचार कर रहे हैं। मैं यहाँ जो काम कर रहा हूँ, उसमें पूर्णता और शास्त्रीयताकी काफी गुजाअिश है और मैं उस दिशामें प्रयत्न कर रहा हूँ। अिममें अधिक पूर्ण बननेमें अत्यन्त अुत्साह और आनन्द मिलता है। पर दो वर्षमे मुझे जो कुछ अनुभव हो रहे हैं, उनके वारेमें अुत्पन्न होनेवाले प्रश्नो पर जो कुछ चिन्तन, विचार-वर्गण चल रहे हैं, उन परमे मुझे आपके स्वाश्रयी और बुद्धोगी शिक्षाके विचार बहुत ही योग्य और अनुभवमिद्ध हो सकने जैसे

लगत है। मैं आपके विचार और मुद्दे समझ सका हूँ। जिसी तरह मेरा अनुभव भी असा होता जा रहा है कि—

“१ अद्योगको सब प्रकारकी शिक्षाका माध्यम रखनेमें सचमुच ही विद्यार्थीको सर्वोत्तम शिक्षा मिल जानी है और पुरुषार्थ और चरित्रके सस्कार तो उसमें असी अद्योगमय शिक्षाकी बहुत कीमती वस्तुएँ ही हो जाते हैं। अतः हिन्दुस्तान जैसे गरीब देशकी शिक्षाको स्वाश्रयी बनानेकी अिममें जो अपार शक्ति भरी हुई है, अुमके सिवाय शिक्षाके शुद्ध वास्मकी-दृष्टिमें भी अद्योगको शिक्षाका माध्यम बनानेमें विद्यार्थियोंका सर्वांगीण विकास बहुत ही सरल हो जाता है।

“२ अद्योगको शिक्षाका माध्यम बनानेसे प्राथमिक शिक्षा जरूर आसानीसे स्वाश्रयी बन सकती है। हिन्दुस्तान जैसे गरीब देशकी शिक्षाका प्रथम शिक्षाको स्वावलम्बी बनानेमें ही हल किया जा सकता है। अिराके अलावा यही पद्धति हमारा आर्य सस्कृतिके अनुरूप हो सकती है। गुप्तों तो चरखेत अद्योग ही खूब पसन्द आ गया है। यही अर्ध-व्यापक हो जाता है असा लगता है। अिसलिये मेरे दो अर्धके अनुभवमें चरखा अद्योगकी प्राप्तिके ही अाँके मेरे पान पडे हैं। अागने अिना अिया है, अुतना व्यवस्थित रूप मेरे अिधान-आगतो अनी नहीं मिला है। अतः अिममें मिले अुके अनुभवके अिना अो अिने काफी गुजाअिग है। ये अाँके अाँके अुनके अाँके अाँके अिपणिया आप देखना चाहें तो अेजेंग।

हम साध सकेंगे। 'पठितामी', 'विद्वत्ता', 'कौशल', आदिके शिक्षाके आजके अत्यन्त आमक विचारोको छोड़ देंगे, तभी बुद्योग-शिक्षामें रहे हुए सर्वगामी विकासकी पहचान हम कर सकेंगे।

“४ स्कूलके कुल समयका पौना भाग बुद्योगके लिये देनेकी पहली क्रांति करके शिक्षा-पद्धतिमें दूसरी क्रांति यह करनी होगी कि वाचन, लेखन, समयपत्रक, परोक्षा, विषयवार शिक्षा आदि आजके साधन दूर करके बुद्योग-शिक्षाके लिये नीचेके साधन काममें लिये जायें, जो बहुत ही अपयोगी और नरल सिद्ध होते जा रहे हैं:

“(अ) श्रुतशिक्षा पुस्तको पर आधार रखनेके बजाय शिक्षक ही विद्यार्थियोंके आगे जीवित पुस्तक बनकर बैठ जाय, तो धूमते-फिरते बातोंमें और व्यवस्थित रीतिमें विद्यार्थी थोड़े समयमें अितना अधिक नीब लेते हैं कि शिक्षकके उत्साह और विद्यार्थियोंकी जिज्ञानाके परिणामस्वरूप जिस जीवित पुस्तकमें नित्य नये प्रकरण जुड़ते ही जाते हैं। और ऐसी श्रुतशिक्षामें पुस्तकोका स्पर्च लगभग मिट ही जाता है।

“(आ) शिक्षकका सहवान बुद्योग-शिक्षाका यह विलकुल अनिवार्य साधन है। शिक्षकके हृदयमें विद्यार्थियोंके लिये प्रेम और उत्साह भरा हुआ होगा, तो यह सहवास बहुत ही नरल, रमिक और परस्पर विकाससाधक हो जायगा। असा शिक्षक शिक्षाके माय-साथ निरन्तर विद्यार्थी भी बना रहता है।

“(अि) राष्ट्रीय और सार्वजनिक प्रवृत्तियोंमें मत्त मह्योग देनेका क्रम बुद्योगों द्वारा तो विद्यार्थीवर्ग वचपमने ही प्रजा, नमात्र या सरकारको मदद करने लग ही जाता है। पर जैसा कि आप लिखते हैं, शराबवन्दी, हरिजन-सेवा और

ग्राम-सफाई जैसी प्रवृत्तियोंमें सतत सहयोग देनेका क्रम अपने स्कूलमें दाखिल करके कुशल और अुत्साही शिक्षक जीवनकी शुरुआतमें ही विद्यार्थियोंको सेवा और समाज-परिचयकी अुत्तम प्रकारकी व्यावहारिक और जीवित शिक्षा दे देता है। 'हमारी अुद्योग-शिक्षाका यह नया साधन सारी शिक्षाको अत्यन्त व्यावहारिक, जीवित और फलप्रद बना देता है। जैसे-जैसे जिस वारेमें मैं ज्यादा-ज्यादा विचार करता हूँ, वैसे-वैसे मुझे अधिक-अधिक स्पष्ट होता जा रहा है कि स्वराज-साधना और स्वराज-संचालनकी खादी, ग्रामोद्योग, मद्यनिषेध, हरिजन-सेवा और ग्राम-सफाई जैसी हमारी प्राणदायक प्रवृत्तियोंके लिये अुद्योग-प्रधान प्राथमिक स्कूल खूब ही मददगार होनेवाले हैं। 'विद्यार्थी ही प्रजाका सच्चा निर्माण कर सकते हैं,' जिस सूत्रका जिसमें कितना सुन्दर प्रयोग होनेवाला है।'

“(अ) माता-पिता — बड़ोंके साथ अधिक निकट, अधिक जीवित सम्बन्ध हमारी नयी प्राथमिक शिक्षाका यह साधन बहुत शक्तिशाली होनेवाला है। आजकी शिक्षा तो विद्यार्थियों और अुनके माता-पिताके बीचका अन्तर बढ़ाती रहती है। रजिस्टर पर दस्तखत करने और फीस देनेके सिवाय माता-पिताओंको बच्चोंकी स्कूली शिक्षामें कोई दिलचस्पी नहीं होती। स्कूलमें मिलनेवाली शिक्षा पुस्तकीय होनेसे गृहतंत्रके व्यवहारसे दूर ही भागती है — कौटुम्बिक प्रेम टूटता जाता है। वर्ण-व्यवस्थामें रही हुयी परंपरागत खेती व अुद्योगकी श्रृंखलाकी कड़ियाँ पुस्तकीय शिक्षामें खोने और अुलझ जानेसे शुद्ध वर्ण-व्यवस्थाका लोप हो रहा है। परिणामस्वरूप देगकी खेती और ग्रामोद्योग सूखते जा रहे हैं। हमारी शिक्षा अुद्योगमय होगी, अतः गाँवोंके अुद्योगोंके साथ अर्थात् माता-पिताके धन्धेके साथ अुसका सीधा सम्बन्ध होगा। अतः माता-पिताको अुसमें खूब दिलचस्पी होगी।

बुनकी विश्वास हो जायगा कि लडके-लडकी पढ़कर अद्योग-विहीन नहीं होंगे, बल्कि गृह-कार्यमें, घरके धन्वोंमें मदद करेंगे। जिस तरह प्राथमिक शिक्षाको अनिवार्य बनानेका प्रश्न अधिक स्तरल बनेगा। अनिवार्य शिक्षाके पीछेकी ताकत सजा नहीं होगी, माता-पिताका अल्पाहयुक्त सहयोग ही बुनकी सच्ची शक्ति होगी।

“(बु) प्राथमिक शिक्षाके खयालको आप व्यापक बनाना चाहते हैं, यह बहुत योग्य है। गुजरातीकी चार कक्षा तक पढ़े हुअे विद्यार्थी मेरे पास आये हैं। बुनके अनुभव जैसे प्राप्त हो रहे हैं कि चार कक्षाओं तक पढ़ लेनेवाले गाँवोंके विद्यार्थियोंके पूरे प्रश्न पर नये और आतिकारी तरीकेसे विचार किया जाना चाहिये। अनुभव तो यह होता है कि चार कक्षाओंके बाद अंग्रेजीके मोहमे गाँवोंके विद्यार्थी गहरी स्कूलोंकी तरफ आकर्षित होते हैं। वह शिक्षा खर्चीली होनेसे बहुतोंके लिये बुसके दरवाजे बन्द रहते हैं। बुनकी शिक्षा बीचमें ही बन्द हो जाती है। जो बड़ी मुश्किलसे जाते हैं, वे विलायी, परोप-जीवी शिक्षा लेकर अपनेको, माता-पिताको और गाँवके हितोंको बोखा देते हैं। जिस वर्गको यदि गाँवमें अद्योगशाला रखकर पढायें, तो जिसमें माता-पिताका, विद्यार्थीका और गाँवका अपार हित होता है। विद्यार्थियोंको विनीत (मैट्रिक) तकका ज्ञान बहुत थोड़े समयमें चार घण्टे अद्योग और दो घण्टे अध्ययनवाले स्कूलमें बहुत आसानीसे दिया जा सकता है, अना मेरा अनुभव दृढ़ होता-ही जा रहा है।”

दूसरा भाग : वर्धा-शिक्षा-परिषद्

११

राष्ट्रीय शिक्षाशास्त्रियोंसे

['राष्ट्रीय शिक्षा-परिषद्' नामक लेख]

वर्धाका 'मारवाडी विद्यालय', जिसका नाम हाल ही में बदल कर 'नवभारत विद्यालय' कर दिया गया है, अपनी रजत-जयती मनाने जा रहा है। जयतीके साथ-साथ 'हरिजन' में जिस प्रकारकी शिक्षा-योजनाके प्रतिपादनका मैं यत्न कर रहा हूँ, उस पर चर्चा करनेके लिये देशके राष्ट्रीय मनोवृत्तिवाले शिक्षाशास्त्रियोंकी एक परिषद् बुलानेका विचार भी जिस अुत्सवके आयोजकोंको सूझा। परिषद् निमन्त्रित करना ठीक होगा या नहीं, जिस सम्बन्धमें विद्यालयके मंत्री श्री श्रीमन्नारायण अग्रवालने मेरी मलाह मांगी, और यदि मुझे यह विचार पसन्द हो तो उसका अध्यक्ष-पद ग्रहण करनेके लिये भी प्रार्थना की। मुझे दाँतो ही चीजे अच्छी लगी। जिसलिये यह परिषद् वर्धामे आगामी २२ और २३ अक्टूबरको हो रही है। जिसमे केवल वही लोग होंगे, जिन्हे जिसके लिये निमन्त्रित किया जायेगा। अगर कोई जैसे शिक्षाशास्त्री हो, जो जिस परिषद्में आना चाहते हैं, किन्तु जिन्हें निमन्त्रण नहीं मिला है, तो वे मंत्रीको पत्र लिखें और उसमे अपना नाम तथा पता लिखनेके साथ-साथ अभी विगोप जानकारी भी लिखें, जिससे मंत्रीको यह निर्णय करनेमें सुविधा हो कि अुन्हे निमन्त्रण भेजा जा सकता है या नहीं। यहाँ प्रबन्ध तो केवल अुन थोड़ेसे लोगोंके लिये किया गया है, जो अिन विषयमें गहरी दिलचस्पी रखते हैं और मन्त्रणामें प्रत्यक्ष भाग ले सकते हैं।

४९

देखने-दिखानेकी दृष्टिमें तो जिस परिपदमें कुछ भी नहीं होगा प्रेसकोके लिये कोश्री स्थान नहीं होगा। यह तो केवल अके काम काजी बैठक हांगी। अखबारवालोंके लिये कुछ थोड़ेसे टिकट जारी किये जायेंगे। अखबारवालोको मेरी मलाह है कि जिनकी कार्यवाहीके समाचार भेजनेमें सहयोग देनेके खयालने वे अपने अके-दो प्रतिनिधि चुन लें।

जिस कार्यको मैं अत्यन्त नम्रता और सम्पूर्ण श्रद्धाकी भावनासे करना चाहता हूँ। दिलको खुला रखकर कुछ नीखनेके लिये, जहाँ-जहाँ जरूरत होगी, अपने विचारोंमें नगोबन और नुधार करनेके लिये भी मैं तैयार रहूँगा।

परिपदमें जो प्रस्ताव मैं विचारार्थ रखना चाहता हूँ, वे फिलहाल मुझे जिन प्रकार दिखायी देते हैं

१. शिक्षाकी वर्तमान पद्धति किसी भी तरह देशकी आवश्यकताओंकी पूर्ति नहीं कर सकती। बुच्च शिक्षाकी तन्मय शाखाओंमें अंग्रेजी भाषाको माध्यम बना देनेके कारण अनेक बुच्च शिक्षा पावे हुअे मुट्ठीभर लोगो तथा अपह जनसमुदायके बीच अके स्वामी दीवार-सी खडी कर दी है। जिसकी वजहसे जन-साधारण तक छन-छन कर ज्ञानके ज्ञानमें बडी रुकावट पड गयी है। अंग्रेजीको जिस तरह अत्यधिक महत्त्व देनेके कारण शिक्षित लोगों पर जितना अधिक नार पड गया है कि प्रत्यज जीवनके लिये अनेकी मानसिक शक्तियाँ पंगु हो गयी हैं और वे अपने ही देशमें विदेशियोंकी भाँति देगाने बन गये हैं। बुच्चोंके शिक्षणके अभावसे गिनितोंको बुत्पादक कामके चर्चथा अयोग्य बना दिया है और शारीरिक दृष्टिमें भी अनेका बडा नुकसान किया है। प्राथमिक शिक्षा पर आज जो खर्च हो रहा है, वह बिलकुल निरर्थक है। क्योंकि जो कुछ भी सिखाया जाता है, अने पढनेवाले बहुत जल्दी भूल जाते हैं और सहरो तथा गाँवोंकी दृष्टिसे अनेका दो कौडीका भी मूल्य नहीं है। वर्तमान शिक्षा-पद्धतिने जो कुछ भी

लभ होता है, अतः देशका प्रधान करदाता वर्ग तो वंचित ही रहता है। अतः वच्चोके पल्ले तकरीबन कुछ नहीं आता।

२. प्राथमिक शिक्षाका पाठ्यक्रम कम-से-कम सात सालका हो। जिसमें वच्चोको बितना सामान्य ज्ञान मिल जाना चाहिये, जो अन्धे साधारणतया मैट्रिक तककी शिक्षामें मिल जाता है। जिसमें अंग्रेजी नहीं रहेगी। अतःकी जगह कोसी अेक अच्छा-सा बुद्योग सिखाया जायगा।

३. जिसलिये कि लडको और लडकियोंका सर्वतोमुखी विकास हो, सारी शिक्षा जहाँ तक हो सके अैसे अुद्योग द्वारा दी जानी चाहिये, जिसमें कुछ अुपार्जन भी हो सके। जिसे यो भी कह सकते हैं कि जिस अुद्योग द्वारा दो हेतु सिद्ध होने चाहिये—अेक तो विद्यार्थी अुस अुद्योगकी अुपज और अपने परिश्रमसे अपनी पढाओका खर्च अदा कर सके, और साथ ही स्कूलमें सीखे हुअे जिस अुद्योग द्वारा अुस लडके या लडकीमें अुन सभी गुणो और शक्तियोंका पूर्ण विकास हो जाय, जो अेक पुरुष या स्त्रीके लिये आवश्यक है।

पाठशालाकी जमीन, जिनारते और दूसरे जरुरी सामानका खर्च विद्यार्थीके परिश्रमसे निकालनेकी कल्पना नहीं की गयी है।

कपास, रेशम और अूनकी विनाओसे लेकर सफाओ, (कपासकी) लुढाओ, पिंजाओ, कताओ, रगाओ, मांड लगाना, ताना लगाना, दोसूती (दुवटा) करना, डिजाअिन (नमूने) बनाना तथा बुनाओ आदि तमाम क्रियाये और कसीदा काढना, सिलाओ, कागज बनाना, कागज काटना, जिल्दसाजी, अलमारी, फरनीचर वगैरा तैयार करना, खिलौने बनाना, गुड बनाना, मित्यादि अैसे निश्चित अुद्योग हैं, जिन्हें आसानीसे सीखा जा सकता है और जिनके चलानेके लिये बहुत-बडी पूंजीकी भी जरुरत नहीं होती।

जिस प्रकारकी प्राथमिक शिक्षासे लडके और लडकियाँ बित लायक हो जायँ कि वे अपनी रोजी कमा सकें। जिसके लिये यह जरुरी है कि जिन धन्धोकी शिक्षा अुन्हे दी गयी हो, अुनने राज्य

अनुहे काम दे। अथवा राज्य द्वारा मुकरर की गयी कीमतो पर सरकार अनुकी बनायी हुयी चीजोको खरीद लिया करे।

४ अुच्च शिक्षाकी खानगी प्रयत्नो तथा राष्ट्रकी आवश्यकता पर छोड दिया जाय। बिसमें कयी प्रकारके अुद्योग और अनुसे सम्बन्ध रखनेवाली कलाओ, साहित्य, संगीत, चित्रकला, शास्त्रादि शामिल समझे जायँ।

सरकारी विश्वविद्यालय केवल परीक्षा लेनेवाली सस्थाओ रहे और वे अपना खर्च परीक्षा-शुल्कसे ही निकाल लिया करे।

विश्वविद्यालय शिक्षाके समस्त क्षेत्रका ध्यान रखें और अुसके विविध विभागोके लिओ पाठ्यक्रम तैयार करे और अुसे स्वीकृति दें। किसी भी विषयकी शिक्षा देनेवाला अेक भी स्कूल तब तक नही खुलेगा, जब तक कि वह अिसके लिओ अपने क्षेत्रसे सम्बन्ध रखनेवाले विश्व-विद्यालयसे मजूरी हासिल नही कर लेगा। विश्वविद्यालय खोलनेकी अिजाजत (चार्टर) सुयोग्य और प्राणाणिक किमी भी अैसी सस्थाको अुदारतापूर्वक दी जा सकती है, अिसके सदस्योंकी योग्यता और प्रामाणिकताके विषयमें कोयी सन्देह न हो। हाँ, यह सबको बना दिया जाय कि राज्य पर अुसका जरा भी खर्च नही पडना चाहिये, सिवा अिसके कि वह केवल अेक केन्द्रीय शिक्षा-विभागका खर्च अुठायेगा। राज्यकी विशेष आवश्यकताओकी पूर्तिके लिओ किमी सास प्रकारकी शिक्षा-सस्था या विद्यालय खोलनेकी जरूरत अुसे पड जाय, तो यह योजना राज्यको अिस जिम्मेदारीसे मुक्त नही कर रही है।

अगर यह सारी योजना स्वीकृत हां जाय, तो मेरा यह दावा है कि हमारी अेक सद्ने बडी समस्या — राज्यके युवकोको, अपने भावी निर्माताओको तैयार करनेकी — हल हो जायगी।

वर्तमान शिक्षा-पद्धतिवालोंसे

['विचार नहीं, प्रत्यक्ष कार्य' नामक लेख]

डॉ० जी० अंस० अरडेलने मुझे पहलेसे अपने एक लेखकी अप्रकाशित प्रति भेज दी है, जो बुन्होने 'ओरियट' नामक सचित्र साप्ताहिकमें छपनेके लिये भेजा है। और साथमें लिखा है

“आपने यह विच्छा जाहिर की है कि जिस देशमें शिक्षा, जो आज तक कृत्रिम रही है, अब वास्तविक हो जाय। एक अैसे आदमीकी हैसियतसे कि जिसने तीससे भी अधिक साल तक शिक्षाके क्षेत्रमें प्रत्यक्ष कार्य किया है, मैं आपको अपना लेख भेजता हूँ, जो 'ओरियट' नामक सचित्र साप्ताहिकमें छपने जा रहा है। संभव है जिसमें — कुछ अचोमें — आपके ही विचारोका समर्थन हो। मैं भी जरूर यह अनुभव करता हूँ कि हमें शिक्षाकी एक राष्ट्रीय योजना बनानी चाहिये, जिसे प्रत्येक मंत्री अपने प्रातमें मफल करनेका अपनी शक्ति भर प्रयत्न करे। जिस दिशामें स्वतंत्र रूपसे काफी प्रयत्न किये गये हैं। पर मुझे अैसा लगता है कि अब तो शिक्षाके बुन महान सिद्धान्तो पर जल्दीसे जल्दी अमल शुरू हो जाना चाहिये, जिससे सरकार और जनता दोनो मिलकर समान दिलचस्पीके साथ जिस यत्नमें जुट पड़े।”

जिस लेखसे मैं सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण और कामके अवतरण नीचे दे रहा हूँ। जिस यत्नको हम किस प्रकार शुरू करे, यह बताकर डॉ० अरडेल लिखते हैं

“राष्ट्रीय शिक्षाके मूलभूत सिद्धान्त क्या हैं, यह प्रतिपादन करनेके लिये यहाँ मेरे पास स्थान नहीं है। पर हाँ, अितना तो कह देना आवश्यक है कि जहाँ तक लड़के और लड़कियोंकी स्कूली शिक्षासे सम्बन्ध है, मैं आशा करता हूँ कि हम ‘स्कूल’ और ‘कॉलेज’ की शिक्षाका वेवकूफीभरा भेद मिटा देंगे। गुरुत्से आखिर तक अेक ही अुद्देश्य रहेगा— प्रत्यक्ष कार्य, ब्योक्ति विचारोको चाहे कितनी ही अुत्तेजना दीजिये, जब तक हम कार्य-प्रवृत्त नहीं होते, वे निरर्थक ही हैं। यही बात हृदयके घर्मोके विषयमें भी कही जा सकती है। पर अधिकाग आपुनिक शिक्षा-प्रणालियोंमें अिनकी बडी अुपेक्षा की जा रही है, जो अेक भयकर बात है। आज हिन्दुस्तानके युवकोको कार्यकर्ता बननेकी जरूरत है— अैसे कार्यकर्ता, अिनके चरित्रका शिक्षा द्वारा अिस प्रकार निर्माण हुआ हो कि वह स्वभावतः कार्यमें, वास्तविक योग्यतामें, सेवामें परिणत हो जाय। हिन्दुस्तानको अैसे जवान नागरिकोकी जरूरत है, जो परिस्थिति और परम्परानुसार अिस किसी क्षेत्रमें जायें वहाँ कुछ अच्छा करके दिखा सकें। पाठ्यक्रमके प्रत्येक विषयका अुद्देश्य यही है कि बच्चोका जीवन ठीक वैसे ही हो, जैसा कि अुने होना चाहिये। प्रत्येक विषय जीवनके घर्मको, विवि और अुद्देश्यको खोलकर रख दे। कठोर वास्तविकताओका मुकाबला करते नमय शिक्षक अिन बातोको कभी न भूले। वे यह स्मरण रखें कि हमारा, बुद्धिअेत्र वास्तविकताओसे नहीं, रुडिगत विश्वासोसे भरा हुआ है। नर आर्यर अेडिगटनने विलकुल ठीक कहा था कि विज्ञानने यह अेक जवरदस्त सेवा की है कि अुसने हमें सन्देहमें सत्यताकी ओर प्रयत्न करना सिखाया है। अिसलिये बच्चोको पढाया भी अिन तरह जाय कि वे सच-सच बातें अच्छी तरह जान लें और दूनरी तमाम बातोंके थलावा वे अुनके चरित्र-निर्माणमें

नहायत हों, क्योंकि राष्ट्र और व्यक्ति दोनोंके लिये यही तो सबसे अधिक गुरदित आधारभूत वस्तु है।

“जब अंक बार चरित्र निर्माण हुआ कि कुछ करनेकी भिच्छा प्रबल होगी ही, दोनों ही क्षेत्रोंमें — स्वावलम्बनमें और स्वार्थ-त्यागमें। जमीन अर्थात् भूमाताकी ओर हमारी अधिकसे अधिक बढ़नेकी भिच्छा होगी। खेती द्वारा हम अन्नकी पूजा करना चाहेंगे। हमारी जरूरते कम होंगी और भिच्छायें धर्मानुकूल। मैं तो मानता हूँ कि भूमाताका कोई भी बालक असा न हो, जो किसी न किसी रूपमें अपनी आजीविका खुद अमीने प्राप्त न कर सकता हो। और हर प्रकारकी शिक्षामें, ग्रहणकी शिक्षा-मस्याओंमें भी, मैं चाहूँगा कि किसी न किसी अक्षम अंगसे हमारा सम्पर्क बना रहे।

“आज अन्न सब रुढियोंसे हमें अकेवारगी अपना नाता तोड़ देना चाहिये, जिन्होंने शिक्षाको अतना अधिक निरर्थक बना दिया है। राष्ट्रीय मन्त्रि-मण्डलीकी सरक्षकतामें हमें सच्ची शिक्षाकी पद्धति शुरू कर देनी चाहिये। सच्ची शिक्षाके मानी यह नहीं है कि हम बच्चोंके दिमागमें कोरी जानकारी ठूस दे। हम तो शिक्षा-सम्बन्धी अन्न रुढियों और ढकोसलोके अन्दर घुरी तरह कौद कर दिये गये हैं, जो अब पुराने और बेकार साबित हो चुके हैं। इसलिये मैं गांधीजी द्वारा प्रति-पादित स्वावलम्बी शिक्षा-पद्धतिका हृदयसे स्वागत करता हूँ। हाँ, अभी मुझे इसका पूरा निश्चय तो नहीं हुआ है कि वे कितनी दूर तक हमें ले जाना चाहते हैं और हम दरअसल जा सकेंगे या नहीं। पर मैं अन्नकी जिस तजवीजसे पूरी तरह सहमत हूँ कि सात वर्षकी पढाईके बाद हर विद्यार्थीको एक स्वाश्रयी नागरिक बनकर ससारमें प्रवेश करना चाहिये। मुझे खुद यही लगता है कि प्रत्येक मनुष्यको कुछ हद तक शिक्षा द्वारा अपनी

नृजन-गण्डिका मान हो जाना चाहिये। क्योंकि वह भी तो अमु परनात्मिकी अके विज्ञानोन्मुख बला है, और अस्मिन्नि अमुमें परम श्रीश्वरीय गृपका, नृजन-गण्डिका होना बहरी है। मनुष्यके अिस अेष्ठ धर्मको यदि सिखा जायत नहीं कर मन्त्री तो वह आखिर है किन मसरफकी? तउ तो वह सिखा नहीं, किनी न किनी प्रकारसे मन्त्रिषमें जातकारी रूम देना है।

'मन्त्रिषकी नीति हमारे हाथों से तो एक कीशका निवास है। लम्बे बरनेसे निष्क्रिय बुद्धिको अीश मन्त्रकर हम अूमकी पूजा करते बाये हैं। अुमने हन पर दः अुमन किया है। वह हमारी ध्यानिका और म्यानिकी रही है हमारी नवीन मनान-रचनामें बुद्धि हमारे अनेक देवकोमें से अंक होती। और जो जो बात हमारे जीवनको सरल और नादा बनानेवाली है, प्राकृतिक सुन्दरताको और हमें अीश्वर से जागे, अपने हाथने काम करके अुमके सहारे अपनी अजीविका बनानेमें महायक हो अैसे हर तरहके कामको — चाहे वह अलकारका हो, अिन्पकारका हो या अिनात्मिक हो — हमें गौरवन्वित करता सीखना चाहिये।

मैं जानता हूँ कि अगर मुझे अिस तरहकी शिक्षा मिली होती, तो मेरा जीवन अविश्व मुनी और मन्त्र होता।"

अउ तउ मैं जो बात माधारण लादमीकी हैमियनने माधारण पाठको अिसे बहता आज है, वही बात डॉ० अरदहन अेक अिसा-शास्त्रीकी हैमियनने अिज्ञा-आखिरांकि अिसे तथा अुत अींकि अिसे कहते हैं कि अिनके मुमुदं देगळे अुदकालि निनांगला काम है। स्वावलम्बी अिज्ञाकी अल्पता अुमने अिन माधारणोंसे अे कर रहे हैं, अुमने मुझे अन्वय नहीं हुआ। पर मेरे अिसे तो वही मन्त्र महत्त्वपूर्ण ममन्त्र है। मुझे अम्नांम तो अिस बातका हो रहा है कि अिस्त्रिनि-अय वह अीज मुझे अात्र अिननी देगीसे काम-साग नज

आयी है, जिसे कि मैं गत चालीस वर्षसे काँचके बीचसे अस्पष्ट-सा देख रहा था।

मन् १९२० मे मैंने वर्तमान शिक्षा-पद्धतिकी काफी कड़े शब्दोंमें निन्दा की थी। और आज चाहे कितनी ही थोड़े अशोमे क्यों न हो, देशके सात प्रांतोंने अुन मन्त्रियों द्वारा अुस पर असर डालनेका मुझे मौका मिला है, जिन्होंने मेरे साथ सार्वजनिक कार्य किया है और देशकी स्वाधीनताके अुस महान युद्धमे मेरे साथ तरह-तरहकी मुसीबते अुठायी है। आज मुझे भीतरसे अेक अैसी दुर्दमनीय प्रेरणा हो रही है कि मैं अपने अिस आरोपको सिद्ध करके दिखा दूँ कि वर्तमान शिक्षा-पद्धति नीचेसे लेकर अुपर तक मूलत विलकुल गलत है। और 'हरिजन' मे जिस बातको प्रगट करनेका अव तक प्रयास करता रहा हूँ और फिर भी ठीक-ठीक प्रगट नहीं कर सका, वही अव मेरे सामने सूर्यवत् स्पष्ट हो गयी है और प्रतिदिन अुसकी सचायी मुझ पर अधिकाधिक स्पष्ट होती जा रही है। अिसलिये मैं देशके शिक्षाशास्त्रियोंसे यह कहनेका साहस कर रहा हूँ कि अिनका अिसमे किसी प्रकारका स्वार्थ नहीं है और जिन्होंने अपने हृदयको नये विचारोंको पानेके लिये विलकुल खुला रखा है, वे मेरे वताये अिन दो प्रश्नोंका अध्ययन करे और अिसमे वर्तमान शिक्षाके कारण मजबूत बनी हुयी कल्पनाको अपनी विचारशक्तिका बाधक न होने दें। मैं जो कुछ लिख रहा हूँ और कह रहा हूँ, अुस पर विचार करते समय वे यह न सोचे कि मैं शास्त्रीय और कट्टर दृष्टिसे शिक्षाके विषयमें विलकुल अनभिज्ञ हूँ। कहा जाता है कि ज्ञान अकसर वच्चोंके मुँहसे प्रकट होता है। 'बालादपि सुभाषितम् ग्राह्यम्' अिसमे कविकी अत्युक्ति हो सकती है, पर अिसमें कोयी गक नहीं कि वह कभी-कभी दरअसल वच्चोंके मुँहसे प्रगट होता है। विशेषज्ञ अुसे सुधारकर वादमें वैज्ञानिक रूप दे देते हैं। अिसलिये मैं चाहता हूँ कि मेरे प्रश्नों पर निरपेक्ष और केवल सारासारकी दृष्टिसे विचार

हैं। यो तो पहले भी मैं बिन सवालको पेश कर चुका हूँ, पर यह लेख लिखते समय जिन शब्दोंमें वे मुझे सूझ रहे हैं, मैं फिर अन्हें पाठकोंके सामने पेश कर देता हूँ

(१) सात सालमें प्राथमिक शिक्षाके अन्त सब विषयोंकी पढाई हो, जो आज मैट्रिक तक होती है। पर अन्तमें नें अंग्रेजीको हटाकर अन्तके स्थान पर किसी अद्योगकी शिक्षा बच्चोंको अिस तरह दी जाय कि अिससे ज्ञानकी तमाम शाखाओंमें अन्तका आवश्यक मानसिक विकास हो जाय। आज प्राथमिक, माध्यमिक और हाजीस्कूलकी शिक्षाके नाम पर जो पढाई होती है, अन्तकी जगह पर अिस पढाईको ले ले।

(२) यह पढाई स्वावलम्बी हो सकती है और यह अैसी होनी ही चाहिये। वास्तवमें, स्वावलम्बन ही अन्तकी सच्चाईकी सच्ची कमीटी है।

हरिजनसेवक, २-१०-'३७

१३

अद्योग द्वारा शिक्षा

[अिधर कबी वातचीतोंके सिलसिलेमें गांधीजीने विस्तारपूर्वक नमझाया कि शिक्षाकी यह नवी योजना अन्तके दिमागने किस तरह आयी और अद्योग तथा शिक्षाका मेल, जो कि अन्तकी दृष्टिमें है, किस प्रकार हो सकता है। वह अन्तके ही शब्दोंमें यहाँ देना हूँ।

— महादेव देसाजी]

अेक नवी पद्धतिकी आवश्यकता मैं बहुत दिनोंमें नहमूस कर रहा था, क्योंकि मैं जानता था कि आधुनिक शिक्षा-पद्धति निष्फल साबित हुयी है; और वह पता मुझे जब मैं दक्षिण अफ्रीकाने लाँटा, तब जो दृष्टाने विद्यार्थी मुझमें मिलने आते थे, अन्तके द्वारा लगा।

असलिये मैंने आश्रममें दस्तकारियोंकी शिक्षा दाखिल करके असका आरंभ किया। निस्सन्देह, दस्तकारियोंके शिक्षण पर बहुत ज्यादा जोर दिया गया। नतीजा यह हुआ कि औद्योगिक शिक्षासे बच्चे जल्दी ही दिक आ गये और अन्होंने यह खयाल किया कि हम साहित्यिक शिक्षासे वचित किये जा रहे हैं। अउनकी यह गलती थी, क्योंकि वहा अन्होंने थोडासा भी जो, ज्ञान प्राप्त किया था, वह अुससे तो कही ज्यादा था, जो कि साधारणतया बच्चे पुराने ढर्रे पर चलनेवाले स्कूलोमे प्राप्त करते हैं। पर अस चीजने मुझे विचारमें डाल दिया और मैं अस नतीजे पर पहुँचा कि औद्योगिक शिक्षाके साथ साहित्यिक शिक्षा नही, बल्कि औद्योगिक शिक्षाके द्वारा साहित्यिक शिक्षा देनी चाहिये। असा करने पर वे औद्योगिक तालीमको अेक जलील मशवकत नही समझेंगे और साहित्यिक शिक्षामें अेक नया सन्तोष और नयी अुपयोगिता आ जायगी। कायेसने जब पद ग्रहण किया, तब मुझे लगा कि अपने विचारको राष्ट्रके सामने रखना चाहिये और मुझे खुशी है कि कभी जगह अिनका स्वागत हुआ है।

हमने यह निश्चय लिया कि अोजीको कोर्ससे निकाल देना चाहिये, क्योंकि हम जानते थे कि बच्चोका अधिभाग समय अग्रजीके शब्दो और वाक्योके रटनेमें चला जाता है और फिर भी वे जो नीखने हैं, अुसे अपनी भाषामें जाहिर नही कर सकने, और अध्यापक अुन्हें जो सिखाता है, अुने ठीक-ठीक समझ नहीं सकते। अुलटे, अपनी मातृ-भाषाको महज अुपेक्षाके कारण भूल जाते हैं। मुझे असा प्रतीत हुआ कि औद्योगिक तालीमके द्वारा शिक्षा दी जाय, तनी अिन दोनी बुराभियोसे बच सकते हैं।

मुझे निक्षण देनेका आरंभ करना हो, तो मैं अिन तरह चल्ता। दिन दिन बच्चे मेरे पास आयेगे, तबने पहले मैं यह देखूंग। कि अुमता अिभाग वहाँ तक विामिन हुआ है। वे पठना-लिखना और

थोडा बहुत भूगोल जानते हैं या नहीं। और तब मैं तकली दाखिल करके अउनकी जानकारीको बढ़ानेकी कोशिश करूँगा।

आप शायद मुझमें पूछेंगे कि अितनी तमाम दस्तकारियोंमें मैंने तकलीको ही क्यों चुना? क्योंकि सर्व प्रथम हमने जिन दस्तकारियोंकी शोध की थी, अउनमें अेक तकलीकी भी दस्तकारी है, और वह युगमें चली आ रही है। प्राचीन कालमें हमारा तमाम कपडा तकलीके सूतका ही बनता था। चरखा तो पीछे आया। फिर बढ़ियासे बढ़िया अकका सूत चरखे पर कत भी नहीं सकता, अिसलिये हमें पुन तकलीकी ही शरण लेनी पड़ी। तकलीमें मनुष्यकी अन्वेषणात्मक बुद्धिको अुस अूँचाबी तक पहुँचा दिया, अिस अूँचाबी तक वह पहले कभी नहीं पहुँची थी। अिसमें अँगुलियोंकी कार्य-कुशलताका सर्वश्रेष्ठ अुपयोग हुआ। पर चूँकि तकली अैसे कारीगरो तक ही सीमित रही, अिन्होंने कभी शिक्षा पायी ही नहीं, अिसलिये अुसका अुपयोग लुप्त-मा हो गया। अगर हम तकलीका अुद्धार करके अुसे आज फिर अुसी गौरवपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित देखना चाहते हैं, अगर हमें अपने ग्राम-जीवनका पुनरुद्धार और पुनर्निर्माण करना है, तो हमें वच्चोकी शिक्षाका श्रीगणेश तकलीसे ही करना चाहिये।

अिसलिये दूसरा पाठ यह चलेगा लउकोको मैं अब यह सिखाऊँगा कि हमारे प्रतिदिनके जीवनमें तकलीको क्या स्थान प्राप्त था। अिसके बाद मैं अुन्हे अुसका थोडासा अितिहास बताऊँगा और यह भी बताऊँगा कि अुसका पतन कैसे हुआ। फिर भारतवर्षके अितिहासके सक्षिप्त क्रम पर आऊँगा — आरभ अीस्ट अिडिया कम्पनीसे या अुससे भी पहले मुसलमान-कालसे करूँगा, अुन्हे तफसीलवार यह बताऊँगा कि अीस्ट अिडिया कम्पनीकी तिजारतने किस तरह हमारे देशका शोषण किया और हमारी अिस मुख्य दस्तकारीका दम किस तरह अिरादतन घोटा गया और अन्तमें अिसका विलकुल खातमा

कर डाला गया। अंगके बाद तफलीके यत्रभास्त्रका, अुराकी बनावटका नक्षिप्त कोनं चलेगा। गुन्-गुम्में मिट्टीकी या आटेकी छोटी-मी गोली चुत्ताकर और अुमने ठीक मध्यमें धानकी गीम उलकर तफली बनायी गयी होगी। विहार और बंगालके कुछ भागोंमें अत्र भी विन किम्पकी तवली देगनेमें आती है। अिमके बाद गिट्टीकी गोलीकी जगह आटकी चकत्तीने ले ली। और अब आज आटकी चकत्तीकी जगह लोहे या फीलाद और पीनरकी चकत्तीने और धानकी नीलकी जगह फौगदके तारने ले ली है। यहां भी हम नामके काफी प्रश्न नोन नाते हैं—जैसे, चकत्ती और तारका नाप अितना ही क्यों रखा गया है? विनने ज्यादा या कम क्यों नहीं? अिमके बाद कपास पर थोड़ेमें व्याख्यान दिये जायेंगे—जैसे कपास खागकर किस तरहकी जमीनमें पैदा होती है, अुमकी कितनी किस्में हैं, फिन देयां और हिन्दुस्तानके फिन प्रांतोंमें वह अुगायी जाती है, वगैरा वगैरा। कपासकी खेतीके बारेमें और अुसके लिये कीनमी जमीन सवमें अुपयुक्त हो सवती है, अिस विषयमें भी कुछ ज्ञान दिया जा सकता है। अिसने हम थोज खेती-गाडीके बारेमें भी जान लेंगे।

आप देखेंगे कि अपने विद्यार्थियोंको विन प्रकारका शिक्षण देनेके पहले शिक्षकको खुद काफी परिपक्व ज्ञान प्राप्त करना होगा। कताअीके तारकी विनती गजोंमें निकालना, सूतका नवर मालूम करना, लच्छियां बनाना, बुनकरके लिम् अुसे तैयार करना, कपडेकी अमुक बनावटमें कितने गज सूत लगेगा, आदि वातो द्वारा पूरा प्रारम्भिक गणित सिखाया जा सकता है। कपास अुगानेसे लेकर बुनायी—कपास चुनना, अोटना, धुनना, कातना, मांडी लगाना, बुनना—तककी तमाम क्रियाओंका अपना-अपना सन्धन्वित यत्रशास्त्र, अितिहास और गणित है।

बिसमे मुख्य कल्पना यह है कि बच्चोको जो भी दस्तकारी सिखायी जाय, अुसके द्वारा अुन्हे पूरी तरहसे शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक शिक्षा दी जाय। अुद्योगकी तमाम क्रियाओके द्वारा आपको बच्चोके अन्दर जो भी अच्छी चीज है, अुस सबको विकसित करना है। और आप इतिहास, भूगोल और गणितके जो पाठ सिखायेंगे, वे सब अुस अुद्योगसे सम्बन्धित होंगे।

अगर बिस प्रकारकी शिक्षा बच्चोको दी जाय तो परिणाम यह होगा कि वह शिक्षा स्वावलम्बी ही जायगी। लेकिन सफलताकी कसौटी अुसका स्वाश्रयी रूप नहीं है, बल्कि यह देखकर सफलताका अन्दाज लगाना होगा कि वैज्ञानिक रीतिसे अुद्योगकी शिक्षाके द्वारा मनुष्यत्वका पूर्ण विकास हुआ है या नहीं। सचमुच मैं जैसे अध्यापकको कभी नहीं रखूंगा, जो चाहे जिन परिस्थितियोंमे शिक्षाको स्वाश्रयी बना देनेका वचन देगा। शिक्षाका स्वावलम्बी बनना बिस बातका न्यायसिद्ध परिणाम होगा कि विद्यार्थीने अपनी प्रत्येक कार्यशक्तिका ठीक-ठीक अुपयोग करना सीख लिया है। अगर अेक लडका रोज तीन घंटे काम करके किसी दस्तकारीसे निश्चयपूर्वक अपनी जीविकाके लायक पैसा कमा लेता है, तो जो अपनी विकसित बुद्धि और आत्मा लगाकर अुस कामको करेगा, वह कितना अधिक कमा लेगा ?

हरिजनसेवक, ११-६-'३८

कुछ कीमती मत

['बुद्योग द्वारा शिक्षणको दो आधार' नामक लेख]

१

यद्यपि विनोवा और मैं सिर्फ पाँच मीलके ही फासले पर रहते हैं, फिर भी काममें सलग्न रहनेसे और दोनोकी तबीयत कुछ शिथिल होनेके कारण हम अके-दूसरेसे शायद ही मिलते हैं। जिसलिये कुछेक कामोको हम चिट्ठी-पत्री द्वारा निपटा लेते हैं।

“आपके शिक्षा विषयक ताजे विचार मुझे बहुत पसन्द आये हैं। मेरे विचार भी बिसी दिशाकी ओर जाते हैं। 'बुद्योग + शिक्षण' यह द्वैती भाषा मुझे पसन्द आती ही नहीं। मैं तो 'बुद्योग = शिक्षण' असा अद्वैती समीकरण मानता हूँ। शिक्षणके स्वावलम्बी हो सकनेमें मुझे तनिक भी शक नहीं। मुझे असा लगता है कि जिस शिक्षणमें स्वावलम्बन नहीं, उसे गाँवोकी दृष्टिसे 'शिक्षण' की सजा ही नहीं दी जा सकती। आपके विचारोके साथ मैं जिस विषयमें पूर्णतया सहमत हूँ, अतः जिस अवधमें कुछ खास लिखनेकी विच्छा नहीं हुआ। हाँ, उस पर प्रयोग करनेकी विच्छा होती है। थोडा किया भी है, और अीश्वरकी मरजी होगी तो जिस विषयका निर्णय लानेकी भी आशा रखता हूँ।”

अुक्त विचार मैंने अुनके अके अैसे ही पत्रसे अुद्धृत किया है। जिस विचारको मैं बहुत महत्त्व देता हूँ, क्योंकि जिस विषयमें जितने प्रयोग विनोवाने किये हैं, अुतने मैंने या मेरे अन्य साथियोमे से किसी औरने मेरी समझमें नहीं किये। तकलीकी गतिमें जो क्रान्तिकारी वृद्धि

हुयी है, उसके मूलमें विनोवाकी प्रेरणा और अनुका अपार धर्म है। अके वडी सत्याका संचालन करते हुअे भी अन्होंने बाठ-आठ, दन-दस घण्टे चरखा और तकली चलाजी है। और शिक्षणमें जिस बुद्योगको अन्होंने पहल्लेने ही महत्त्वका स्थान दे रखा है। बिललिये जिसे नं अपनी मौलिक बोध मान रहा है, अर्थात् बुद्योग द्वारा स्वावलम्बी शिक्षण, उसके साथ विनोवा स्वभावतः पूर्णतया सहमत है, यह मेरे लिखे तो निश्चय ही बहुत अुत्साहजनक बात है। और जो विनोवाको जानते है, वे भी अिनसे अपनी श्रद्धाको दृढ़ करेगे या अुनसे श्रद्धाका अभाव हो तो अुसे अपने हृदयमें लायेंगे, अिन आशासे अुनके मतको मेने यहाँ अुद्धृत किया है।

२

श्री विनोवाका समर्थन मेरे लिखे कोयी आश्चर्यकी बात नहीं है। और 'हरिजनसेवक' के पाठकोके लिखे भी यह कोयी नयी-सी बात मालूम नहीं पड़ेगी। पर यदि अुनका समर्थन न मिले तो नुझे पछतावा होना चाहिये। अपने पुरानेमे पुराने साथियोंको जो बात नं नहीं समझा सकता, अुसे जनताको समझानेकी हिम्मत वाँधूं, यह मेरी मूर्खता ही समझी जानगी; या धृष्टतामें तो मेरे अुस प्रवासकी गिनती होगी ही। मगर श्री नमू सुवेदारका निम्न लिखित पत्र जब मिला, तो अुससे मुझे अवश्य आनन्द और आश्चर्य हुआ। शिक्षा, महानियेष आदिके सञ्चयमे मेरे जो विचार है, अुनके विपपने मेरा अिनके साथ पर-व्यवहार चल रहा है, अिनके परिणाम-स्वरूप निम्न लिखित पत्र आया है। अिने देखकर पाठकोको प्रनन्ता होगी। अुन्होंने अिन पत्रके साथ अग्रेजीमें कुछ तूचनाओं भी भेजी थीं, जिन्हें मैं 'हरिजन' में प्रकाशित कर चुका हूँ।

“शिक्षाका भार विद्यार्थी अिनने अशो नक अुठावें और अुनके भविष्यमें सुवार होकर शरीरको किस प्रकार फौरन

व्यायाम मिले, तथा बुद्योगके कार्यमें मिलनेवाले अनुशासन वर्गोंसे उनका मानसिक विकास किस तरह हो, यह विचार में कर ही रहा था कि खबर मिली कि आपने शिक्षा-परिषद्की अध्यक्षता स्वीकार कर ली है। जिसलिये, यह लगा कि जिस विषय पर तैयार किये हुये अपने नोट आपके पास तुरन्त भेज दू।

“गृह-बुद्योगकी योजनाओं और शाला-बुद्योगकी योजनाओंमें यो तो कुछ भी फर्क नहीं। सिवा जिसके कि शाला-बुद्योगको कच्चा माल मिलना ही चाहिये, और गृह-बुद्योगके लिये भी असा हो तो अच्छा, पर हमेशा यह हो नहीं सकता।

“सब किस्मके सचि ('मोल्ड') और हाथके यंत्र बनानेवाली सस्था शायद ही सरकार खड़ी कर सके, क्योंकि हाथ सिकोडकर पैसा खर्च करनेकी नीति अभी कभी साल तक चलेगी। शायद जेलोका अपुयोग जिसमें हो जाय।

“सामान्य योजना बनाकर हरके शहर और जिलेमें भेजनी चाहिये, और यह सब व्यौरा प्राप्त करना चाहिये कि वहाँ क्या-क्या सुविधाएँ हैं और कौन-कौनसा कच्चा माल आसानीसे बिलकुल मामूली कीमतमें मिलता है। शहरोंमें तो बहुत सुविधा मिलेगी। पर गाँवोंमें क्या हो सकता है, जिस पर मेरी अपेक्षा अधिक जानकारी रखनेवाले व्यक्ति विचार कर सकेंगे।

“जिस गाँवमें कोई पाठशाला वर्गों नहीं है, वहाँ तो यह बड़ी आसान बात है कि पहलेसे ही किसी जैसे व्यक्तिको वहाँ नियुक्त कर दिया जाय, जो खुद भी काम करे और दूसरोंसे भी करा सके। बालकोको पढावे और साथ ही उनसे काम भी करावे। दोनों चीजे साथ-साथ चल सके तो बड़ा ही अच्छा हो।

“आपने जब पहले-पहल कहा, तब यह चीज बहुत मश्किल मालूम हुयी। उस पर जब थोड़ा विचार किया तो

बुद्योग-हूनर, बेकारी और शिक्षा बिना तीन बड़े-बड़े प्रेज्जोन्ग निर्णय सगठित रूपमें किस प्रकार किया जाय यह दिखाई देने लगा। गत १८ वीं तारीखके 'हरिजन' में 'अेक अब्यापक' का लेख पढनेके बाद मुझे लगता है कि शिक्षामें भी कुछ 'वेस्टेड बिन्टरेस्ट' (स्थापित स्वार्थ) जैसी बात है, और जैसा कि आप कहते हैं, वे नव पहलेसे बाँध लिये गये गलत विचार हैं। ज्ञानेश्वर महाराज कहते हैं कि तोता छड पर बैठ जाता है और खुद अुसे पकड लेता है, और फिर कहता है मैं बधनमें पड गया हूँ।

“गरीब देशमें शिक्षा और बुद्योगको अलग-अलग रखना पुना ही नहीं सकता। थोड़े कपडेमें अरीर ढँकना रहा, बिनालिअे जरा अधिक कपटका मार्ग अपनाना चाहिये। विदेशी राज्यने यह कपट किया नहीं। 'पैसा कम है तो शिक्षा थोड़ी दो', अैसा विदेशी ही कह सकते हैं। कांग्रेसके राज्यमें जिससे जो बोझा अुठ सके, वह अुने अुठावे। विद्यार्थी कितना बोझा अुठा सकते हैं, बिसकी अच्छी छान-चीन की जाय तो मालूम होगा कि अगर व्यवस्था ठीक हो, तो शिक्षाके खर्चमें वे बहुत अच्छा हिस्सा दे सकते हैं, बल्कि बड़े होकर रोजीके लायक खुद कोअी बुद्योग भी सीख सकते हैं।”

हरिजननेवक, १६-१०-'३७

३

['अेक अब्यापक द्वारा समर्थन' नामक लेख]

“बालकको कोई भी अूपयोगी हस्त-अुद्योग आश्रयीय और सस्कारी तरीकेने सिखाना और अुमकी शिक्षाका प्रारम्भ हो तभीमे अुसे कुछ चीज पैदा करना सिखाना—अपके बिना मुझावके नाय मैं महमन हूँ। अितना ही नहीं, पर जिन्का

आग्रहपूर्वक समर्थन भी करता हूँ। जिसमें शक नहीं कि यह अनेक क्रान्तिकारी सुझाव हैं, पर मैं सौ फीसदी जिससे सहमत हूँ। नीति, सस्कार और आर्थिक लाभकी दृष्टिसे व्यक्तिके लिये तथा राष्ट्रके लिये जिसकी अपार कीमत है। जिससे बालकको शरीर-श्रमका गौरव समझमें आयेगा, अतना ही नहीं, बल्कि अस्में स्वाश्रयकी भावना पैदा होगी, और जीवनमें सर्जनका योग्य स्थान क्या है, यह अस्से बराबर समझमें आवेगा। बुद्धि, शरीर, नीति और बुद्धोग, जिन मामलोमें बालककी आवश्यकताओंको पूरा करना और अस्की शक्तिका विकास करना हमारा ध्येय होना चाहिये। बुद्धोगकी शिक्षामें बालकको उत्पादनकी सब क्रियाओंके सामान्य सिद्धान्त सिखाये जायेंगे और अस्के साथ बालक या जवानको सब बुद्धोगीके सादेसे सादे औजार बिस्तेमाल करनेकी व्यावहारिक शिक्षा मिलेगी। हमारा आदर्श यह होना चाहिये कि नमी अगुती हुमी पीढीको पढाबीके साथ-साथ असा काम भी सिखाया जाय, जिसमें कुछ सर्जनकी भी जरूरत हो। जिसका अर्थ यह है कि सामान्य शिक्षाके साथ शारीरिक कार्य भी जोड दिया जाय, और जिसका ध्येय यह है कि जिनके साथ शारीरिक कामका मेल साधा जा सके, असी बुद्धोगकी सब शाखाओंका साधारण खयाल बालकको मिले। बौद्धिक और नैतिक प्रयासके साथ जुडे हुये शारीरिक श्रमको हमारी शिक्षामें प्रधानता मिलनी चाहिये। दिमाग तथा हाथ-पैरके कामोको अलग नहीं करना चाहिये।

“हमारी प्राथमिक शिक्षा-पद्धतिमें हमें अतनी चीजोका समावेश करना चाहिये :

१ मातृभाषा

२ अकगणित

- ३ प्राकृतिक विज्ञान
- ४ समाज-शास्त्र
- ५ भूगोल और इतिहास
- ६ अग-मेहनत या हुनर-अुद्योगका काम
- ७ कसरत
- ८ कला और संगीत
- ९ हिन्दुस्तानी

“यहाँ प्रश्न यह खड़ा होता है कि बालककी शिक्षाकी शुरुआत किस बुझमें हो? पाँच या छ. बरसकी बुझमें शिक्षा शुरु हो, तो बिन बुझमें किनी उपयोगी हस्त-अुद्योगकी शुरुआत की जा सकती है? वह अुद्योग सिखानेमें जो खर्च होगा अुसका क्या? यह अक्षरज्ञानके प्रचारकी अपेक्षा आसान और कम खर्चीला नहीं होगा। सँ ८ या १० वर्षकी बुझसे हस्त-अुद्योगकी शुरुआत करूँगा, क्योंकि औजारोका अुपयोग करनेमें अुसको हाथकी शक्ति और सन्तुलन चाहिये ही। पर प्राथमिक शिक्षाकी शुरुआत कम-से-कम ५ या ६ वर्षकी बुझमें होनी चाहिये। बालकको जिससे अधिक प्रतीक्षा नहीं करायी जा सकती। हम बालकको जिस अुद्योगकी शिक्षा देना चाहते हैं, अुसके अलावा मैट्रिक तकके स्तर पर अुसे ले जानेके लिये हमारे पास दस वर्षका पाठ्यक्रम होना चाहिये। पर बिन बालकोकी पैदा की हुई चीजोकी — खासकर छोटे बच्चोकी — आर्थिक कीमतके वारेमें मुझे शक जरूर है। जहाँ व्यापारमें कोयी प्रतिवध नहीं है, और तरह-तरहकी नित्य नयी फ़ैशने चलती हैं अैने देशमें, और फिर जब वे चीजें टिकाबू और सफाबीदार न हो, वे विक नहीं सकती। यदि अुन्हें राज्य खरीद ले, या कुछ नेवा या मदद देकर अुसके बदलेमें अुन्हें ले, तो अुन चीजोका वह क्या करेगा? राज्य अैसा करे, बिनके वजाय तो निदा ४

पर सीधे तौरसे पैसे खर्च करे, यह ज्यादा ठीक है। बेशक बड़ी बुझके, अुदाहरणार्थ १२ से १६ वर्षके, लडको द्वारा बनायी हुअी चीजें वाजारमें बेची जा सके, अैसी बनायी जा सकनी है, और अुनसे ठीक-ठीक आमदनी हो सकती है।

“मैं तो अक्षरजानके प्रश्नका विचार भिन्न रीतिसे करता हूँ, और अिसके लिये कर डालने और खर्च करनेकी जरूरत हो, तो वह खुशीसे करूँगा।

“अुपयोगी हस्त-अुद्योगका विचार प्राथमिक शिक्षाके आगेके (अथवा माध्यमिक) वर्गोंमें अच्छी तरह विकसित किया जा सकता है। कम-से-कम कुछ अशोमे अुसे स्वावलम्बी बनानेका प्रयत्न तो करना ही चाहिये और अनुभव प्राप्त होनेके बाद पैदा की हुअी चीजोकी कीमतके हिसाबसे हो सके तो अुसे पूरी-पूरी स्वावलम्बी बनाना चाहिये। केवल अेक जोखिमसे अुसकी रक्षा करनी पड़ेगी; वह यह है कि शरीर, मन और आत्माके मस्कारोकी शिक्षा आर्थिक हेतु और स्कूलकी आर्थिक व्यवस्थाके आगे अेकदम गौण न बन जाय।

“प्राथमिक शिक्षाको आजकलकी मैट्रिकमे से अग्रेजीको हटा दें (और मैं कहता हूँ कि हिन्दुस्तानीको जोड़ दें) अुस हद तक पहुँचानेकी आपकी सूचना भी मुझे कबूल है। अिसका अर्थ यह है कि आप प्राथमिक शिक्षामें माध्यमिक शिक्षाका भी समावेश करते हैं। आपका विचार स्कूलकी शिक्षाको दस वर्षकी अेक सम्पूर्ण अिकायी बनानेका है। मैं अिसमें अितना जोडना चाहता हूँ कि यह शिक्षा स्वभाषा द्वारा ही दी जानी चाहिये, दूसरी किसी भाषा द्वारा नहीं। अिससे बालकका मन स्वतंत्र होगा, अुसके मनमे ज्ञान और जीवनके प्रश्नोंके बारेमें गहरा रस पैदा होगा और बालकमें सर्जनकी शक्ति और दृष्टि आवेगी।

“मैं स्वीकार करता हूँ कि मध्ययुगमें शिक्षा ज्यादातर स्वावलम्बी थी, और यदि हमारी सामाजिक, आर्थिक और राजकीय व्यवस्था और दृष्टि मध्ययुगीन रहे, तो शिक्षाको सामान्यतः स्वावलम्बी बनाया जा सकता है। मध्ययुगीनका अर्थ वर्ग और वर्णकी अर्थ-व्यवस्था, समाज-व्यवस्था और राज्य-व्यवस्थाके पुराने और सुकुचित विचारोंसे चिपटकर रहनेवाली। पर आज जब हममें लोकशासन, राष्ट्रवाद और समाजवादकी कल्पनामें व्याप्त हो रही है, जैसे समय शिक्षा स्वावलम्बी नहीं बन सकती। समाजमें अकेलात्र सगठित और शासनबल तथा साधन-सामग्रीसे सम्पन्न शक्ति केवल सरकार ही है। बिसलिअे यह कार्य असे अपने सिर पर लेना ही पड़ेगा। पुराने शक्ति-समूह—जाति, वर्ग, मध, पाठशाला, धर्मसंघ—में शक्ति, शासनबल या साधन-सामग्री नहीं रही। और पुराने समयमें जिस विशाल अर्थमें असुका अस्तित्व था, वह अब नहीं रहा। लोगोंको भी असु पर श्रद्धा नहीं रही। सामाजिक शक्ति सब राजकीय समूहके पास चली गयी है। और हिन्दुस्तानमें भी राजकीय शक्ति ही आर्थिक और सामाजिक शक्ति बन गयी है। अर्थात् दो आदर्श—अके मध्ययुगीन और दूसरा अर्वाचीन—साथ-साथ नहीं चल सकते। भूतकालमें न सार्वत्रिक शिक्षा थी, न लोकशासनयुक्त अकेतत्री राज्य था और न राष्ट्रीय समानदर्शी दृष्टि ही थी।

“शिक्षामें युवकोंकी अनिवार्य सेवा लेनेका विचार नया नहीं है। पर यह बात करने जैसी है। कांग्रेस और असुके प्रांतीय प्रबानमत्री अपने ओहदेके अधिकारसे देशके बुद्धिशाली वर्गको विनती करके देखें, और जिन्हें जन-समूहकी शिक्षाके लिये लगन और मुत्साह हो जैसे सब लोग प्रजामें अक्षरज्ञान, सस्कार और शिक्षाका प्रचार करनेमें सरकारकी मदद करे, जैसी

‘अपील अनुसे करे। जिसमे जनसमूहके साथ अेक नये प्रकारका संपर्क कायम होगा—केवल आर्थिक या राजकीय विषयका ही मन्वन्ध नही रहेगा, प्रजाकी सामूहिक शक्ति और बुद्धिको जाग्रत करने, संगठित करने और व्यवस्थित करनेका अुच्चतर हेतु भी अिमसे सघेगा।”

मैंने स्वावलम्बी प्राथमिक शिक्षाके लिये पहली बार लिखा, तब शिक्षाक्षेत्रके साधियोंसे अपने-अपने अभिप्राय भेजनेके लिये विनती की थी। सबसे पहले अभिप्राय भेजनेवालोमे काशी हिन्दू विश्वविद्यालयके अध्यापक पुणताम्बेकर भी थे। अुन्होंने लवा, दलीलोसे भरा जवाब भेजा था। पर स्थानाभावके कारण मैं अिससे पहले अुसे अिम पत्रमे नही दे सका। अूपर अुनके अभिप्रायका सबसे ज्यादा प्रस्तुत भाग दिया है। सक्षेपके लिये अक्षरज्ञान और कॉलेजकी शिक्षा-विषयक भागको छोड दिया है। क्योकि अिस महीनेकी २२ और २३वीं तारीखको होनेवाली परिषद्में चर्चाका मुख्य विषय अुद्योग द्वारा स्वावलम्बी प्राथमिक शिक्षा रहेगा।

हरिजनवधु, २४-१०-३७

१५

कुछ आलोचनाओं

[‘कुछ आलोचनाओका जवाब’ नामक लेख]

मेरी प्राथमिक शिक्षाकी योजना पर अेक अुच्च शिक्षाधिकारीने हमारे अेक मित्र द्वारा अपनी विस्तृत और विचारपूर्ण आलोचना भेजी है। वे अपना नाम प्रगट नही करना चाहते। स्थानाभावके कारण मैं अुनकी सारी दलीले तो नही दे सकता, और न अुनमें कोअी अैसी नयी बात ही है। फिर भी और कुछ नही तो लेखकने अिस पत्र पर जो परिश्रम किया है अुसीकी खातिर अुन्हे जवाब तो देना चाहिये।

लेखकने अपने शब्दोंमें मेरी तजवीजोका मतलब अिस प्रकार दिया है

“(१) प्राथमिक शिक्षाका प्रारम्भ और अन्त दस्त-कारियों और बुद्धोगोकी तालीमके साथ हो और सामान्य जानकारीकी दृष्टिसे जो कुछ भी सिखाने पढानेकी जरूरत हो, वह सहायक पढाबीके रूपमें शुरु-शुरुमें बता दिया जाय। और लिखने पढने द्वारा दिया जानेवाला अितिहास, भूगोल और गणितका वाकायदा शिक्षण बिलकुल आखिरमें हो।

“(२) प्राथमिक शिक्षा शुरुसे ही स्वावलम्बी होनी चाहिये और राज्य वच्चोंकी बनायी चीजोंको लेकर अगर जनताको बेच दिया करे, तो प्राथमिक शिक्षा स्वावलम्बी हो सकती है—और अुसे होना चाहिये।

“(३) प्राथमिक शिक्षामें वह सब पढाबी हो जाय, जितनी कि मैट्रिक तक आज होती है—बेगन अग्रेजीको छोडकर।

“(४) प्रो० के० टी० गाहकी अिस योजनाकी अच्छी तरह जांच की जाय, और यदि मम्भव हो तो अुस पर अमल भी किया जाय, कि देगके नवयुवक और युवतियाँ प्राथमिक शालाओंमें लाजिमी तौर पर आकर पढावे।”

अिसके बाद फौरन ही लेखकने लिखा है

“यदि हम अुपयुक्त कार्यक्रमका विश्लेषण करें, तो यह दिखायी देगा कि अिसकी कुछ मूलभूत कल्पनाअे मध्य-कालीन है; और कही-रुही तो अैसी मान्यताओं पर आधार रखनी हैं, जो परीधामें ठहर नहीं भरती। धायद नयन ३ में लिखी मर्यादा बहुत अंची मानी जायगी।”

अच्छा होता अगर मेरी सूचनाओंका मतलब अपने-शब्दोंमें देनेके वजाय लेखक मेरे ही शब्दोंको अद्भुत कर देते। क्योंकि नवर १ में जितने भी वाक्य लिखे गये हैं, वे मेरे भावोंको व्यक्त करनेमें बिलकुल असफल हुए हैं। मेरा यह तो हरगिज मतलब नहीं कि शिक्षण दस्तकारियोंसे प्रारम्भ किया जाय और अन्य वाते गौण रूपमें सहायकके वतीर सिखायी जायें। जिसके विपरीत मैंने तो यह कहा है कि प्राय सारी सामान्य पढाई दस्तकारियोंके जरिये और अनेक साथ-साथ ही हो, और ज्यो-ज्यो विद्यार्थी अिनमें आगे बढ़ता जाय, उसे अन्य वाते भी सिखायी जायें। लेखकके शब्दोंसे जो भाव निकलता है, वह और यह बिलकुल जुदा-जुदा चीजे हैं। मुझे पता नहीं कि मध्ययुगमें क्या होता था। हाँ, मैं यह जरूर जानता हूँ कि मध्य या किसी भी युगमें यह अद्भुत तो कभी नहीं रहा कि दस्तकारियोंकी सहायतासे मनुष्यका पूर्ण विकास साधा जाय। यह कल्पना अकदम नहीं है। अगर यह गलत भी साबित हो, तो भी उसकी मौलिकता और नवीनतामें कोई अन्तर नहीं पड़ता। और जब तक हम किसी नवी कल्पनाको अच्छी तरह आजमा नहीं लेते, उस पर अकदम सीधा आक्रमण भी नहीं कर सकते। वगैर सिद्ध किये ही अकदम यह कह देना कि यह असम्भव है, कोई दलील नहीं है।

मैंने यह भी नहीं कहा है कि विधिवत् पढाई लेखन और पठनके द्वारा बिलकुल आखिरमें की जाय। जिसके विपरीत, असलमें सच्ची पढाई तो शुरू-शुरूमें ही आ जाती है। सचमुच वह तो साधारण शिक्षाका एक महत्वपूर्ण अंग है। हाँ, मैंने यह जरूर कहा है और फिर कहता हूँ कि वाचन कुछ देरसे सिखाया जाय और लेखन सबके अन्तमें। पर ये सब क्रियाएँ अक वर्षके अन्दर समाप्त कर देनी चाहिये, जिससे मेरी कल्पनाकी पाठशालामें सात सालका अक लड़का या लड़की, वर्तमान प्राथमिक शालाओंमें साधारण लड़के-लड़कियोंको अक सालमें जितना सामान्य ज्ञान होता है, उसमें कही

अधिक प्राप्त कर ले। वह आजकलके बच्चोंकी भाँति इस तरह नहीं लिखेगा, मानो कागज परसे चीटा गुजर गया हो, बल्कि साफ और मोतीके दाने जैसे सुन्दर अक्षर लिखेगा और अच्छी तरह शुद्ध पढ़ेगा भी। वह मामूली जोड़ तथा पहाड़े भी सीख लेगा। और यह सब वह अंक सालके अन्दर अपनी रुचिकी अंक उत्पादक दस्तकारी—ममलन् कताभी—के जरिये और उसके साथ-साथ सीख लेगा।

न० २ भी पहलेकी ही तरह भद्दे ढंगसे लिखा गया है। मैंने दावा तो यह किया है कि दस्तकारियोंकी सहायतासे जब शिक्षा दी जायगी, तो मेरी बतायी कुल अवधि अर्थात् मात वर्षमें असे स्वावलम्बी हो जाना चाहिये। मैंने यह साफ कह दिया है कि पहले दो वर्षमें तो अमुममें कुछ अक्षरोंमें नुकसान भी होगा।

मध्यकाल गायद बुरा रहा हो, पर मैं किसी चीजकी महज अिसल्लिखे निन्दा करनेको तैयार नहीं हूँ कि वह मध्यकालकी है। निस्तन्देह चरखा अंक मध्यकालीन चीज है। पर आज तो वह वर्तमान जीवनमें अपना स्थान पा चुका है, यद्यपि वस्तु तो वही है। पहले अंक समय, अीस्ट गिडिया कपनीके जागमनके बाद, जहाँ वह गुलाभीका चिन्ह था, तहाँ आज वह स्वतंत्रता और अंकताका प्रतीक बन गया है। नवीन भारतको आज लुसके अन्दर वे गहन और सच्चे रहस्य नजर आने लग गये हैं, जिनकी कल्पना हमारे बुजुर्गोंको सपनेमें भी नहीं हुआ होगी। अिसी प्रकार ये दस्तकारियाँ भी भले ही किसी नमय कारखानोंकी गुलाभीका चिन्ह रही हों, लेकिन आज वे संपूर्ण और सच्चेमें मन्चे अर्थमें शिक्षाका प्रतीक और वाहन बन सकती हैं। अगर मत्रियोंके अन्दर आवश्यक साहस और कल्पना होगी, तो वे जरूर अिस कल्पनाको कार्यमें परिणत करके देखेंगे, भले ही अुच्च शिक्षाधिकारी तथा अन्य लोग काल्पनिक शकाओंके आधार पर अिनकी टीकाओं—भले वे सद्हेतुने प्रेरित ही हों—करते रहें।

यद्यपि लेखकने प्रो० के० टी० शाह द्वारा सुझायी हुयी लाजिमी सेवाकी योजनाकी व्यावहारिकताको कुछ अंशमें स्वीकार करनेकी भलमनसाहत बताया है, तो भी आगे चलकर अुन्हें जिस पर अफसोस होता है और वे कहते हैं

“ देशके नवयुवको और युवतियोको पाठशालाओमें आकर पढानेके लिये मजबूर करनेवाली कल्पना तो अत्याचारपूर्ण मालूम होती है। जहाँ पर छोटे-छोटे बच्चे अेकत्र होते हैं, वहाँ तो हमें जैसे शिक्षकोको भेजना चाहिये, जिन्होंने स्वेच्छापूर्वक अपनेको जिस कामके लिये अुस अंश तक अपित कर दिया है, जिस अंश तक ससारमें ऐसा आत्मोत्सर्ग संभव है। और साथ ही वे लोग जैसे हो, जो बच्चोको अुत्साहपूर्वक पढा सके और अुन्हें रोशनी दे सके। हमने अपने देशके युवको और युवतियो पर अब तक काफी प्रयोग किये हैं। पर यह तो अेक ऐसा प्रयोग है, जिसका अितना बडा अनर्थकारी परिणाम होगा कि अुससे हम आधी शताब्दी तक अपना पिंड नहीं छुडा पायेंगे। जिस सब कल्पनाकी जडमें यह मान लिया गया है कि पढाना अेक अैसी कला है, जिसके लिये किसी प्रकारकी ट्रेनिंगकी जरूरत नहीं है और यह कि हरअेक आदमी जन्मजात शिक्षक होता है। बडे आश्चर्यकी बात है कि श्री के० टी० शाह जैसे विद्वानके दिमागमें यह बात कैसे बैठ गयी। यह तो अेक निरीसनक है और जिस पर कही अमल होने लगा तो भयंकर दुष्परिणाम होंगे। और फिर हर शिक्षक बच्चोको दस्तकारियोकी शिक्षा कैसे देगा ? ” अित्यादि, अित्यादि।

प्रो० शाह अपनी योजनाको प्रतिपादित करनेकी काफी क्षमता रखते हैं। पर मैं लेखकको याद दिला देना चाहता हूँ कि वर्तमान शिक्षक स्वयंसेवक नहीं है। वे भी (शुद्ध अर्थमें) किराये पर अर्थात् रोटीके लिये काम कर रहे हैं।

प्र० गाहने अपनी योजनामें यह मान लिया है कि जो शिक्षक नियुक्त किये जायेंगे, उनमें अपने देशके लिये प्रेम, स्वार्थत्यागकी भावना, कुछ सुसंस्कार और ब्रैकाव दस्तकारीका सक्रिय ज्ञान नही होगा। उनका कल्पनामें सार है, वह व्यावहारिक है और सबसे अधिक गौर करनेके काबिल है। अगर हम जिस बातकी राह देखते रहे कि हमें जन्मजात अध्यापक मिलें, तब तो कल्पान्त तक ठहरना पड़ेगा। मैं तो कहता हूँ कि हमें बहुत बड़े पैमाने पर शिक्षकोंको तैयार करना पड़ेगा और नो भी थोड़ेसे थोड़े समयमें। यह तब तक सम्भव नहीं, जब तक कि देशके माँजूदा शिक्षित नाँजवान और वहाँ अपनी सेवाके लिये कामके लिये न दे दें। पर यह काम स्वेच्छापूर्वक और प्रेमके साथ ही, तभी मफल ही सकता है। सविनय-अवज्ञाके दिनोंमें देशकी पुकार पर, चाहे कितनी ही थोड़ी सस्थामें क्यों न हों, वे दौड़ पड़े थे। अपने गुजरके लिये थोड़ासा पारिश्रमिक लेकर देशकी रचनात्मक सेवाकी पुकार पर क्या अब वे फिर नहीं दौड़ पड़ेंगे ?

अब लेखक पूछते हैं

“(१) जब छोटे-छोटे बच्चे काम करेंगे, तो क्या वस्तुओंका अपव्यय नहीं होगा ?

(२) अिन चीजोंकी बिक्री किमी मध्यवर्ती मण्डल द्वारा ही होगी न ? अमका स्वर्ण कहाँसे आयेगा ?

(३) क्या लोगोंको ये चीजें खरीदनेके लिये मजबूर किया जायगा ?

(४) अिन जानियोंकी क्या दगा होंगी, जो आजराट ये चीजें बना रही हैं ? अिन पर अिन पदनिर्वा त्ता प्रतिश्रिया होगी ? ”

अरे अिनर ये हैं

(१) बेशक, कुछ अपव्यय तो जरूर होगा, पर अके वर्षके अन्तमे तो प्रत्येक विद्यार्थीको कुछ लाभ भी होगा।

(२) तैयार चीजोमे से राज्य अपनी जरूरतोकी पूर्तिके लिये खुद ही काफी हिस्सा रख लेगा।

(३) देशके वच्चो द्वारा बनायी हुयी चीजे खरीदनेके लिये किसीको मजबूर नहीं किया जायगा। लेकिन अुससे यह अपेक्षा जरूर रखी जायगी कि वह अभिमानपूर्वक अुन चीजोको ले। साथ ही, यह भी अपेक्षा की जा सकती है कि वच्चो द्वारा देशकी जरूरतोकी पूर्तिके लिये बनायी गयी अिन चीजोको खरीदनेमे राष्ट्र अके प्रकारका आनन्द-लाभ भी करेगा।

(४) गाँवोकी दस्तकारियोसे बनी चीजोमे तो मुश्किलसे कोअी होड होगी। फिर अिस बातका भी खास तौर पर ध्यान रखा जायगा कि गाँवोकी बनी किन्ही भी चीजोसे अनुचित होड न हो, अैसी ही चीजे स्कूलोमे बने। मसलन् खादी, गाँवका बना कागज, खजूरका गुड आदि चीजोमे किसी प्रकारकी प्रतिस्पर्धा नहीं चलेगी।

हरिजनसेवक, १६-१०-३७

वर्धा-शिक्षा-परिषद्

[प्रकरण ११ में जिस परिषद्का जिक्र है, वह ता० २२, २३ अक्तूबर, १९३७ को वर्धामें हुआ थी। 'वर्धा-शिक्षण-योजना', 'दुनियादी शिक्षा' या वादमें जिसे 'नयी तालीम' कहा जाने लगा, उसका जन्म इस परिषद्में हुआ। 'अुद्योग द्वारा शिक्षा' का गांधीजीका यह मूल विचार इस परिषद्ने ही पहले पहल अपनाया। देशमें इसके प्रयोग वादमें हुये। —सं०]

१

सभापति-पदसे प्रारंभिक विवेचन

[तमाम आमंत्रित सज्जनोको धन्यवाद देनेके पश्चात् गांधीजीने जो विवेचन किया उसका सार]

मैं आप लोगोंके सामने परिषद्के अध्यक्षकी हैसियतसे उपस्थित होऊँ या अके सदस्यकी हैसियतसे, मैंने तो आप लोगोंको यहाँ जिसलिये आनेका कष्ट दिया है कि मैंने जो प्रस्ताव* तैयार किये हैं, उन पर आपकी — और खास कर जो इनका विरोध करते हैं उनको राय सुनूँ और उनमें सलाह लूँ। मैं चाहता हूँ कि आप मेरी इन तजवीजों पर स्वतंत्र रूपसे स्पष्टताके साथ पूरी-पूरी चर्चा करें, क्योंकि मुझे अफसोस है कि मैं अपने कमजोर स्वास्थ्यकी वजहसे पडालके बाहर आप सज्जनोमें नहीं मिल सकता।

* ये प्रस्ताव 'राष्ट्रीय शिक्षासामिन्त्रियोंमें' नामक प्रकरणमें दिये गये हैं।

मैंने जो प्रस्ताव विचारार्थ रखे हैं, उनमें प्राथमिक शिक्षा और कॉलेजकी शिक्षा दोनोंका ही निर्देश है। पर आप लोग तो अधिकतर प्राथमिक शिक्षाके बारेमें ही अपने विचार जाहिर करे। माध्यमिक शिक्षाको मैंने प्राथमिक शिक्षामें शामिल कर लिया है, क्योंकि प्राथमिक कहीं जानेवाली शिक्षा हमारे गाँवोंके बहुत ही थोड़े लोगोंको मयस्सर होती है। १९१५ से शुरू किये-हुए अपने कहीं दौरोमें मैंने सैकड़ों गाँव देखे हैं। मैं महज गाँवोंके ही लड़कों और लड़कियोंकी जरूरतोंके बारेमें कह रहा हूँ, जिनका कि बहुत बड़ा भाग विलकुल निरक्षर है। मुझे कॉलेजकी शिक्षाका अनुभव नहीं है, हालाँकि कॉलेजके हजारों लड़कोंके सम्पर्कमें मैं आया हूँ, उनके साथ दिल खोलकर मैंने बातें की हैं और खूब पत्र-व्यवहार भी हुआ है। उनका आवश्यकताओंको, उनकी नाकामयावियोंको और उनकी तकलीफोंको मैं जानता हूँ। पर अच्छा हो कि आप अपनेको प्राथमिक शिक्षा तक ही महद्वद रखें। कारण यह है कि मुख्य प्रश्नके हल होते ही कॉलेजकी शिक्षाका गौण प्रश्न भी हल हो जायगा।

मैंने खूब सोच-समझकर यह राय कायम की है कि प्राथमिक शिक्षाकी यह मौजूदा प्रणाली न केवल धन और समयका अपव्यय करनेवाली है, बल्कि नुकसानदेह भी है। अधिकांश लड़के अपने माँ-बापके तथा अपने खानदानी पेशे-धन्धेके कामके नहीं रहते। वे बुरी-बुरी आदतें सीख लेते हैं, शहरी तौर-तरीकोंके रगमें रग जाते हैं और थोड़ी-सी अपूरी बातोंकी जानकारी ही उन्हें हासिल होती है, जिसे और चाहे जो नाम दिया जाय, पर शिक्षा तो हरगिज नहीं कहा जा सकता। जिसका जिलाज मेरे खयालमें यह है कि उन्हें औद्योगिक या दस्तकारीकी तालीमके जरिये शिक्षा दी जाय। मुझे जिस प्रकारकी शिक्षाका कुछ व्यक्तिगत अनुभव है। मैंने दक्षिण अफ्रीकामें खुद अपने लड़कोंको और दूसरे हर जाति और धर्मके बच्चोंको ट्रॉस्टोंय फार्ममें किसी न किसी दस्तकारी द्वारा जिस प्रकारकी तालीम

दी थी। जंमे वढबीगिरी या जूते वनानेका काम सिखाया था, जिसे कि मंते कैलनवैकसे सीखा था, और कैलनवैकने अक ट्रेपिस्ट मटमें जाकर अिस हुनरकी शिक्षा प्राप्त की थी। मेरे लडकेने और अुन नव वच्चोने, मुझे विश्वास है, कुछ गँवाया नहीं है। यद्यपि मैं अुन्हे अैसी गिखा नही दे सका, जिससे कि खुद मुझे या अुन्हे सन्तोष हुआ हो। क्योंकि समय मेरे पास बहुत कम रहता था और काम अितने अधिक रहते थे कि जिनका कोमी शुमार नहीं।

मैं असल जोर घन्वे या अुद्यम पर नहीं, बल्कि हाथ-अुद्योग द्वारा शिक्षण पर दे रहा हूँ। साहित्य, अितिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान अित्यादि सभी विषयोकी शिक्षा अुद्योग द्वारा ही दी जानी चाहिये। आयद अिस पर यह आपत्ति अुठायी जाय कि मध्ययुगमें तो अैसी कोमी चीज नही सिखायी जाती थी। मगर पेशे-घन्वेकी तालीम तव अैसी होती थी कि अुससे कोमी शैक्षणिक मतलब नहीं निकलता था। अिस युगमें यह दशा हुआ है कि लोग अुन पेशेको, जो अुनके घरमें होते थे, भूल गये हैं, पढ-लिखकर अुन्होने क्लर्कीका काम हाथमे ले लिया है और अिस तरह वे आज देहातके कामके नहीं रहे हैं। नतीजा अिसका यह हुआ है कि किसी भी औसत दर्जेके गाँवमे हम जायें, तो वहाँ अच्छे, निपुण वढबी या लुहारका मिलना असभव हो गया है। दस्तकारियाँ करीव-करीव अदृश्य हो गयी हैं और कताबीका अुद्योग, जो अुपेक्षाकी नजरसे देखा जा रहा था, लकाशायर चला गया, जहाँ कि अुसका विकास हुआ। घन्ववाद है अग्रेजीकी अनोखी प्रतिभाको कि हुनर-अुद्योगको अुन्होने आज अिस हद तक विकसित कर दिया है। पर मैं यह जो कहता हूँ, अुसका मेरे औद्योगीकरण सम्बन्धी विचारोंसे कोमी सम्बन्ध नहीं।

मिलाज अिसका यह है कि हरअेक दस्तकारीकी कला और विज्ञानको व्यावहारिक शिक्षण द्वारा सिखाया जाय और फिर अुस अुद्योग द्वारा शिक्षा दी जाय। अुदाहरणके लिअे, तकली परकी

कताबी-कलाको ही ले लीजिये । जिसके द्वारा कपासकी मुस्तलिफ किस्मोका और हिन्दुस्तानके विभिन्न प्रान्तोकी तरह-तरहकी जमीनोका ज्ञान दिया जा सकता है । वस्त्र-अुद्योग हमारे देशमें किस तरह नष्ट हुआ, जिसका इतिहास हम अपने बच्चोंको बता सकते हैं । जिसके राजनीतिक कारणोको बतायेगे, तो भारतमे अंग्रेजी राज्यका इतिहास भी अुसमें आ जायगा । गणित अित्यादिकी भी शिक्षा अिनके द्वारा अुन्हें दी जा सकती है । मैं अपने छोटे पोते पर जिसका प्रयोग कर रहा हूँ, जो शायद ही यह महसूस करता हो कि अुमे कुछ सिखाया जा रहा है, क्योंकि वह तो हमेशा खेलता-कूदता रहता है, हँसता है और खूब गाता है ।

तकलीका अुदाहरण मैंने जो खासकर दिया है, वह जिसलिअे कि जिसके विषयमें आप लोग मुझसे सवाल पूछें, क्योंकि मुझे जिससे बहुत-कुछ काम निकालना है । जिसकी शक्ति और जिसका अुद्भुत पराक्रम मैंने देखा है, और अेक कारण यह भी है कि वस्त्र-निर्माणकी दस्तकारी ही अेक अैसी चीज है, जो सब जगह सिखायी जा सकती है । और तकली पर कुछ खर्च भी नहीं होता । जितनी आशा की जाती थी, अुससे कहीं ज्यादा तकलीका मूल्य और महत्त्व साबित हो चुका है । जिस हद तक भी हमने रचनात्मक कार्यक्रम पूरा किया है, अुसीके परिणामस्वरूप सात प्रान्तोमें ये काग्रेसी मन्त्रि-मडल बने हैं, और जिस हद तक जिस कार्यक्रम पर अमल होगा, अुसी हद तक अिन मन्त्रि-मडलोको सफलता मिलेगी ।

मैंने सोचा है कि अध्ययन-क्रम सात सालका रखा जाय । जहाँ तक तकलीका सबब है, जिस मुद्दतमे विद्यार्थी बुनाबी तकके व्यावहारिक ज्ञानमे (जिसमें रगाबी, डिजाइनिंग आदि भी शामिल है) निपुण हो जायेंगे । हम जितना कपडा पैदा कर सकेगे, अुसके लिअे ग्राहक तो तैयार है ही ।

मैं जिसके लिये बहुत बलुक हूँ कि विद्यार्थियोंकी दन्तकारीकी चीजोंसे शिक्षकका खर्चा निकलवाना चाहिये, क्योंकि मेरा यह विश्वास है कि हमारे देशके करोड़ों बच्चोंको तालीम देनेका दूसरा कोई रास्ता ही नहीं है। जब तक कि हमें सरकारी खजानेसे आवश्यक पैसा न मिल जाय, जब तक कि वाणिज्य फौजी खर्चको कम न कर दें, या बिनी तरहका कोई कारगर जरिया न निकल आवे, तब तक हम रास्ता देखते हुये बैठे नहीं रहेंगे। आप लोगोंको याद रखना चाहिये कि बिन प्राथमिक शिक्षासे सफाई, आरोग्य और आहार-शास्त्रके प्रारम्भिक सिद्धान्तोंका समावेश हो जाता है। अपना काम खुद कर लेने तथा घर पर अपने माँ-बापके काममें मदद देने वगैरानी शिक्षा भी बुद्धि मिल जायेगी। वर्तमान पीढ़ीके लड़कोंको न तो सफाईका ज्ञान है, न वे यह जानते हैं कि आत्म-निर्भरता क्या चीज है; और शारीरिक स्वास्थ्य भी उनका काफी कमजोर होता है। जिसलिये बुद्धि में लाजिमी तौर पर गाने और बाजेके साथ ब्यायद वगैराके जरिये शारीरिक व्यायामकी भी तालीम दूंगा।

मुझ पर यह दोषारोपण किया जा रहा है कि मैं साहित्यिक शिक्षाके खिलाफ हूँ। नहीं, यह बात नहीं है। मैं तो केवल वह तरीका बता रहा हूँ, जिस तरीकेसे साहित्यिक शिक्षा देनी चाहिये। और मेरे 'स्वावलम्बन' के पहलू पर भी हमला किया गया है। यह कहा गया है कि प्राथमिक शिक्षा पर जहाँ हमें करोड़ों रुपये खर्च करने चाहिये, वहाँ हम बलुटे बच्चोंका ही-शोषण करने जा रहे हैं। नाय ही, यह आशंका भी की जानी है कि जिस तरह बहुतनी शक्ति व्यर्थ चली जायेगी। लेकिन अनुभवसे जिस भयको गन्त नावित कर दिया है और जहाँ तक बच्चे पर बोझ डालने या उनका शोषण करनेका मसाला है, मैं कहूँगा कि बच्चे पर यह बोझ डालना क्या ठुसे मयनासने बचानेके लिये ही नहीं है? तबली बच्चोंके खेलनेके लिये अके कान्पी अच्छा खिलौना है। चूँकि यह अके उत्पादक खिलौना है, जिसलिये

यह नहीं कहा जा सकता कि यह खिलौना नहीं है या खिलौनेंमें किसी तरह कम है। आज भी बच्चे किसी हद तक अपने माँ-बापकी मदद करते ही हैं। हमारे सेगाँवके बच्चे खेती-किसानीकी बातें मुझसे कही ज्यादा जानते हैं, क्योंकि मुझे अपने माँ-बापके साथ खेतों पर काम करना पड़ता है। लेकिन जहाँ बच्चेको जिस बातका प्रोत्साहन दिया जायगा कि वह काते और खेतीके काममें अपने माँ-बापकी मदद करे, वहाँ उसे अँसा भी महसूस कराया जायगा कि उसका सबब सिर्फ अपने माँ-बापसे ही नहीं, बल्कि अपने गाँव और देशसे भी है और उसे अनुकी भी कुछ सेवा करनी ही चाहिये। मैं मत्रियोसे कहूँगा कि खैरातमें शिक्षा देकर तो वे बच्चोंको असहाय ही बनायेंगे, लेकिन शिक्षाके लिये उनसे मेहनत करा कर वे मुझे वहादुर और आत्म-विश्वासी बनायेंगे।

यह पद्धति हिन्दू, मुसलमान, पारसी, आसाजी सभीके लिये अक-सी लागू होगी। मुझसे पूछा गया है कि मैं धार्मिक शिक्षा पर कोजी जोर क्यों नहीं देता? जिसका कारण यह है कि मैं मुझे स्वावलम्बनका धर्म ही तो सिखा रहा हूँ, जो कि धर्मका अमली रूप है।

जिस तरह जो विद्यार्थी शिक्षित किये जायें, उन्हें जरूरत पड़ने पर रोजी देनेके लिये राज्य बँधा हुआ है। और जहाँ तक अध्यापकोका प्रश्न है, प्रोफेसर शाहने लाजिमी सेवाका अपाय सुझाया है। अिटली तथा अन्य देशोंके अुदाहरण देकर मुझेने जिसका महत्व बताया है। उनका कहना है कि अगर मुसोलिनी अिटलीके तरुणोंको देशकी सेवाके लिये प्रोत्साहित कर सकता है, तो हमें हिन्दुस्तानके तरुणोंको प्रोत्साहित क्यों नहीं करना चाहिये? हमारे नौजवानोंको अपना रोजगार शुरू करनेसे पहले एक या दो सालके लिये लाजिमी तौर पर अध्यापनका काम करना पड़े, तो उसे गुलामी क्यों कहा जाय? क्या यह ठीक है? पिछले सत्रह

सालोमें आजादीके हमारे आन्दोलनने जो सफलता प्राप्त की है, अुनमें नौजवानोंका हिस्सा कोजी कम नहीं है । अिसलिये में अुनसे अपने जीवनका अेक साल राष्ट्र-सेवाके लिये अर्पण करनेको कह सकता हूँ । अिस मवघमें कानून बनानेकी भी जरूरत हुयी, तो वह जरूरदस्ती नहीं होगी, क्योकि हमारे प्रतिनिधियोंके बहुमतकी रजामन्दीके वगैर वह कभी मजूर नहीं हो सकता ।

अिसलिये, में आपने पूछूंगा कि शारीरिक परिश्रम द्वारा दी जानेवाली शिक्षा आपको रचती है या नहीं ? मेरे लिये तो अिने स्वावलम्बी बनाना ही अिनकी अपयुक्त कसौटी होगी । मातृ-शालके अन्तमें बालकोंको अैसा तो हो ही जाना चाहिये कि अपनी शिक्षाका खर्च वे खुद अुठा सकें और परिवारमें अनकमाजू पूत न रहें ।

कलियेकी शिक्षा ज्यादातर शहरी है । यह तो में नहीं कहूंगा कि यह भी प्राथमिक शिक्षाकी तरह विलकुल असफल रही है, लेकिन अिसका जो परिणाम हमारे नामने है, वह काफी निराशाजनक है । नहीं तो कोजी ग्रेजुअेट भला बेकार क्यो रहे ?

तकलीको मेंने निश्चित अुदाहरणके रूपमें सुझाया है, क्योकि विनोबाको अिसका सबसे ज्यादा व्यावहारिक अनुभव है और अिस बारेमें कोजी अंतराज अुठाये जायें, तो अुनका जवाब देनेके लिये वे यहाँ मौजूद हैं । काकासाहब भी अिस बारेमें कुछ कह सकेंगे, हालाँकि अुनका अनुभव व्यावहारिकके बनिस्वत सैद्धान्तिक अधिक है । अुन्होंने जनरल आर्मस्ट्रॉंगकी लिखी हुयी 'अेज्युकेशन फॉर लाजिफ' (जीवनकी शिक्षा) पुस्तककी तरफ और अुनमें भी खानकर 'हाथकी शिक्षा' वाले अध्याय पर ख़ास तौरसे मेरा ध्यान खीत्रा है । स्वर्गीय मवसूदन दाम थे तो वकील, लेकिन अुनका यह विश्वास था कि अगर हम अपने हाथ-पैरोंमें काम न लेंगे, तो हमारा दिमाग कुन्द पड जायगा और अगर अुसने काम किया भी, तो वह शैतानका ही घर बनेगा । टॉल्टटॉयने भी हमें अपनी बहुतसी कहानियोंके द्वारा यही बात सिखायी है ।

[भाषणके अन्तमें गाधीजीने स्वावलम्बी प्राथमिक शिक्षाकी अपनी योजनाके मूलभूत तत्त्व पर अस्थित जनोका ध्यान आकर्षित करते हुये कहा]

हमारे यहाँ साम्प्रदायिक झगडे होते रहते हैं, लेकिन यह कोभी हमारी ही खामियत नहीं है। अंग्लैण्डमें भी असी ही लडाबियाँ हो चुकी हैं। और आज ब्रिटिश साम्राज्यवाद सारे ससारका शत्रु हो रहा है। अगर हम साम्प्रदायिक और आन्तरराष्ट्रीय सघर्षको बंद करना चाहें, तो हमारे लिये यह जरूरी है कि जिम शिक्षाका मने प्रतिपादन किया है, उससे अपने बालकोको शिक्षित करके शुद्ध और दृढ आधारके साथ जिसकी शुरुआत करे। अहिंसासे जिस योजनाकी उत्पत्ति हुयी है। सपूर्ण मद्य-निषेधके राष्ट्रीय निश्चयके सिलसिलेमें मने जिसे सुझाया है। लेकिन मैं कहता हूँ कि आमदनीमें कोभी कमी न हो और हमारा खजाना भरा हुआ हो, तो भी अगर हम अपने बालकोको शहरी न बनाना चाहे, तो यह शिक्षा बडी अपयोगी होगी। हमें तो अूनको अपनी सस्कृति, अपनी सभ्यता और अपने देशकी सच्ची प्रतिभाका प्रतिनिधि बनाना है, और यह अुन्हें स्वावलवी प्राथमिक शिक्षा देनेसे ही हो सकता है। युरोपका अुदाहरण हमारे लिये कोभी अुदाहरण नहीं है। क्योकि वह हिंसामे विश्वास करता है और जिसलिये उसकी सब योजनाओ और उसके कार्यक्रमोका आधार भी हिंसा पर ही रहता है। रूसने जो सफलता हासिल की है, उसको मैं कम महत्त्वपूर्ण नहीं समझता। लेकिन उसका सारा आधार बल और हिंसा पर ही है। अगर हिन्दुस्तानने हिंसाके परित्यागका निश्चय किया है, तो उसे जिस अनुशासनमें से होकर गुजरना पडेगा, उसका यह शिक्षा-पद्धति अेक खास अग बन जाती है। हमसे कहा जाता है कि शिक्षा पर अंग्लैण्ड लाखों रुपया खर्च करता है और यही हल्ल अमेरिकाका भी है, लेकिन हम यह भूल जाते है कि यह सब धन शोषणसे ही प्राप्त होता है। अुन्होंने शोषणकी कलाको विज्ञानका

रूप दे दिया है, जिससे अन्के लिये अपने बालकोको अैसी महँगी शिक्षा देना सम्भव हो गया है, जैसी कि वे आज दे रहे हैं। लेकिन हम तो शोषणकी बात न सोच सकते हैं और न अैसा करेंगे ही; बिसलिये हमारे पास शिक्षाकी अिस योजनाके सिवा, जिसका आधार बहिंसा पर है, और कोअी मार्ग ही नहीं है।

हरिजनसेवक, ३०-१०-'३७

२

[प्रस्ताव पर हुअी चर्चामें कुछ आलोचनाओका जवाब देते हुअे गाधीजीने कहा]

तकली कोअी अेक ही अुद्योग नहीं है, पर यह अेक अैसी चीज जरूर है, जो कि सब जगह दाखिल की जा सकती है। यह काम तो मत्रियोंके देखनेका है कि किन स्कूलको कौनसा अुद्योग अनुकूल पडेगा। जिनको यत्रोका मोह है, अुन्हे मैं यह चेतावनी दे देना चाहता हूँ कि यत्रो पर जोर देनेने मनुष्योंके यत्र बन जानेका पूरा-पूरा खतरा है। जो यत्र-युगमें बसना चाहते हैं, अुनके लिये तो मेरी योजना व्यर्थ होगी। पर अुनसे मैं यह भी कहूँगा कि गाँवोंके लोगोंको यत्रो द्वारा जीवित रखना अुसम्भव है। जिस देशमें ३० करोड जीवित यंत्र पडे हुअे हैं, वहाँ नये जड यत्र लानेकी बात करना निरर्थक है। डॉ० जाकिर हुसैनने कहा है कि आदर्शकी भूमिका चाहें जैसी हो, फिर भी यह योजना शिक्षाकी दृष्टिसे पुख्ता है। अुनका यह कहना ठीक नहीं। अेक वहन मुझसे मिलने आयी थी। वह कहती थी कि अमेरिकाकी 'प्रोजेक्ट' पद्धति और मेरी पद्धतिमें बहुत बडा अन्तर है। पर मैं यह नहीं कहता कि मेरी योजना आपके गले न अुतरे, तब भी आप अुसे स्वीकार कर ही लें। अगर हमारे अपने आदमी न्यायसे काम करें, तो अिन स्कूलोंमें मैं गुलाम नहीं, किन्तु पूरे कारीगर निकलेगे। लडकोंमें चाहे किमी भी बिस्मकी मेहनत ली जाय, अुगकी

कीमत प्रति घटा दो पैसे जितनी तो होनी ही चाहिये। पर आप लोगोका मेरे प्रति जो आदर-भाव है, जो लिहाज है, अुसके कारण आप कुछ भी स्वीकार न करे। मैं मौतके दरवाजे पर बैठा हुआ हूँ। कोभी भी चीज जबरन लोगोसे स्वीकार करानेका मुझे स्वप्नमें भी विचार नहीं आता। जिस योजनाको तो पूर्ण और पुस्ता विचारके बाद ही स्वीकार करना चाहिये, जिससे कि जिसे कुछ ही समयमें छोड न देना पडे। मैं प्रो० शाहकी जिस बातसे सहमत हूँ कि जो राज्य अपने बेकारीके लिखे व्यवस्था नहीं कर सकता, अुसकी कोभी कीमत नहीं। पर अुन्हे भीखका टुकडा देना यह कोभी बेकारीका झिलाज नहीं। मैं तो जैसे हरअेक आदमीको काम दूंगा और अुसे पैसे नहीं दे सकूंगा तो खुराक दूंगा। अीश्वरने हमें खाने-पीने और मौज अुठानेके लिखे नहीं, बल्कि पसीना बहाकर रोजी कमानेके लिखे बनाया है।

हरिजनसेवक, ६-११-'३७

३

[दूसरे दिन कमेटी जिन निश्चयो पर पहुँची, अुनको परिषद्के सामने रखा गया, अुन पर बहस हुआ, और अन्तको अुन्हे स्वीकार कर लिया गया। कॉन्फरेन्समें जो प्रस्ताव पास हुअे वे यह है]

“ १ जिस कॉन्फरेन्सकी रायमें देशके सव बच्चोके लिखे सात बरसकी मुफ्त और लाजिमी तालीमका अिन्तजाम होना चाहिये।

“ २ तालीमका जरिया मातृभाषा होनी चाहिये।

“ ३ यह कॉन्फरेन्स महात्मा गांधीकी जिस तजवीजकी तामीद करती है कि जिस तमाम मुद्दतमें शिक्षाका मध्यविन्दु किसी किस्मकी दस्तकारी होना चाहिये, जिससे कुछ मुनाफा हो सके, और बच्चोमें जो कुछ अच्छे गुण पैदा करने हैं और अुनको जो शिक्षा-दीक्षा देना है, वह जहाँ तक हो सके जिसी केन्द्रीय दस्तकारीसे

सम्बन्ध रखती हो और अिम दम्तकारीका चुनाव वच्चोंके मामूलका लिहाज रखकर किया जाय।

“४ यह कॉन्फरेन्स आशा करती है कि अिस तरीकेमे धीरे-धीरे अध्यापकोंकी तनखाहका खर्च निकल आयेगा।”

अिसके बाद, अुक्त प्रस्तावोंके आवार पर प्राथमिक शिक्षाके अध्ययन-क्रमकी योजना* तैयार करनेके लिये नीचे लिखे मज्जनोंकी अेक कमेटी बनायी गयी

डॉ० जाकिर हुसैन (अध्यक्ष)

श्री आर्यनायकम् (सयोजक)

श्री ख्वाजा गुलाम सैयदुद्दीन

श्री विनोवा भावे

श्री काकानाहव कालेलकर

श्री किशोरलाल मशख्वाला

श्री जे० सी० कुमारप्पा -

श्री श्रीकृष्णदाम जाजू

प्रो० के० टी० गाह

श्रीमती आशादेवी

कमेटी और भी नाम शामिल कर सकती है।

कमेटी बनानेके बाद नीचे लिखा प्रस्ताव पास हुआ.

“जो दरखास्त अिम कॉन्फरेन्सने कबूल की है, अुक्तके मुताबिक अेक अैसी योजना बनायी जाय, जिससे कि मन्त्रियोंको दरखास्त पर अमल करनेमे मदद मिले। कमेटी अपनी योजनाको कॉन्फरेन्सके सभापतिके पास अेक महीनेके अन्दर भेज दे।”

हरिजनसेवक, ३०-१०-३७

* यह योजना हरिजनसेवकके ता० १८ तथा २५ दिसम्बर, १९३७ के अकोमे प्रकट हुयी है।

[गाधीजीने अब्ब्यक्ष-पदसे परिषद्की कार्रवाहीको समाप्त करते हुअे कहा]

आप सब लोग जो यहाँ आये हैं और जिस काममे योग दिया है, जिसके लिये मैं आपका आभारी हूँ। आप लोगोसे मैं और भी अधिक सहयोगकी आशा रखूंगा, क्योंकि यह कॉन्फरेन्स तो अभी पहली ही है, और अैसी कभी कॉन्फरेन्से हमे करनी पड़ेगी। मालवीयजी महाराजने मुझे चेतावनीका तार भेजा है, पर अुन्हे तो मैं तसल्ली दे सकता हूँ कि जिस कॉन्फरेन्समे कोअी अन्तिम फैसला नहो हुआ है। यह तो गोधकोकी परिषद् है, और हरअेक व्यक्तिको अपनी तजवीज रखने और आलोचना करनेके लिये निमत्रण दिया गया है। किसी भी चीजको जल्दीमे जवरदस्तीसे करा डालनेका मेरो जरा भी विचार नहो। राष्ट्रीय शिक्षा और शराववन्दीकी कल्पनाअे असहयोगके जितनी पुरानी है। पर यह चीज जिस रूपमें तो मुझे आज देशकी बदली हुअी परिस्थितियोंमें सूझी है।

हरिजनसेवक, ६-११-'३७

अेक कदम आगे

वर्षामें गत सप्ताहमें हुआ शिक्षा-परिषद्के कार्यकी रिपोर्ट दी जा चुकी है (प्रकरण १६ देखिये)। जनता और कांग्रेसी मंत्रियोंके आगे मेरी योजना पेश करनेके काममें जिस परिषद्से अेक नया और अेक महत्त्वपूर्ण प्रकरण प्रारम्भ होता है। अितने सच मंत्री परिषद्में अुपस्थित थे, यह अेक शुभ चिन्ह था। परिषद्में खासकर जो आपत्तियाँ अुठाजी गयीं और जो आलोचनाओं हुआ, वे जिस विचार—मेरे पेश किये हुअे सकुचित अर्थमें भी—के विरोधमें थी कि शिक्षाको स्वावलम्बी होना चाहिये। परिषद्ने जो प्रस्ताव पास किये हैं, उनमें बहुत सावधानीसे काम लिया गया है। जिसमें तो कोअी सन्देह नहीं कि परिषद्को अेक अज्ञात समुद्रमें नाव खेनी थी। अुसकी नजरके सामने पहलेका अेक भी सपूर्ण अुदाहरण नहीं था। मनें जो विचार रखा है वह अगर निर्दोष होगा, तो अुस पर अवश्य अमल हो सकेगा। अन्तमें जिनको स्वावलम्बनवाले भाग पर श्रद्धा होगी, अुन्हे जिस विचारके अनुसार पाठशालाओं चलाकर जिसकी सचाओकी सावित करके दिखाना है।

माध्यमिक अभ्यासक्रमसे अंग्रेजीको निकालकर वाकीके विषयोंकी पूरी प्राथमिक शिक्षा किसी भी अुद्योग द्वारा देनी चाहिये, जिस प्रश्नके विषयमें तो परिषद्में आञ्चर्यजनक अेकमत था। लड़कोंके पूर्ण पुरुषत्वका और लड़कियोंके पूर्ण स्त्रीत्वका विकास अुद्योग द्वारा करना है—यह तथ्य खुद ही स्कूलोंको कारखाने बन जानेसे बचाता है। क्योंकि लड़कों और लड़कियोंकी जिस अुद्योगकी शिक्षा मिलेगी,

असमें अमुक हद तक निष्णात होनेके अलावा अुन्हे जो, अन्य विषय सीखने होंगे, अुनमें भी अुन्हे, अुतनी ही योग्यता दिखानी पड़ेगी।

अिस योजना पर व्यावहारिक अमल किस तरह हो सकता है और लडको व लडकियोंको अंकके वाद दूसरे वर्षमें क्या-क्या सीखना होगा, यह तो हम डॉ० जाकिर हुसैन समितिके परिश्रम परसे ही जान सकेंगे।

अंक अंतराज यह अुठायी गया है कि परिषद्में क्या-क्या प्रस्ताव पास करने हैं, यह तो पहलेसे ही निश्चित हो चुका था। अिस अंतराजमें जरा भी तथ्य नहीं है। सारे देशमें से शिक्षा-विशारदको चाहे जिस तरह चुनकर बुलाना और अंक अैसी योजना पर, जो अुनके अनुसार नि सन्देह क्रांतिकारी योजना है, अपना मत अंकाअंक प्रदर्शित करनेके लिये अुनसे कहना वस्तुत असम्भव था। अिसलिये अैसे ही व्यक्तियोंको निमत्रण भेजा गया था, जिन्हें कि शिक्षकके रूपमें अुद्योग-शिक्षणका कुछ अनुभव है। राष्ट्रीय शिक्षाका कार्य करने-वाले मेरे साथी अिस नयी कल्पनाको अिस तरह सहानुभूतिपूर्वक ग्रहण कर लेंगे, यह खयाल तो स्वय मुझे भी नहीं था। यह योजना जब जाकिर हुसैन समिति द्वारा साकार और अधिक पूर्ण रूपमें जनताके आगे आयेगी, तब शिक्षा-शास्त्रियोंके विशाल वर्गको अिस पर विचार करनेके लिये जरूर निमत्रण दिया जायगा। जिन शिक्षा-शास्त्रियोंके पास सहायता दे सकनेवाली कुछ सूचनाअे हो, अुनसे मेरी प्रार्थना है कि वे कृपया अुन सूचनाओंको कमेटीके मंत्री श्री आर्यनायकम्के पास वर्धाके पतेसे भेज दें।

परिषद्में अंक वक्ताने जोर देकर यह कहा था कि छोटे-छोटे बच्चोंको तालीम देनेका काम पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियाँ ज्यादा अच्छा कर सकती हैं, और कुमारियोंकी अपेक्षा मातायें और भी अच्छी तरह कर सकती हैं। अंक दूसरी दृष्टिमें भी प्रो० शाहकी लाजिमी सेवाकी

योजनामें आनेकी अनुकूलता अुन्हे अधिक मिलती है। जिन देशभक्त महिलाओंके पास फुरसतका समय हो, अुनके लिये अेक सबसे बड़े सत्कार्यमें अपनी सेवा अर्पण करनेका यह बड़ा सुन्दर अवसर है, जिसमें सन्देह नहीं। लेकिन वे अगर तैयार हो, तो अुन्हें पूरी प्राथमिक शिक्षा लेनी पड़ेगी। आजीविकाकी तलाशमें लगी हुईी गरजमन्द बहने जिस कामको अेक बन्वा मानकर जिसमें आनेका विचार करती हो, तो अुससे कोअी मतलब निकलनेका नहीं। वे अगर जिस योजनामें आना चाहती हैं, तो अुन्हें शुद्ध सेवा-भावसे ही जिसमें पडना चाहिये और जिसे अपना जीवन-कार्य बना लेना चाहिये। वे यदि स्वार्थ-वृत्तिसे जिसमें पड़ेंगी, तो जिस काममें सफल नहीं हो सकेंगी और अुन्हे अत्यन्त निराश होना पड़ेगा। अगर भारतवर्षकी नस्कारी महिलाओं गाँवोंके लोगोंके साथ—और वह भी अुनके वच्चों द्वारा—अैक्य साधें, तो वे भारतवर्षके गाँवोंके जीवनमें अेक शान्त और सुन्दर क्रांति कर सकती हैं। क्या वे जिसके लिये तत्पर होगी ?

हरिजनसेवक, ६-११-३७

‘पश्चिमका अनुकरण नहीं’

[वर्धा-शिक्षा-परिपद्द द्वारा पास किये हुअे प्रस्तावो (देखिये प्रकरण १६ में) का अमल सरल वने और आगेके कदम अुठाना सुगम हो, जिस खातिर अेक व्यवस्थित शिक्षा-योजना तैयार करनेके लिअे यानी ‘अिन प्रस्तावोके आधार पर प्रातोके मन्त्री परिपद्दके प्रस्तावोका अमल कर सके, अभ्यासक्रमकी अैसी योजना तैयार करनेके लिअे’ परिपद्दने अेक कमेटी बनाअी थी। अिस कमेटीने डेढ-दो महीनेमें अपनी रिपोर्ट प्रकाशित की थी और अुसके थोडे समय वाद सिफारिशके तौर पर अेक विस्तृत अभ्यासक्रम बनाकर देशके सामने पेश किया था। अिस रिपोर्ट और अभ्यासक्रम दोनोको मिलाकर ‘बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा’ का नाम दिया गया था। अुसे पुस्तकके रूपमें छपाया गया था। गाधीजीने अुसकी जो प्रस्तावना लिखी थी, वह नीचे दी गअी है। अिसका शीर्षक गाधीजीने प्रस्तावनाके अन्तमें जो नीचेका वाक्य कहा था, अुस परसे दिया गया है “ किनी भी दृष्टिमें अिसे हम पश्चिमका अनुकरण नहीं कह सकते।” अिस वाक्यके सम्बन्धमें यहाँ अितना कह देना जरूरी है कि वर्धा-शिक्षा-परिपद्दमें अैसी अेक चर्चा चली थी कि क्या गाधीजीका यह विचार जया है? या अिसने मिलते-जुलते विचार पश्चिमके किसी शिक्षा-शास्त्रीने पेश किये हैं? गाधीजीने नीचेकी प्रस्तावनामें अिस प्रश्न सम्बन्धी अपनी कल्पनाके बारेमें कुछ अिगारा किया है, और अपने विचारके खान मुद्दे स्पष्ट कर दिये हैं।

— सं०]

मुझसे कहा गया है कि जिस पुस्तककी पहली (अंग्रेजी) अंक हजार प्रतियां विक्रि चुकी हैं। यह हकीकत हो जिन बातका साबित करती है कि डॉ० जाकिर हुसैनकी कमेटीने जिने "बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा" कहा है, वह हिन्दुस्तानमें और हिन्दुस्तानके शहर भी काफी दिलचस्पी पैदा कर रही है। लेकिन जिसे "देहाती दस्तकारियों द्वारा दी जानेवाली ग्रामीण राष्ट्रीय शिक्षा" कहना ज्यादा सही होगा, यद्यपि यह नाम अतना आकर्षक न होगा। 'ग्रामीण' कहनेमें अच्छे कहलानेवाली या अंग्रेजी शिक्षा अतमें नहीं आती। 'राष्ट्रीय' शब्द आज सत्य और अहिंसाको सूचिन करता है। 'देहाती दस्तकारियों द्वारा दी जानेवाली शिक्षा' में मतलब है कि जिन योजनाके बनानेवाले शिक्षकोंमें यह आशा की जाती है कि वे देहाती बच्चोंको अुनके अपने ही गांवोंमें किनी चुनी हुयी देहाती दस्तकारीके जरिये अैनी शिक्षा देंगे, जिनने अुनकी सभी शक्तियोंका पूर्ण विकास होगा और यह सारी शिक्षा अेक अैने चातावरणमें दी जायगी, जो अूपरसे लादे गये बन्धनों और बाधाओंसे मुक्त होगा। जिन दृष्टिसे सोचने पर यह योजना देहाती बच्चोंकी शिक्षामें अेक शक्ति ही है। किनी भी दृष्टिने जिने हम पश्चिमका अनुकरण नहीं कह सकते। यदि पाठक जिस हकीकतको अपने ध्यानमें रखेंगे, तो वे जिस नयी योजनाको ज्यादा अच्छी तरह समझ सकेंगे। क्योंकि जिने तैयार करनेमें कुछ अच्छे अे अच्छे शिक्षा-शास्त्रियोंने अपनी पूरी शक्ति लगायी है।

सेगांव, २८-५-३८

‘दिमाग ठीक है’

[वर्धा-शिक्षा-योजनाके प्रकाशित होनेके बाद उसके भाष्यके रूपमें आचार्य कृपलानीने अंग्रेजीमें ‘दि लेटेस्ट फेड’ (ताजा पागलपन) जैसा विनोदपूर्ण किन्तु आकर्षक नाम देकर अेक पुस्तक प्रकाशित की थी। गाधीजीने उसकी जो प्रस्तावना लिखी है, वह नीचे दी गयी है।

—सं०]

यह पुस्तक मैं शुरूसे अन्त तक देख गया हूँ। अनुभवमें आनेवाली अेक कमी जिससे पूरी होती है। जिसे मेरा ‘ताजा पागलपन’ कहा गया है — और वह भी शिक्षाके क्षेत्रमें। — उसके बारेमें जिज्ञासुओंके मनमें जो अनेक शकयें पैदा होती हैं, जिस पुस्तकमें उन सबका जवाब देनेका प्रयत्न किया गया है। आचार्य कृपलानीने कभी वर्ष तक शिक्षा-शास्त्रीके रूपमें काम किया है। उन्होंने जिस पुस्तकमें यह बतानेका प्रयत्न किया है कि जिस ‘पागल’ का दिमाग विलकुल ठीक है।

योजनाका हृदय

[डॉ० जॉन डी० वोअर अेक अमेरिकन पादरी हं और दक्षिण भारतकी अेक शिक्षा-मस्याके नचालक हं। अुनकी और गाधीजीकी वातचीतका वर्णन श्री महादेव देनाजीके 'वर्धाकी शिक्षा-योजना' नामक लेखमें यो दिया गया है। —सं०]

डॉ० डी० वोअरने कहा कि यह शिक्षा-योजना तो अुन्हें बहुत ही अच्छी लगी है, क्योंकि अुनकी जडमें अहिंसा है। पर अुन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि पाठ्यक्रममें अहिंसाको अितना कम स्थान दिया गया है।

“आपको जिम वजहने वह अितनी पसन्द आयी, वह बिलकुल ठीक है,” गाधीजीने कहा, “किन्तु सारा पाठ्यक्रम अहिंसा पर केन्द्रित नहीं किया जा सकता। यही जानना काफी है कि वह अेक अहिंसक दिमागसे निकली है। पर अुसमें यह नहीं मान लिया गया है कि जो अिसका स्वीकार करेंगे, वे अहिंसाको भी मानेंगे ही। अुदाहरणार्थ समितिके सारे सदस्य अहिंसाको जीवन-सिद्धान्तके रूपमें नहीं मानते। जैसे, अेक निरामिष-भोजी आदमीका अहिंसक होना जरूर नहीं है, वह स्वास्थ्यके कारण भी निरामिष-भोजी हो सकता है, अुसी प्रकार यह जरूरी नहीं कि जो भी कोअी अिस योजनाको पसन्द करें, अुन सबका अहिंसामें विश्वास होना ही चाहिये।”

डॉ० वोअर — “मैं कुछ अैसे शिक्षा-शास्त्रियोंको जानता हूँ, जो अिस योजनाको महज अिसीलिअे स्वीकार नहीं करेंगे कि अुसका आवार अहिंसात्मक जीवन-दर्शन पर है।”

गांधीजी — “मैं जानता हूँ। पर यो तो मैं भी जैसे कभी नेताओंको जानता हूँ, जो खादीको इसीलिये ग्रहण नहीं करते कि अुसका आधार मेरा जीवन-दर्शन है। पर अिसका क्या अिलाज है? अर्हिसा तो सचमुच अिस योजनाका हृदय है और यह मैं वडी आसानीसे सिद्ध कर सकता हूँ। पर मैं जानता हूँ कि यदि मैं अैसा कहूँ, तो अुसके विषयमे लोगोका अुत्साह बहुत कम हो जायगा। आज तो जो लोग अिस योजनाको पसन्द करते है, वे अिस तथ्यको मानते है कि करोडो लोग जिस देशमें भूखो मर रहे हो, वहाँ किसी दूसरी तरहसे वच्चोको पढा ही नहीं सकते। और यदि अिस चीजको जारी कर दिया जाय, तो देशमें अपने आप अेक नयी अर्थ-व्यवस्था अुत्पन्न हो जायगी। मेरे लिये तो अितना ही काफी है। जैसे कि काग्रेसवाले अर्हिसाको अपना जीवन-सिद्धान्त माननेके वजाय अुसे स्वाधीनता-प्राप्तिकी नीति भी मान लेते है, तो मैं अुतने ही से सतोष मान लेता हूँ। अगर सारा हिन्दुस्तान अुसे अपना ध्येय या जीवनादर्श मान ले, तो हम आज ही यहाँ प्रजासत्तात्मक राज्य कायम कर सकते है।”

डॉ० वोअर — “मैं समझ गया। पर अेक बात और है, जो मेरी समझमें नहीं आ रही है। मैं अेक समाजवादी हूँ और अर्हिसामें भी मेरा विश्वास है। अेक अर्हिसावादीकी हैसियतसे तो आपकी योजना मुझे बहुत पसन्द है। पर जब मैं समाजवादीकी दृष्टिसे अुस पर विचार करता हूँ, तो अैसा लगता है कि वह हिन्दुस्तानको ससारसे अलग कर देगी, जब कि हमें तो ससारके साथ घुल-मिल जाना है। और यह बात समाजवाद जितनी अच्छी तरहसे कर सकता है, अुतना और कोअी चीज नहीं कर सकती।”

“मुझे तो अिसमें कोअी कठिनाअी नहीं मालूम पडती,” गांधीजीने कहा, “क्योकि हम कोअी सारी दुनियासे नाता थोडे ही तोडना चाहते है। हम तो सभी राष्ट्रोके साथ खुला आदान-प्रदान रखेंगे, लेकिन जबरदस्तीसे लादा हुआ आदान-प्रदान तो बन्द करना ही

पड़ेगा। हम यह नहीं चाहते कि कोसी हमारा घोषण करे, न हम खुद ही किमी दूसरे राष्ट्रका घोषण करना चाहते हैं। जिस योजना द्वारा तो हम सब बालकोको उत्पादक बनाकर सारे राष्ट्रकी मजदूरी बढ़ल देना चाहते हैं, क्योंकि जिससे हमारा सारा सामाजिक डार्चा ही बढ़ल जायगा। लेकिन अिमका यह मतलब नहीं है कि हम नारी दुनियामे ही नाता तोड़कर नवसे अलग हो जाना चाहते हैं। जैसे राष्ट्र भी होंगे ही, जो कुछ चीजें अपने यहाँ पैदा न कर सकनेके कारण दूसरे राष्ट्रोंके साथ आदान-प्रदान करना चाहेंगे। अिममे कोसी शक नहीं कि अुन्हें अुन चीजोंके लिअे दूसरे राष्ट्रों पर अवलंबित रहना पड़ेगा। लेकिन जो राष्ट्र अुनकी जरूरतें पूरी करें, अुन्हें अुनका घोषण नहीं करना चाहिये।”

“लेकिन अगर आप अपने जीवनको जिस हद तक सादा बना लेंगे कि दूसरे देशोंकी वनी किमी चीजकी आपको जरूरत ही न हो, तो आप अपनेको अुनसे अलग कर लेंगे, जब कि मैं चाहता हूँ कि आप अमेरिकाके लिअे भी जिम्मेदार हो।”

“अमेरिकाके लिअे जिम्मेदार तो हम अिनी तरह हो सकते हैं कि न तो हम किमीका घोषण करेंगे और न अपना ही घोषण किमीको करने देंगे। क्योंकि जब हम अँना करेंगे, तो अमेरिका भी हमारा अनुसरण करेगा, और तब हमारे बीच खुले आदान-प्रदानमें कोसी कठिनायी नहीं होगी।”

“लेकिन आप तो जीवनको सादा बनाकर अुद्योगीकरणको खतम कर देना चाहते हैं।”

“अगर मैं ३ करोड़के बजाय तीस हजार आदमियोंसे काम करा कर अपने देशकी सारी जरूरतें पूरी कर सकूँ, तो मुझे अुममें कोसी आपत्ति न होगी, बगते कि अुसके कारण ३ करोड़ आदमी बेकार और काहिल न बन जायें। मैं यह जानता हूँ कि समाजवादी लोग

यन्त्रीकरणको जिस हद तक ले जायेंगे कि जिससे रोज अेक-दो घटेसे ज्यादा काम करनेकी जरूरत न रहे। लेकिन मैं ऐसा नहीं चाहता।”

“क्यों? अितसे तो अुन्हे अवकाश मिलेगा।”

“लेकिन अवकाश किस लिये? क्या हाँकी खेलनेके लिये?”

“न सिर्फ़ इसीलिये, वल्कि अुत्पादक और अुपयोगी दस्तकारियों आदि जैसे कामोंके लिये भी।”

“अुत्पादक और अुपयोगी दस्तकारियोंमें लगनेके लिये तो मैं अुनसे कह ही रहा हूँ। लेकिन यह अुन्हे आठ घटे रोज अपने हाथसे काम करके करना होगा।”

“तव तो निश्चय ही आप समाजको ऐसी स्थिति पर नहीं ले जाना चाहते, जिसमें हरअेकके घरमें रेडियो हो और हरअेकके पास अपनी मोटर गाडी रहे। अमेरिकन राष्ट्रपति हूवरने यह तजवीज सोची थी। वह तो चाहते थे कि हरअेक घरमें अेक ही नहीं, दो रेडियो हो और दो-दो मोटर गाडियाँ रहे।”

“अगर अितनी अधिक मोटरे हमारे पास हो जायें, तो फिर पैदल धूमने-फिरनेके लिये बहुत कम जगह रह जायगी, ” गावीजीने कहा।

“मैं आपसे सहमत हूँ। हमारे यहाँ हर साल ही मोटर-दुर्घटनाओंसे लगभग ४० हजार आदमी मरते हैं, और इससे तिगुनोंके अग-भग हो जाते हैं।”

“वह दिन देखनेके लिये मैं जीवित नहीं रहूँगा, जब हिन्दुस्तानके हरअेक गाँवमें रेडियो पहुँच जायेंगे।”

“पंडित जवाहरलालके ध्यानमें, मालूम होता है, पैदावारकी अिफरातकी बात रहती है।”

“मैं जानता हूँ। पर अिफरातसे क्या आशय है? लाखों टन गेहूँ नष्ट कर देनेकी क्षमता तो नहीं, जैसा कि आप लोग अमेरिकामें करते हैं?”

“वह पूंजीवादका प्रतिशोध है। वे अब गेहूँ नष्ट नहीं करते, बल्कि गेहूँ पैदा न करे जिसलिये मुन्हे पैसे दिये जा रहे हैं। अब तो लोग वहाँ अंक-दूसरे पर अडे फेंककर मन-बहुलाव करते हैं, क्योंकि अडोकी कीमत अब गिर गयी है।”

“यही तो हम नहीं चाहते। अफिरातसे अगर आपका यह मतलब है कि हरअेक आदमीके पास खाने-पीने और पहननेके लिये पर्याप्त भोजन और वस्त्र हों, अपनी बुद्धिको शिक्षित और सुसंस्कृत बनानेके लिये काफी साधन हों, तो मुझे सतोष हो जाना चाहिये। पर जितना मैं हजम कर सकता हूँ, धुससे ज्यादा भोजन पेटमें ठूसना पसन्द नहीं करूँगा, और जितनी चीजोका मैं अच्छी तरह उपयोग कर सकूँ, मुनसे ज्यादा चीजे मुझे रखनी ही नहीं चाहिये। पर मैं हिन्दुस्तानमें न गरीबी झा मुफलिसी चाहता हूँ, न मुत्तीवत और न गन्दगी।”

“लेकिन पंडित जवाहरलालने तो अपनी ‘आत्मकथा’ में यह लिखा है कि आप दरिद्रनारायणकी पूजा करते हैं और दरिद्रताकी खातिर ही आप दरिद्र रहनेकी सराहना करते हैं।”

“मुझे मालूम है,” गांधीजीने हेमने हुअे कहा।

हरिजनसेवक, १२-२-३८

क्रियाओंको, जिनमें कि हमारे कौमी झगड़े भी हैं, हमेशाके लिये मिटा मके। जिनके लिये हम अपना नारा ध्यान अहिंसा पर केन्द्रित करना होगा। हिटलर और मुसोलिनीके स्कूलोंका मूल बुद्देश्य हिंसा है। पर हमारा बुद्देश्य तो कांग्रेसके अनुसार अहिंसा है। जिससे हमें अपनी नमाम समस्याओंको अहिंसाके जरिये ही हल करना है। अपने गणितको, अपने विज्ञानको, अपने अतिहासको हम केवल अहिंसाकी दृष्टिसे देखेंगे और जिन विषयोंमें सम्बन्धित समस्याओं अहिंसाके ही रंगमें रंगी होगी। तुर्किस्तानकी सुप्रसिद्ध महिला बेगम हालिदा हानूमने जब जामिया मीलिया अस्लामियामें अपने भाषण दिये थे, तब मैंने कहा था कि इतिहास अभी तक राजाओंका और अजुके युद्धोंका वर्णन मात्र रहा है, पर भविष्यमें जो इतिहास बनेगा वह मानवताका होगा। वह इतिहास अहिंसाका ही हो सकता है, और है। फिर हमें शहरोंके बुद्घोग-वन्वोंको छोड़कर ग्राम-बुद्घोगोंकी ओर सारा ध्यान देना होगा। मतलब यह कि अगर हम अपने ७ लाख गाँवोंको जीवित रखना चाहते हैं, तो हमें गाँवोंकी दस्तकपरियोंका पुनरुद्धार करना होगा। और आप यकीन रखें कि अगर जिन बुद्घोगोंके जरिये हम शिक्षा दे सके, तो हम अक क्रांति पैदा कर सकते हैं। हमें अपनी पाठ्यपुस्तकें भी जिनकी बुद्घेयको सामने रखकर तैयार करनी होगी।

मैं चाहता हूँ कि मैं जो कुछ कहता हूँ, अजु पर आप अच्छी तरह गौर करे और जो बात आपको ठीक न लगे, अजु छोड़ दें। मेरी बातें हमारे मुसलमान भागियोंकी ठीक न लगे, तो वे अजु खुशीने नामजूर कर सकते हैं। मैं जो अहिंसा चाहता हूँ, वह सिर्फ अजुके साथके युद्ध तक ही सीमित नहीं है। मैं चाहता हूँ कि वह हमारे तमाम भीतरी सवाल और नमस्याओं पर भी लागू हो। सच्ची और सक्रिय अहिंसा तो तभी होगी, जब कि वह हिन्दू और मुसलमानोंकी जीवित अकताको जन्म दे सकेगी — असी अकता नहीं, जो अपना

आधार किसी आपसी भय पर रखती हो, मसलन्, हिटलर और मुसोलिनीके दरमियान हुआ सधि या पैक्ट।

हरिजनसेवक, ७-५-'३८

२

[वर्धासे छपनेवाले हिन्दुस्तानी तालीमी सघके मासिक 'नयी तालीम' को भेजा हुआ गाधीजीका सन्देश। —सं०]

नयी तालीमका नयापन समझना जरूरी है। पुरानी तालीममे जितना अच्छा है, वह नयी तालीममे रहेगा, लेकिन अुसमे नयापन काफी होगा। नयी तालीम अगर सचमुच नयी होगी, तो अुसका नतीजा (परिणाम) यह होना चाहिये कि हमारे अन्दर जो मायूसी (निराशा) है, अुसकी जगह अुम्मीद होगी, कगालियतकी जगह रोटीका सामान तैयार होगा, बेकारीकी जगह धन्धा होगा, झगडोकी जगह अेका होगा, और हमारे लडके-लडकियाँ लिखना-पढना जानेगे और साथ-साथ हुनर भी जानेगे, जिसकी मारफत वे अक्षरज्ञान हासिल करेगे।

अुत्तमानजमी, १४-१०-'३८

हरिजनसेवक, २८-१-'३९

३

[पूनामे अक्टूबर १९३९ में हुआ वुनियादी तालीम परिषद्^१को भेजा हुआ सन्देश। —सं०]

मेरी अुम्मीद है कि पूना-परिषद् नयी तालीमके नयेपनको पूरी तरह नजरमें रखकर ही चलेगी। जैसे रसायनी प्रयोगमें हम कम-ज्यादा नहीं कर सकते हैं, अैसे ही जिस प्रयोगमें समझना चाहिये।

^१ जिस परिषद्का आवश्यक विस्तृत वर्णन अंग्रेजी तथा हिन्दीमें One Step Forward — 'अेक कदम आगे' नामसे प्रकाशित हुआ

नयी तालीमका नयापन यह है कि कुछ भी तालीम ग्राम-बुधोगकी मारफत दी जाय। मामूली तालीममें ग्राम-बुधोग बढ़ानेसे काम नहीं होता है।

सैगांव, २८-१०-'३९

४

['प्रश्नोत्तरी' नामक लेखमें 'रचनात्मक कार्य करनेवालोंमें क्या क्या गुण होने चाहिये?' जिस प्रश्नका जवाब देते हुअे नयी तालीमके धारेमें गाधीजीने कहा]

नयी तालीमके बिना हिन्दुस्तानके करोडों बालकोंको शिक्षण देना लगभग असम्भव है, यह चीज सर्वसामान्य हो गयी कही जा सकती है। जिसलिये ग्रामसेवकको अुसका ज्ञान होना ही चाहिये। अुसे नयी तालीमका शिक्षक होना चाहिये। जिस तालीमके पीछे प्रौढ-शिक्षण अपने आप चला आयेगा। जहाँ नयी तालीमने धर कर लिया होगा, वहाँ वच्चे ही माता-पिताके शिक्षक बन जानेवाले हैं। कुछ भी हो, ग्रामसेवकके मनमें प्रौढ-शिक्षण देनेकी लगन होनी चाहिये।

हरिजनसेवक, १७-८-'४०

है। हरजेककी कीमत २० १-१२-० है। दोनों पुस्तके तालीमी नथ, वधति मिल सकती है। हरिजनसेवक (१७-८-'४०)में लिखते हुअे गाधीजीने कहा था "जो लोग तालीममें दिलचस्पी रखते हैं, अुन्हें जिसकी अेक प्रति रखनी ही चाहिये। मेरे लिये तो यह बडी तम्ल्त्रीकी बात है कि मेरी यह नवसे आखिरी कोशिश, हालांकि शायद मेरी यह आखिरी कोशिश नहीं होगी, करीब-करीब दुनियानरको पनन्द आयी है। अेक नालया लेखा देनकर अिन तजरवेकी आबिन्दा तरक्की बडी होनहार मालूम पडती है।" — स०

अेक मंत्रीका स्वप्न

“अगर आप प्रातीय सरकारों और लोगोंको बिस आशयका सदेश या सूचना दे मके कि तमाम स्कूलोंमें लडकों और लडकियोंके लिअे कतामी और मुनामी लाजिमी कर देनी चाहिये, तो मेरा विस्वान है कि थोडे ही गमयमें स्कूलोंके बच्चे खुद अपना बनाया हुआ कपडा पहनने लग जायेंगे। यह पहला कदम होगा। आपके आदरोंके विषयमें मेरी आज भी वैसी ही श्रद्धा है और मैं वह दिन देखनेकी आशा करता हूँ, जब हरअेक घर अपनी जरूरतका कपडा खुद बना लेगा, और हरअेक गाँव भी अपनी ग्राम-अुद्योग तथा शिक्षाकी योजनाओंके अनुसार केवल कपडेमें ही नहीं, बल्कि हरअेक जरूरी चीजके मन्वन्धमें स्वादलम्बी बन जायगा। आपकी तरह मैं भी यह मानता हूँ कि बिम देशमें सच्चा स्वराज्य तभी स्थापित हो सकता है, जब कि प्रातीय सरकार अथवा भारत-सरकारका बजट — जिसके पासे मिलानेके लिअे चालाकियाँ और करामातें करनी पडती हैं — ग्रामवासी जनताके बजटसे मेल खा जायेंगे।”

अुपर्युक्त पत्र अेक काग्रेसी मंत्रीने लिखा है। मेरे पास यदि सर्वस्वाधीन सत्ता हो, तो मैं कम-से-कम प्राथिमरी स्कूलोंमें तो कतामीको अवश्य लाजिमी कर दूँ। जिस मंत्रीने श्रद्धा हो अुसे अैसा करना चाहिये। हमारे स्कूलोंमें कितनी ही बेकार चीजोंको लाजिमी बना दिया जाता है। तब बिस अति अुपयोगी कलाको लाजिमी क्यों न बना दिया जाये? लेकिन लोकतन्त्रमें किसी चीजको, यदि वह विस्तृत रूपमें लोकप्रिय न हो, लाजिमी नहीं बना सकते। बिस तरह लोकतन्त्रमें अनिवार्यता नामकी ही होती है। वह

आलस्यको तो बुझा देती है, पर लोगोकी जिच्छा पर जोर-जबरदस्ती नहीं करती। अिस प्रकारकी अनिवार्यता शिक्षणकी अेक क्रिया है। मैं अिससे अेक हलका रास्ता सुझाता हूँ। सबसे अच्छे कातनेवाले लडके या लडकीको अिनाम दिलाना चाहिये। अिस प्रतिस्पर्से सब नहीं तो अधिकांश अिसमें भाग लेनेके लिये प्रेरित होंगे। किसी भी योजनामें यदि शिक्षकोकी खुद श्रद्धा न हो, तो वह सफल होनेकी नहीं। प्रातीय सरकारे अगर वुनियादी तालीमको स्वीकार कर ले, तो क्ताजी आदि शिक्षाक्रमके केवल अग ही नहीं, बल्कि शिक्षाके वाहन बन जायेंगे। वुनियादी तालीम अगर जह पकड ले, तो हमारी अिस पीडित भूमिमें छादी अवश्य नावंत्रिक और अपेक्षाकृत सस्ती हो सकती है।

हरिजनसेवक, २१-१०-'३९

२३

तकली बनाम खिलौने

[नीचेका प्रश्नोत्तर डॉ० सुशीला नय्यरके 'सेवाग्राम छादी-यात्रा' नामक लेखसे लिया गया है। वर्धा-पद्धतिमें क्रिया या प्रवृत्ति अुत्पादक होनी चाहिये, खिलौने वगैरा जैसी सिर्फ क्रीडात्मक नहीं — यह अेक महत्त्वका सिद्धान्त अिन प्रश्नोत्तरमें समाया हुआ है। और वह अिस पद्धतिकी अेक बहुत बडी नवीनता और विशेषता है। — स०]

प्र० — वुनियादी तालीमकी योजनामें तकली जो दाखिल की गयी है, वह आर्थिक अर्थात् स्वाथर्यके हेतुमें या शिक्षाकी दृष्टिमें ही ?

वु० — वुनियादी तालीमके कार्यक्रममें रखी हुयी किनी भी चीजके पीछे केवल अेक ही हेतु हो सकता है, और वह है शिक्षा। वुनियादी तालीमका हेतु हाथकी कारीगरीके वाहन द्वारा बालकोका शारीरिक, बौद्धिक और नैतिक विकास करनेका है। फिर भी मैं यह मानता हूँ कि यदि कोई योजना शिक्षाकी दृष्टिसे ठीक हो और

अुसका कुशलतासे अमल हो, तो आर्थिक दृष्टिसे भी वह ठोस सावित होगी। अुदाहरणार्थ हम अपने बालकोको मिट्टीके खिलौने बनाना सिखायें, जो बादमे तोड दिये जायें। अिससे भी अुनकी बुद्धिका विकास तो होगा ही। पर अिस तरह काम करनेमें अेक बहुत बडे महत्त्वके नैतिक सिद्धान्तकी अवगणना होती है। वह यह कि मनुष्यकी मेहनत और सामग्री कभी भी व्यर्थ नष्ट नहीं होनी चाहिये या अुनका अुपयोग अनुत्पादक तरीकेसे नहीं होना चाहिये। जीवनका हरअेक क्षण अुपयोगी तरीकेसे बिताना चाहिये, अिस सिद्धान्त पर जोर देना ही अुत्तम नागरिक तैयार करनेवाली शिक्षा है; और अैसी बुनियादी तालीम अनायास ही स्वाअरयी और स्वयंपूर्ण बन जाती है।

हरिजनवक्त्र, १९-५-'४०.

१४

अिसमें अंग्रेजीको स्थान नहीं

['देहातकी वनाम शहरकी' नामक टिप्पणी]

अेक शिक्षाशास्त्री लिखते हैं

“अगर आपने ध्यान न दिया, तो आप यह देखेंगे कि शहरमें बुनियादी शिक्षा अेक अैसा रूप धारण कर लेगी, जो देहाती क्षेत्रोंसे भिन्न होगा। मसलन्, अंग्रेजी दाखिल कर दी जायगी, जो मातृभाषाके लिअे अेक घातक बात होगी और लोगोंमें अेक प्रकारकी अूंआबीकी भावना आने लग जायगी।”

मुझे यह स्वीकार करना ही चाहिये कि मैंने अपनी योजनाकी कल्पना ग्रामवासियोंको सामने रखकर की थी, और जब मैं अुसे आगे बढा रहा था, मैंने जल्द यह बहा था कि शहरमें अिस योजनामें कुछ भिन्नताका रखना जरूरी होगा। यह अुल्लेख अुद्योगोंके बारेमें

था कि शिक्षाके माध्यमके रूपमें किस-किसका उपयोग किया जाय। प्राथमिक शिक्षामें अंग्रेजी स्थान पा सकती है, यह मेरा कभी खयाल नहीं था। जिस योजनाका मद्दब अभी केवल प्राथमिक अवस्थासे है। निस्सन्देह, प्राथमिक शिक्षा वगैर अंग्रेजीके मैट्रिकयुलेगनके बराबर कर दी गयी है। वच्चोंके ऊपर अंग्रेजी लादनेका अर्थ है अन्तके प्राकृतिक विकासको कुठित कर देना और भाष्यद अन्तकी मौलिकताको नष्ट कर डालना। किन्ती भाषाको सीखनेका अर्थ है, स्मरण-शक्तिको विकसित करनेका वुनियादी शिक्षण। शुरुसे ही अंग्रेजी सिखाना वच्चों पर अनावश्यक बोझ डालना है। मातृभाषाकी कीमत देकर ही वह अन्तसे सीख सकता है। शहर तथा देहात, दोनों ही जगहोंके वच्चोंके लिये मैं यह जरूरी मानता हूँ कि अन्तके विकासकी वुनियाद मातृभाषाकी मजबूत चट्टान पर रखी जाय। यह बात अभागे हिन्दुस्तानमें ही देखनेमें आती है कि असी स्पष्ट वस्तुको भी सिद्ध करना पडता है।

मेगाँव, २-९-'३९

हरिजनसेवक, ९-९-'३९

कुछ आपत्तियाँ

येक मुसलमान सज्जन लिखते हैं

“अधर चार महीनेसे बुर्दु सख्तवारोमें वर्धा-स्कीमके मुतल्लिक मुत्तलिफ राये निरुल रही है। आम तौरसे असा मालूम होता है कि रिपोर्टको किमीने न तो ध्यानसे पढा है, और न बुनियादी तालीमके विषयमें विचार ही किया है। अंतरान अिन बातों पर अुठाये गये हैं

(क) धार्मिक शिक्षाका बिल्कुल खयाल नही रखा गया है,

(ख) लडकों और लडकियोंको अेक साथ तालीम दी जावगी, और

(ग) भव अर्म-गजहदोंके लिखे समान आदरका भाव हदयगम कराया जायगा।

ये अंतरान बुर्दु सख्तवारोमें अे नकलिस्त किये गये हैं।”

सहशिक्षाके वारेमे यह बात है कि जाकिर हुसैन कमेटीने जिने लाजिमी नही बनाया है। जहाँ लडकियोंके लिअे अलग स्कूलकी माँग आयेगी, वहाँ राज्य यह अितजाम कर देगा। सहशिक्षाका प्रश्न छोड दिया गया है। समयके अनुसार वह अपना हल खुद निकाल लेगा। जहाँ तक मुझे पता है कमेटीके सब सदस्य अेकमतके नही ये। व्यक्तिगत रूपसे मेरा विचार यह है कि सहशिक्षाके विरोधमे जितने जोरदार कारण दिये जाते हैं, अुतने ही जोरदार अुसके पक्षमे भी दिये जा सकते हैं। और जहाँ कहीं यह प्रयोग किया जायगा, अुसका मैं विरोध नही करूँगा।

सब धर्मोंके लिअे समान आदरभाव सिखानेकी आवश्यकताके सबबमे जाती तौर पर मैं बहुत दृढ विचार रखता हूँ। जब तक हम अुस भाग्यशाली स्थिति तक नही पहुँच जाते, तब तक तमाम विभिन्न सप्रदायोंके बीच सच्ची अेकताका दृश्य मुझे नजर नही आता। अगर विभिन्न धर्मोंके वच्चोंको अिस प्रकारकी शिक्षा दी गयी कि अुनका धर्म दूसरे हरअेक धर्ममे बढा है और केवल वही सच्चा धर्म है, तो मेरा खयाल है कि अुनकी पारम्परिक मित्रताकी भावना बढनेमे यह चीज घातक होगी। अगर सङ्गचित भावना राष्ट्रमे फैल गयी, तो अिसका लाजिमी नतीजा यह होगा कि हरअेक फिरकेके लिअे अलग-अलग स्कूल होने चाहिये, जिनमें हरअेकको अेक दूसरेको हेच समझनेकी आजादी हो, या फिर धर्मका नाम लेना बिलकुल निषिद्ध ठहरा दिया जाय। अिस तरहकी नीतिका परिणाम अितना भयानक होगा कि अिसकी कल्पना भी नही की जा सकती। नीति या सदाचारके मूल-भूत सिद्धान्तोंकी, जो सब धर्मोंमें समान हैं, शिक्षा वच्चोंको जरूर देनी चाहिये, और जहाँ तक धर्मा-स्कीमके अनुसार चलनेवाले स्कूलोंका सबब है, अिस प्रकारकी शिक्षाको पर्याप्त धार्मिक शिक्षा समझना चाहिये।

हरिजनसेवक, १६-७-'३८

शिक्षकोंके कुछ प्रश्न

१

[हिन्दुस्तानी तालीमी सघके अव्यापन-मदिरमें आये हुअे शिक्षकोंकी गाधीजीके साथ जो वातचीत हुअी, अुसकी श्री प्यारेलालजीने 'वर्धा-शिक्षा-योजना' नामक लेखमें जो रिपोर्ट दी थी, वह बिस प्रकार है। —स०]

वर्धा-योजना और यात्रिक बुझोग

वर्धाके अध्यापक-शिक्षण-केन्द्रमें ७५ प्रतिनिधि आये थे। अुन्होंने गाधीजीसे कितने ही प्रश्न किये। पहले प्रश्नसे यह शका प्रकट होती थी कि वर्धा-स्कीम भविष्यकी कसौटी पर टिक सकेगी या नही, या वह महज अेक अस्थायी चीज है? बहुतसे वडे-बडे शिक्षाशास्त्रियोंका तो यह मत है कि अेक न अेक दिन व्यापक बुझोगीकरणके लिअे अिन दस्तकारियोंको स्थान खाली करना ही होगा। अेक अैसा समाज, जिसने कि वर्धा-स्कीमके अनुसार शिक्षा पायी होगी और जो न्याय, सत्य और अहिंसा पर आधार रखता होगा, क्या बुझोगीकरणके प्रबल प्रवाहमें वच सकेगा?

गाधीजीने जवाव दिया "यह कोअी व्यावहारिक प्रश्न नही है। हमारे तात्कालिक कार्यक्रम पर जिसका कोअी असर नही पडेगा। हमारे सामने प्रश्न यह नही है कि अबसे आगे आनेवाले जमानेमें क्या होने जा रहा है, सवाल तो यह है कि हमारे गांवोंमें जो करोडों लोग रहते हैं, अुनकी सच्ची आवश्यकता जिस बुनियादी तालीमकी स्कीमसे पूरी हो सकेगी या नही? मेरा खयाल यह नही है कि हिन्दुस्तानमें जिस हद तक कमी बुझोगीकरण हो जायगा कि

गांव रहेंगे ही नहीं। हिन्दुस्तानका अधिकांश भाग तो हमेशा गांवोंका ही रहेगा।”

कांग्रेस और वर्धा-योजना

“हालमें जो कांग्रेसके अध्यक्षका चुनाव हुआ है, उसके फल-स्वरूप अगर कांग्रेसकी नीतिमें परिवर्तन हुआ, तो बुनियादी तालीमकी स्कीमका क्या होगा ?” यह दूसरा प्रश्न था।

गांधीजीने बिमका जवाब यह दिया. “यह तो वेमोकेका नय है। कांग्रेस-नीतिमें अगर कोई हेरफेर हुआ, तो वर्धा-स्कीम पर उसका कोई असर नहीं पड़ेगा। उसका असर अगर पड़ेगा ही, तो बूंची राजनीतिक बातों पर ही पड़ेगा।” जिसके बाद उन्होंने कहा. “आप लोग यहां तीन हफ्तेके अभ्यास-क्रमका शिक्षण लेनेके लिये-आये हैं जिनमें कि आप अपने-अपने प्रातमें जाकर अपने विद्यार्थियोंको वर्धा-योजनाके अनुसार तालीम दे सकें। आपको यह श्रद्धा रखनी चाहिये कि जिस शिक्षा-पद्धतिसे जल्द हमारी आवश्यकताओं पूरी होगी।”

“अधोगोपीकरणकी भारी-भारी योजनाओं भले ही पैग की जायें, पर कांग्रेसका वाज हमारे सामने जो व्येय है, वह देशका अधोगोपीकरण नहीं है। दम्ब्रामीं कांग्रेसने जो प्रस्ताव पास किया था, उसके अनुसार उनका ध्येय तो ग्राम-अधोगोका पुनरुद्धार है। मेहनतने तैयार की हुयी अधोगोपीकरणकी किसी स्कीमके जरिये आप लोक-जाग्रति नहीं कर सकते। कोई भी स्कीम बनाते समय हमें अपने करोड़ों किसानोंको ध्यानमें रखना होगा। जिन स्कीमोंने उनकी आमदनीमें अंक पाबीनी भी वृद्धि होनेकी नहीं, जबकि चरखा-सय और ग्राम-अधोग-सय अंक सालके ही अरनेमें उनकी जेदोंमें लाजों रुपये पहुँचा देंगे। कांग्रेस वर्जिन क्रमेटी या मन्त्रि-मंडलोंमें चाहे जो परिवर्तन हों, मुझे तो जानी तौर पर कांग्रेसकी रचनात्मक प्रवृत्तियोंके लिये कौनी खतरा मालूम नहीं होता। हालांकि जिन प्रवृत्तियोंकी शुरुआत की तो कांग्रेसने ही थी,

पर एक लवे अरसेसे वे अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाये हुये है और अपनी अपयुक्तता अन्होने पूरी तरह साबित कर दी है। वुनियादी तालीम अिनकी अेक शाखा है। शिक्षा-मन्त्री भले ही बदल जायँ, पर यह तो रहेगी ही। असलिये जो लोग वुनियादी तालीममें दिलचस्पी रखते हैं, अुन्हे कांग्रेसकी राजनीतिके वारेमें परेशान होनेकी जरूरत नहीं। शिक्षाकी अिस नयी योजनामें कोअी अपने गुण होंगे, तो वह जीवित रहेगी, न होंगे तो आप ही खतम हो जायगी।

“लेकिन अिन प्रश्नसे मुझे सतोप नहीं होगा। अिनका वुनियादी तालीमकी स्कीममें कोअी भीषा सम्वन्ध नहीं है। ये प्रश्न हमे अुस दिशामें कुछ आगे नहीं ले जाते। मैं चाहता हूँ कि आप मुझे अिस योजनासे सीषा सम्वन्ध रखनेवाले प्रश्न पूछें, जिससे मैं अेक निष्णातकी तरह आपको सलाह दे सकूँ।”

केन्द्रवर्ती कल्पना

सभामें जानेसे पहले अेक भाअीने पूछा था

“क्या अिसके पीछे अैसी केन्द्रवर्ती कल्पना है कि जिसका तकलीके साथ सवध न साधा जा सके, अैसी कोअी बात शिक्षक विद्यार्थीसे न कहे?”

अिसका अुत्तर सभामें देते हुअे गाधीजीने कहा

“यह तो मेरी निन्दा है। यह सच है कि सारी शिक्षाका किसी वुनियादी अुद्योगके साथ सम्वन्ध जोडना चाहिये, अैसा मंने कहा है। आप जब किसी अुद्योग द्वारा ७ या १० वर्षके वालकको ज्ञान देते हो, तब शुरुआतमें अिस विषयके साथ अिनका मेल नहीं वैठायी जा सके, अैसे सब विषय आपको छोड देने चाहिये। रोज-रोज अैसा करनेसे, शुरुआतमें छोड़ी हुअी अैसी बहुतसी वस्तुओंका अनुसंधान अुद्योगके साथ जोडनेके रास्ते आप ढूँड निकालेंगे। अिस

तरह आप शुरूमें काम लेंगे, तो अपनी खुदकी और विद्यार्थियोंकी शक्ति बचा नकेगे। आज तो हमारे पास आधार लेने लायक कौसी पुस्तकें नहीं हैं न हमें रास्ता दिखानेवाले पहलेके दृष्टांत ही मौजूद हैं। जिसलिजे हमें बीरे-बीरे चलना है। मुख्य बात यह है कि शिक्षकको अपने मनकी ताजगी बनाये रखना चर्महमे। जिसका बुद्धोगके साथ मेल न बँटाया जा सके, अपना कौसी विषय आने पर आप निराश न हो, चीज न ओठे, बल्कि बुने छोड़ दे और जिनका मेल बैठ नके बुने बागे चलायें। संभव है कि कौसी दूसरा शिक्षक नहीं रास्ता ढूँढ निकाले और अनु विषयका बुद्धोगके साथ कैसे मेल बैठ नकता है, यह बता सके। और जब आप बहुतके अनुभवका संग्रह करेंगे तो वादमें आपको रास्ता बतानेवाली पुस्तकें भी मिल जायेगी, जिसने आपके पीछे आनेवालोंका काम अधिक सरल बन जायेगा।

“आप पूछेंगे कि जिन विषयोंका मेल न बँटाया जा सके, उनको टालनेकी क्रिया कितने समय तक की जावे? तो मैं कहूँगा कि जितनीभर। आखिरमें आप देखेंगे कि बहुतसी चीजें जो आप पहले शिक्षाक्रममें से छोड़ चुके थे, उनका आपने बुझने नमावेश कर लिया है। जितनी चीजोंका समावेश करने लायक था, उन सबका समावेश हो चुका है और आपने आखिर तक जिनको निकम्मी समझकर छोड़ दिया था, वे बहुत निर्रौब और छोड़ने लायक ही हैं। यह मेरा जीवनका अनुभव है। मैंने यदि बहुतनी चीजे छोड़ न दी होती, तो मैं जो बहुतनी चीजें कर सका हूँ वह नहीं कर सका होता।

“हमारी शिक्षामें जड़मूलसे परिवर्तन होना ही चाहिये। विनाशकी हाथ द्वारा शिक्षा मिलनी चाहिये। मैं कवि होता तो हाथकी पाँच अँगुलियोंमें रहीं हुयी अद्भुत शक्तिके बारेमें कविता लिख सकता। दिमाग ही सब कुछ है और हाथ-पैर-कुछ नहीं अपना आप क्यों मानते हैं? जो अपने हाथको शिक्षा नहीं देते, जो शिक्षाकी सामान्य ‘प्रणाली’ या रूढि में नै होकर निकलते हैं,

बुनका जीवन 'सगीतशून्य' रह जाता है। बुनकी सारी शक्तियोंका विकास नहीं होता। केवल पुस्तकीय ज्ञानमे वालकको अितना रस नहीं आता कि बुसका सारा ध्यान बुसीमें लगा रहे। दिमाग खाली शब्दोंसे थक जाता है और बच्चेका मन दूसरी जगह भटकने लगता है। हाथ न करनेके काम करते हैं, आँखें न देखनेकी चीजें देखती हैं, कान न सुननेकी बातें सुनते हैं और बुनको क्रमशः जो कुछ करना, देखना और सुनना चाहिये, उसे वे करते, देखते और सुनते नहीं हैं। बुन्हे सही चुनाव करना नहीं सिखाया जाता। और जिससे बुनकी शिक्षा कभी वार बुनका विनाश करनेवाली सिद्ध होती है। जो शिक्षा हमें अच्छे-बुरेका भेद करना और अच्छेको ग्रहण करना तथा बुरेको त्यागना नहीं सिखाती, वह शिक्षा सच्ची शिक्षा ही नहीं है।”

हाथ द्वारा मनकी शिक्षा

श्रीमती आशादेवीने पूछा “हाथ द्वारा मनको किस प्रकार शिक्षा दी जा सकती है, यह आप समझायेंगे ?”

गांधीजी “स्कूलमे चलनेवाले सामान्य पाठ्यक्रममें अेकाध बुद्योग जोड़ देना, यह पुरानी कल्पना थी। अर्थात् बुसमें हस्त-बुद्योगको शिक्षासे विलकुल अलग रखकर सिखलानेकी बात थी। मुझे यह अेक गभीर भूल लगती है। शिक्षकको बुद्योग सीख लेना चाहिये और अपने ज्ञानका अनुसंधान बुस बुद्योगके साथ करना चाहिये, जिससे वह अपने पसन्द किये हुअे बुद्योग द्वारा यह सारा ज्ञान विद्यार्थियोंको दे सके।

“कताओका बुदाहरण लीजिये। जब तक मुझे गणित नहीं आयेंगा, तब तक मैंने तकली पर कितने गज सूत काता या बुसके कितने तार हुअे या मेरे काते हुअे सूतका अक कितना है, यह मैं नहीं कह सकूंगा। अिसे करनेके लिये मुझे आंकड़े सीखने चाहिये और जोड़, बाकी, गुणा व भाग भी सीखने चाहियें। अटपटे हिसाब गिननेमे मुझे

अक्षरोका विस्तेमाल करना पड़ेगा। अतः विसर्ग ने मैं अक्षर-गणित सीखूंगा। जिसमें भी मैं रोमन अक्षरोके वजाय हिन्दुस्तानी अक्षरोके अपयोगका आग्रह रखूंगा।

“ फिर ज्यामिति लीजिये। तर्कलीकी चकत्तीमें अधिक अच्छा गोलाबीका प्रदर्शन और ब्या हो सकता है? जिस प्रकार मैं युक्लिडका नाम लिये बिना ही विद्यार्थीको वर्तुल या गोलाबीके बारेमें नत्र कुछ सिखा सकता हूँ।

“ फिर आप शायद पूछेंगे कि कताबी द्वारा बालकको इतिहास-भूगोल किस तरह सिखाये जा सकते हैं? थोड़े समय पहले ‘कपास — मनुष्यका इतिहास’ (Cotton — The Story of Mankind) नामक पुस्तक मेरे देखनेमें आती थी। जुने पढ़नेमें मुझे बहुत ही आनन्द आया। वह अनेक अपन्यास जैसी लगी। अमुके गृहमें प्राचीन बालका इतिहास दिया गया था। फिर कपाम पट्टे-महल किस प्रकार और कब बनी गयी, अमुका विकास किस तरह हुआ, अलग-अलग देशोंके बीच रूडीर्न व्यापार कैसा चलता है, आदि बस्तुओंका वर्णन था। अलग-अलग देशोंके नाम मैं बालकको सुनाऊंगा, साथ ही न्याभाविक रीतिमें अमु देशोंके इतिहास-भूगोलके बारेमें भी कुछ कहवा जाऊंगा। अलग-अलग समयमें अलग-अलग व्यापारिक नवियाँ किस-किसके राज्यकालमें हुईं? कुछ देशोंमें बाहरमें रूडी मँगानी पड़ती है और कुछमें कपडा बाहरमें मँगाना पड़ता है, अमुका ब्या कारण है? हरअके देश अपनी-अपनी उम्दके मुनाविक रूडी क्यों नहीं बुना सकता? यह चर्चा मुझे अर्थशास्त्र और इतिहासके मूलतत्त्वों पर ये जायगी। कपामकी अलग-अलग जानियाँ तोतमी है, वे किस तरहकी जमीनमें जुगनी हैं, अमुके रीति बुनाया जाय, वे रूडीमें प्राप्त की जा सकती हैं, बर्गना जानकारों में विद्यार्थीको दूंगा। अिस तरह नन्ही जाननेकी बात पढ़ने में आस्य इतिहास पढ़नेके बारे में इतिहास पर आऊंगा। वह कतनी सहा कम आती, अमुने हमारे उत्तरी-

बुद्धोगको किस तरह नष्ट किया, अंग्रेज आर्थिक अदृश्यसे हमारे यहाँ आये और अुसमें से राजनैतिक सत्ता जमानेकी आकाक्षा वे क्यों रखने लगे, 'यह वस्तु मुगल और मराठोके पतनका, अंग्रेजी राज्यकी स्थापनाका और फिर वापस हमारे जमानेमें जनसमूहके अुत्थानका कारण कैसे हुयी, यह सब भी मुझे वर्णन करके बताना पडेगा। जिस तरह जिस नयी योजनामे शिक्षा देनेकी अपार गुजाबिश है। और बालक यह सब अुसके दिमाग और स्मरण-शक्ति पर अनावश्यक बोझ पडे बिना ही कितना अधिक जल्दी सीखेगा।

“जिस कल्पनाको अधिक विस्तारसे समझा दूँ। जैसे किसी प्राणीशास्त्रीको अच्छा प्राणीशास्त्री बननेके लिये प्राणीशास्त्रके अलावा दूसरे बहुतसे शास्त्र सीखने चाहिये, अुसी प्रकार बुनियादी तालीमको यदि अेक शास्त्र माना जाय, तो वह हमें ज्ञानकी अनन्त शाखाओमे ले जाता है। तकलीका ही विस्तृत अुदाहरण लिया जाय, तो जो शिक्षक-विद्यार्थी केवल कातनेकी यात्रिक क्रिया पर ही अपना लक्ष्य अेकाग्र नहीं करेगा (जिस क्रियामें तो वेगक वह निष्णात होगा ही), बल्कि जिस वस्तुका तत्त्व ग्रहण करनेकी कोशिश करेगा, वह तकली और अुसके अग-अुपागका अभ्यास करेगा। तकलीकी चकत्ती पीतलकी और सीख (डडा) लोहेकी क्यों होती है, यह प्रश्न वह अपने मनको पूछेगा। जो असली तकली थी, अुसकी चकत्ती चाहे जैसी बनायी जाती थी। जिससे भी पहलेकी प्राचीन तकलीमे वाँसकी सलाखीकी सीख और स्लेट या मिट्टीकी चकत्ती अुपयोगमे ली जाती थी। अब तकलीका शास्त्रीय ढंगसे विकास हुआ है और जो चकत्ती पीतलकी और सीख लोहेकी बनायी जाती है, वह सकारण है। यह कारण विद्यार्थीको ढूँढ निकालना चाहिये। अुसके बाद विद्यार्थीको यह भी जाँचना चाहिये कि जिस चकत्तीका व्यास अितना ही क्यों रख जाता है, कम-अ्यादा क्यों नहीं रखा जाता? अिन प्रश्नोका सतोषजनक हल ढूँढनेके बाद जिस वस्तुका गणित जान लिया कि आपका

विद्यार्थी अच्छा विजीनियर बन जाता है। तकली अुसकी कामबेनु बनती है। जिसके द्वारा अपार ज्ञान दिया जा सकता है। आप जितनी शक्ति और श्रद्धासे काम करेगे, अुतना ज्ञान जिसके द्वारा दे सकेंगे। आप यहाँ तीन सप्ताह रहे हैं। अितने समयमें जिस योजनाके पीछे मर मिटने तकको तैयार होनेकी श्रद्धा आप लोगमें आ गयी हो, तो आपका यहाँ रहना सफल गिना जायगा।

“मैंने कताओका अुदाहरण विस्तारसे बतलाया है, जिसका कारण यह है कि मुझे अुसका ज्ञान है। मैं बढी होता, तो मेरे बालकको ये सब बातें बढीगिरीके मारफत सिखाता। अथवा कार्डबोर्डका काम करनेवाला होता, तो अुन कामके मारफत सिखाता।

“हमें सच्ची जरूरत तो अैमे शिक्षकोकी है, जिनमें नयानेया सर्जन करनेकी और विचार करनेकी शक्ति हो, सच्चा अुत्साह और जोश हो और रोज-रोज विद्यार्थीको क्या सिखायेगे, यह नोचनेकी शक्ति हो। शिक्षकको यह ज्ञान पुराने पोथोमें मे नहीं मिलेगा। अुत्ते अपनी निरीक्षण और विचार करनेकी शक्तिका अुपयोग करना है और हस्त-अुद्योगकी मददने जवान द्वारा बालकको ज्ञान देना है। जिसका अर्थ यह है कि शिक्षा-पद्धतिमें क्रांति होनी चाहिये। शिक्षककी दृष्टिमें क्रांति होनी चाहिये। आज तक आप निरीक्षको (निम्बेक्टरों)की रिपोर्टोंसे मार्गदर्शन पाते रहे हैं। आपने निरीक्षको पसन्द आये वँसा करनेकी विच्छा रखी है, ताकि आपकी नन्याके लिये अधिक पैसे मिले अथवा आपकी अपनी तनख्वाहमें बढती हो। पर नया शिक्षक अिम नबकी परवाह नहीं करेगा। वह तो कहेगा, ‘मैं यदि मेरे विद्यार्थीको अधिक अच्छा मनुष्य बनाऊँ और वँसा करनेमें मेरी नब शक्ति लगा दूँ, तो कहा जायगा कि मैंने अपना कर्तव्य पूरा किया। मेरे लिये अितना ही काफी है।’”

प्र० — जिस अध्यापन-मन्दिरमें आनेवाले शिक्षक-विद्यार्थियोंको पहले कोबी बुद्योग सिखाया जाय और फिर उस बुद्योग द्वारा शिक्षा किस तरह दी जाय, जिसका ठोस और स्पष्ट विवेचन उनके सामने किया जाय तो क्या ठीक न होगा? अभी तो मुन्हे यह कहा जाता है कि आप खुद सात बरसके लडके हैं, असी कल्पना करे और हरअक विषय बुद्योग द्वारा फिरसे सीखें। जिस तरह नबी पद्धतिमें कुशल बनकर शिक्षक बननेमें तो मुन्हे कबी वर्ष लग जायेंगे।

बु० — नहीं, बरसों नहीं लगेंगे। हम कल्पना करे कि शिक्षक जब मेरे पास आता है, तब उसको गणित, इतिहास और दूसरे विषयोंका कामचलाबू ज्ञान होता है। मैं उसको कौडंबोर्डकी पेंटी बनाना या कातना सिखाता हूँ। यह बुद्योग वह सीखता है, उस समय जिस बुद्योग द्वारा वह गणित, इतिहास और भूगोलका ज्ञान किस प्रकार पा सका होता, यह मैं उसको बताता हूँ। जिस तरह वह यह सीखता है कि अपने ज्ञानका बुद्योगके साथ कैसे मेल बैठाया जाय। असा करनेमें उसे अधिक समय नहीं लगना चाहिये। दूसरा बुदाहरण लीजिये। मान लीजिये कि मैं सात वर्षके अक लडकेके साथ बुनियादी तालीमके स्कूलमें जाता हूँ। हम दोनों कातना सीखते हैं और मैं अपने सारे पूर्वज्ञानका कताबीके साथ मेल बैठा लेता हूँ। उस लडकेके लिअे यह सब नया-नया है। ७० वर्षके पिताके लिअे यह सब पुनश्क्ति है, पर वह अपना पुराना ज्ञान नये ढगसे जमा लेगा। जिस क्रियाके लिअे अुमें थोड़े सप्ताहमें अधिक समय नहीं लगना चाहिये। जिस तरह यदि शिक्षक ७ वर्षके बालक जितनी ग्रहणशक्ति और बुत्कंठा नहीं बतायेगा, तो वह अन्तमें केवल यात्रिक कतबैया ही बन जायेगा और जिसमें अुमें नअी पद्धतिका शिक्षक बननेकी योग्यता नहीं आवेगी।

प्र० — मेट्रिक पास लडकेको आज कॉलेजमें जानैकी, बिच्छा हो, तो वह जा सकता है। जो बालक वुनियादी तालीमके पाठ्यक्रमको पढकर निकलेगा, वह भी क्या बिस प्रकार कर सकेगा ?

शु० — मेट्रिक पास होनेवाला लडका और वुनियादी तालीम पाया हुआ लडका — बिन टोमें से दूसरा अधिक अच्छा काम करके बता सकेगा, क्योंकि उसकी शक्तियुक्त विकास हो चुका होगा। कॉलेजमें जाते वक्त मेट्रिक पासको जैसी लाचारी मालूम होती है, वैसी उसे नहीं होगी।

प्र० — वुनियादी तालीमकी योजनामें दाखिल होनेके लिये बालककी बुद्धि कमसे कम सात वर्षकी होनी चाहिये, यह कहा गया है। यह बुद्धि काल-मर्यादाने नापी जाय या मानसिक विकाससे ?

शु० — कमसे कम औसत बुद्धि सात वर्षकी होनी चाहिये। पर कुछ बालक जिसमें अधिक बुद्धिके और कुछ कम बुद्धिके भी होंगे। जिसमें शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकारकी बुद्धिका विचार करना पड़ता है। एक बालकका ७ वर्षकी बुद्धिमें जितना शारीरिक विकास हो जाता है कि वह हस्त-बुद्धि चला सकता है। दूसरा बालक शायद ७ वर्षकी बुद्धिमें उतना न कर सके। अतः बिस बारेमें कोई निश्चित नियम नहीं बनाया जा सकता। तब बातोका विचार करके निर्णय करना पड़ेगा। आपके पूछे हुये बहुरंगमें प्रबन्धों परसे मालूम होता है कि आपमें से बहुतोंके मनमें शका भरी हुयी है। यह काम करनेका गलत रास्ता है। आपके मनमें दृढ़ श्रद्धा होनी चाहिये। हमारे करोड़ों बालकोको जीवनकी शिक्षा देनेके लिये वर्धा-योजनाकी शिक्षा ही मन्वी आवश्यक बस्तु है, अनी जो प्रतीति भरे मनमें है, वह आपके मनमें हो, तो आपका काम चमक सुटेगा। अनी श्रद्धा आपमें न हो, तो आपके अध्यापकोंमें कुछ कमी, होनी चाहिये। वे आपको दूसरा कुछ दे सके या न दे सके, तब भी जितनी श्रद्धा आपके मनमें पैदा करनेकी शक्ति तो बुद्धिमें होनी ही चाहिये।

शिक्षाकी पहलियाँ

प्र० — बुनियादी तालीमकी योजना गाँवोंके लिये है, जैसा माना जाता है। तो क्या शहरवालोंके लिये कोई रास्ता नहीं है? अन्हे पुरानी पद्धतिसे ही चलना पड़ेगा?

• अ०— यह सवाल प्रस्तुत है और अच्छा है। पर मैं उसका जवाब 'हरिजन' में दे चुका हूँ। जितना काम हाथमें लिया है, अतना पूरा कर दे तो बहुत है। हमने जो काम अुठाय़ा है, वही काफी बड़ा है। ७ लाख गाँवोंकी शिक्षाका प्रश्न हल कर सके, तो अभी तुरन्तके लिये अितना काफी है। वेशक, शिक्षा-शास्त्री शहरोंके लिये भी विचार करते हैं। पर हम गाँवोंके साथ-साथ शहरोंका प्रश्न भी अुठायेंगे, तो हमारी शक्ति व्यर्थ नष्ट हो जायगी।

प्र० — मान लीजिये कि किसी गाँवमें तीन स्कूल हैं और हरजेकमें अलग-अलग अुद्योग सिखाया जाता है। अब यदि अेक स्कूलमें दूसरेकी अपेक्षा शिक्षाकी अधिक गुजाअिश हो, तो बालकको अुनमें से किस स्कूलमें जाना चाहिये?

अ० — अेक गाँवमें अनेक अुद्योग नहीं सिखाये जाने चाहिये, क्योंकि हमारे ज्यादातर गाँव अितने छोटे हैं कि अुनमें अेकसे अधिक स्कूल रखना पुसायेगा नहीं। बड़े गाँवमें अेकसे अधिक स्कूल हो सकते हैं। पर वहाँ दोनोंमें अेक ही अुद्योग सिखाया जाना चाहिये। फिर भी जिसके बारेमें मैं कोई अटल नियम नहीं बनाना चाहता। जैसी बातोंमें जैसा अनुभव मिले, अुनके अनुसार चण्ना ही अच्छेसे अच्छा तरीका है। अलग-अलग अुद्योग विद्यार्थियोंको कितने पसन्द आते हैं और विद्यार्थियोंकी शक्तिका कितना विकास कर सकते हैं, अुनका निरीक्षण करना चाहिये। बल्पना यह है कि आप जो भी अुद्योग पसन्द करें, अुनमें से बालककी शक्तियोंका पूर्ण और अेक-ना विकास होना चाहिये। यह अुद्योग देहाती और अुपयोगी होना चाहिये।

प्र० — बड़ा होने पर यदि बालकका व्यवसाय दूसरा ही होनेवाला हो, तो वह सात वर्ष किसी हस्त-अधुद्योगको सीखनेमें क्यों विगाड़े? अदाहरणके लिये, शराफका लडका, जो बड़ा होने पर शराफ होनेवाला है, सात बरस तक कताजी करना क्यों सीखे?

अ० — यह प्रश्न नयी शिक्षा-योजनाके दारमें घोर अज्ञान प्रदर्शित करता है। वुनियादी तालीममें लडका केवल अधुद्योग सीखनेके लिये स्कूल नहीं जाता। वह स्कूलमें अधुद्योगके मारफत प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करनेके लिये, अपने मनका विकास करनेके लिये जाता है। मेरा यह दावा है कि जिस बालकने ७ वर्षका प्राथमिक शिक्षाका नया पाठ्यक्रम पूरा किया होगा, वह किसी सामान्य स्कूलमें ७ वर्ष पढे हुये बालककी अपेक्षा अधिक अच्छा शराफ बन सकेगा। सामान्य स्कूलमें जानेवाला बालक शराफीकी स्कूलमें जायगा, तो वहाँ उसे अच्छा नहीं लगेगा, क्योंकि उसकी सब शक्तियुक्त विकास नहीं हुआ होगा। पुराने वहम, जो जड़ जमाकर बैठे होते हैं, निकलने मुश्किल हैं। जिस नयी शिक्षा-योजनाका अर्थ अक्षरज्ञान और थोडा अधुद्योग — अिन दोका मिश्रण नहीं है, यह मुख्य बात मैं आप लोगोंके मनमें बिठो सका होऊँ, तो मेरा आजका काम सफल हुआ गिना जायगा। अधुद्योग द्वारा पूरी प्राथमिक शिक्षा देना ही जिस नयी योजनाका ध्येय है।

प्र० — हरअेक स्कूलमें अेकसे अधिक अधुद्योग सिखाना क्या ठीक नहीं है? सम्भव है वर्ष भर अेक ही अधुद्योग सीखनेमें बालक अुकना जायें।

अ० — कोअी शिक्षक अँसा मिले कि जिसके विद्यार्थियोंकी अेक महीना कातनेके वाद कताअीमें दिलचस्पी न रहे, तो मैं अुस शिक्षकको हटा दूँगा। जैमें अेक ही वाद्य पर सगीतके नये-नये स्वर निकल सकते हैं, वैसे ही शिक्षकके हरअेक पाठमें नवीनता भरी हुअी होनी चाहिये। अेक अधुद्योगसे दूसरे अधुद्योग पर — जिस तरह परिवर्तन करते रहनेसे बालककी स्थिति अेक शाखासे दूसरी शाखा पर

कूदनेवाले और कही भी स्थिर न बैठनेवाले बन्दर जैसी हो सकती है। पर मैंने अपनी चर्चामें बताया है कि शास्त्रीय तरीकेसे कताबी सिखानेसे कताबीके अलावा दूसरे अनेक विषय सिखाने पड़ते हैं। शुरुआत करनेके बाद थोड़े समयमें बालकको अपनी तकली और अट्टरन बना लेना सिखाया जायगा। अर्थात् शुरूमें कही हुयी बात मैं फिर कहता हूँ कि शिक्षक बुद्धोग सिखानेका काम शास्त्रीय वृत्तिसे करेगा, तो वह अपने विद्यार्थियोंको अनेक और विविध चीजे सिखायेगा। और ये सब विद्यार्थियोंकी सभी शक्तियोंके विकासमें मदद करेगी।

हरिजनबन्धु, ५-३-३९

२७

वर्धा-पद्धतिके शिक्षकोंसे

[२१ अप्रैल, १९३८ को वर्धामें विद्या-मन्दिर ट्रेनिंग स्कूलका बुद्धाटन करते हुये गाधीजीने हिन्दीमें नीचे लिखा भाषण दिया था।

—स०]

आज विद्या-मन्दिरके छात्रोंने पवित्र व्रत लिया है। यह व्रत बहुत कठिन है। जिसका पूरा होना बड़ा दुस्वार है। १५ रू० माहवार लेकर २५ वर्ष तक लगातार सेवा करनेका यह व्रत है। पाँच हजारसे अधिक अर्जियोंका आना यह जाहिर करता है कि हमारे देशमें बेकारी हद दर्जे तक पहुँच गयी है। कुछ लोग अुच्च अुद्देश्यसे काम करते हुये दाल-भात तक प्राप्त नहीं कर सकते। बहुतसे अपना पेट पालनेके लिये कोमी काम तक नहीं पा रहे हैं। आपका यह व्रत आत्म-त्यागका व्रत है। अगर आप अपनी प्रतिज्ञामें धनी साबित हुये, तो आप दुनियाके सामने अेक नया आदर्श अुपस्थित करेंगे। असफल हुये तो

जगतमें भेरी और श्री रविशंकर शुक्लकी निन्दा की जायगी। जिसलिजे यह अच्छा होगा कि ढीले-ढाले लोग अभीसे अलग हो जायें।

यह योजना पूरी तरहसे भारतीय योजना है। जिसके आदर्शका जन्म सेगाँवमें हुआ है। असली हिन्दुस्तान तो सात लाख गाँवोंमें बसता है, जो मेगाँवसे भी बहुत हीन दशामें है। मैं चाहता हूँ कि आप लोग जिन गाँवोंसे निरक्षरताको दूर भगा दे, ग्राम-निवासियोंके लिजे अन्न और वस्त्रके, साधन जुटावे, और सत्य तथा अहिंसा द्वारा स्वराज्य प्राप्त करनेका सन्देश गाँवोंमें पहुँचावे। यह जिम्मेवारी आपके ऊपर है। आपका यह धर्म है कि आप जिस भावनाको लेकर काम करें। मैंने तो काफी मननके बाद अपनी यह योजना पेज की है। यदि यह योजना असफल हुआ, तो जिसके लिजे अव्यापक दोषी ठहराये जायेंगे। दस्तकारीके जरिये भूमिति, अतिहास, भूगोल और गणितकी शिक्षा दी जायगी और छात्रोंके शरीर-अभ्यसे स्कूलका खर्च निकालनेका प्रयत्न किया जायगा।

हर हिटलर तेलवारके बल पर अपना अहंकार पूरा कर रहा है, मैं आत्माके द्वारा पूरा करना चाहता हूँ। विदेशी विचारों और आदर्शोंका आवरण निकाल फेंकिये, अपने आपको ग्रामवासियोंके साथ समरस बना दीजिये। पाश्चात्य जगत विनाशक शिक्षा दे रहा है, हमें अहिंसाके जरिये रचनात्मक शिक्षा देनी है। मगलमय भगवान् आपको शक्ति दे, जिससे आप वाञ्छित अहंकारको सफल बना सकें और आज जो व्रत लिया है, उसे पूरा कर सकें।

हरिजनमेवक, ३०-४-३८

योग्य शिक्षकोंकी कठिनायी •

[एक चीनी अध्यापक श्री ताओके साथ गांधीजीकी जो बातचीत हुयी, उसकी रिपोर्ट श्री महादेव देसाजीने 'चीनमें वर्धा-शिक्षण-योजना' नामक लेखमें दी थी। नीचेका हिस्सा अुनीमें से लिया गया है।

—सं०]

श्री ताओकी वर्धा-शिक्षण-योजनामें बड़ी दिलचस्पी थी। अुन्होंने पूछा "अिस योजनाका असली मुद्दा क्या है?"

"असली मुद्दा कोबी न कोबी ग्रामोद्योग है, जिसके द्वारा वच्चेका पूरा-पूरा विकास किया जा सकता है।"

लेकिन प्रो० ताओने कहा कि अिसमें अध्यापकोकी कठिनायी सामने आयेगी। गांधीजी अिस पर हँस पडे, क्योंकि हमारे सामने भी तो यही कठिनायी है। "आप ट्रेन्ड अध्यापकोको दस्तकारी सिखायेंगे या कारीगरोको अध्ययन-कलाकी शिक्षा देंगे?" प्रो० ताओने पूछा।

"औसतन हरअेक शिक्षित आदमीसे यह आशा की जा सकती है," गांधीजीने लिखकर जवाब दिया, "कि वह आसानीसे कोअी धन्दा सीख लेगा। क्योंकि आप जैसे किसी शिक्षित पुरुषको बढाई-गिरी जैसा कोअी धन्दा सीखनेमें जितना समय लगेगा, हमारे कारीगरोको आवश्यक सामान्य शिक्षा ग्रहण करनेमें अुसने कहीं ज्यादा वक्त लगेगा।"

"लेकिन", प्रो० ताओने कहा, "हमारे शिक्षित व्यक्ति तो बडे-बडे ओहदो और रुपयोके पीछे पडे हुअे हैं। अुंहे अिमका रस कैसे लगाया जा सकेगा?"

“अगर यह योजना ठीक है और शिक्षितोंके दिमागको पसन्द आयेगी, तो वह खुद ही अन्तके लिये आकर्षक बन जायगी और अिभ प्रकार शिक्षित युवकोंको स्वर्ण-प्रलोभनमे मुक्त कर देगी। हाँ, अगर शिक्षित युवकोंके पर्याप्त देशाभिमानको जिसने जाग्रत न किया तो यह जरूर असफल रहेगी। लेकिन हमारे लिये अेक सुविधा है। वह यह कि जिन्हे भारतीय भाषाओंमे शिक्षा मिली है, वे कॉलेजोंमें दाखिल नहीं हो सकते। यह बहुत मुमकिन है कि अुन्हे यह योजना आकर्षक प्रतीत होगी।”

हरिजनसेवक, २७-८-'३८

२६

श्रद्धा चाहिये

[मध्यप्रान्त और वरारकी म्युनिसिपैलिटियों और जिन्ना लोनल बोर्डोंके प्रतिनिधियोंकी अेक परिषद्में भाषण देनेके लिये गाधीजीमें विनती की गयी थी। परिषद्के अेक सदस्यने गाधीजीमे यह प्रश्न पूछा था कि “देशकी आर्थिक और राजनैतिक प्रगतिमें वुनियादी तान्त्रीयकी योजनासे क्या लाभ होगा ? ” गाधीजीने अपने भाषणमें अिती प्रश्न तक सीमित रखा। श्री महादेव देसायी द्वारा की हुयी भाषणकी रिपोर्ट नीचे दी जाती है। — स०]

आपने पूछने यह सवाल पूछा, अिनकी सत्तें तुनी है, अनेके पत्राजमें मेरा यह जहना ज्वाय अन्टा होगा कि प्राथमिक शिक्षाकी प्रगतान परति देशकी अर्थिक अुनक्तिग कोशी सवाअ तिन वरुण सून की गयी है। प्राथमिक शिक्षा पर जो रूम सने की जातो है अुनके अन्तमें सवकनो हूट नगी मिलना। पुराने जेमे हूट अिने-मिने मानव-सवायत जेमे अिसे सवायत अन्त अिधारे सन्मसद

मिल जाते हैं। जिससे प्राथमिक शिक्षा पर होनेवाली वरवादीका औचित्य सिद्ध नहीं होता। जिससे तो जिस दयनीय मिथ्या धारणाका ही दुःखद दर्शन होता है कि हिन्दुस्तानका कारोवार हम अंग्रेजी डिग्रीधारी या अंग्रेजीका ज्ञान रखनेवाले आदमियोंके वगैर चला ही नहीं सकते। शिक्षा-विभागके डाइरेक्टरोंने यह स्वीकार किया है कि प्राथमिक शिक्षाकी पद्धति अके भागी वरवादी है। विद्यार्थियोंका बहुत थोड़ा प्रतिशत ही अँची कक्षाओं तक पहुँचता है। जो शिक्षा दी जाती है, उसमें स्थायित्व जैसा कुछ नहीं है और विस्तृत ग्रामीण जिलाकोके अके छोटेसे हिस्से तक ही उसकी पहुँच है। मुदाहरणके लिये, मध्यप्रान्तके कितने गाँवोंमें ये प्राथमिक शालाएँ हैं? और गाँवोंमें जो प्राथमिक शालाएँ हैं, वे गाँवोंको किसी भी प्रकारका बदला नहीं देती हैं।

जिसलिये आपने मुझसे जो सवाल पूछा, दरअसल वह अठुता ही नहीं है। लेकिन नयी योजनाके लिये यह दावा किया जाता है कि वह आर्थिक दृष्टिसे मजबूत पाये पर खड़ी है, क्योंकि जो भी शिक्षा दी जायगी, वह दस्तकारियों द्वारा ही दी जायगी। यह शिक्षाके साथ किसी दस्तकारीको सिखलाना नहीं, बल्कि किसी दस्तकारीके द्वारा ही सारी शिक्षा देना है। जिसलिये मान लीजिये कि जो लडका बुनाजी द्वारा शिक्षा पाता है, वह निश्चय ही उस बुनकरके वनिस्वत अच्छा होगा, जो खाली कारीगर होता है, और यह कोजी नहीं कह सकता कि बुनकर आर्थिक दृष्टिसे अपयोगी नहीं होता। यह बुनकर बुनाजीके विविध औजारोंका और बुनाजीकी सभी कलाओंका जानकार होगा और पेगेवर बुनकरने माल भी अच्छा पैदा करेगा। पिछले कुछ महीनोंमें जिन पद्धतिके जो आर्थिक परिणाम स्याये हैं, उनका श्रीमती आशादेवी द्वारा सग्रहीत तथ्यों और आंकड़ोंमें अभ्ययन करना बेहतर होगा। ये परिणाम हमारी आशाओंमें अधिक हैं। स्वावलम्बी शिक्षासे मेरा मतलब यही है। जब मैंने 'स्वावलम्बी'

शब्दका प्रयोग किया, तो मेरी मजा यह नहीं थी कि बस पर लगायी जानेवाली सब रकम अुनीसे निकल आयेगी, बल्कि मेरा अभिप्राय तो सिर्फ यह था कि विद्यार्थी जो चीजे तैयार करेंगे, अुनने कमसे कम अव्यापककी तनह्वाह तो निकल ही आयेगी। दुनियादी शिक्षा-योजनाका आर्थिक रूप जिस तरह अपने आप सिद्ध हो जाता है।

जिसके बाद जिसका दूसरा पहलू भी है, और वह है राष्ट्रीय जाग्रतिका। मैं नहीं कह सकता कि ग्रामोद्योगो सबधी कुमारप्पा-कमेटीकी रिपोर्ट आपने पढी है या नहीं। प्रति व्यक्तिकी औसत आमदनीका परम्परागत अंक ७० रु० है, लेकिन अुन्होंने मिद्ध किया है कि मध्य-प्रान्तके गाँवोमे प्रति व्यक्तिकी औसत आमदनी ज्यादासे ज्यादा १२ से लेकर १४, २० साल तक ही है। दुनियादी तालीमके लिअे कर्तावी तथा अन्य ग्रामोद्योगोका जिस प्रकार चुनाव किया गया है कि ये ग्रामवालोकी जरूरते पूरी कर सकें। जिसलिअे जो लडके ग्रामोद्योगो द्वारा शिक्षा पाये, अुन्हें चाहिये कि अपनी शिक्षाका वे अपने घरोमे जहूर विस्तार करे। अब आप देखेंगे कि देहातवालोकी औसत आमदनी ग्रामोद्योगोका पुनरुद्धार करके आसानीसे दूनी की जा सकती है। अगर आप जनताके सेवक बन जायँ और नयी पद्धतिमें अनली तौरसे दिलचस्पी लेने लगें, तो जिला-बोर्डोमें होनेवाले अनेक झगडे-टटे भी खतम हो जायँगे। जब मैं जिस समामे आ रहा था, तो मुझे अेक अैमी आलाका पत्र मिला, जिसमें वच्चोने तीस दिन तक चार घण्टे रोज कताअी करके मोटे तौर पर ७५ रुपये कमाये। अगर तीस वच्चोने अेक महीनेमें ७५ रु० कमाये, तो हिन्दुस्तानके प्राथमरी स्कूलोके करोडो वच्चे कितना बमायेगें, जिसका हिम्नव जाप आसानीसे लगा सकते हैं।

और यह भी खयाल कीजिये कि जिन वच्चोमें जो आत्मविश्वास और मूझ पैदा होगी तथा साथ ही अुन्हें जिस बातका जो भान होगा कि वे देशकी आयमें वृद्धि करके अनमान बितरणकी समस्याको

हल कर रहे हैं, उसका क्या नतीजा होगा। जिससे अपने आप राजनैतिक जाग्रति होगी। जिन बच्चोंसे मैं आशा करूँगा कि जिन्हें स्थानिक मामलोंमें सब बातोंकी जानकारी होगी। रिज्वतखोरी, गन्दगी वगैराकी बात भी मालूम हो जायेगी और उसे कैसे दूर किया जाय, यह वे जान जायेंगे। मैं चाहूँगा कि जिस तरहकी राजनैतिक शिक्षा हमारे हरअंके बच्चोंको मिले। जिससे उनके अँचे अुठनेमें निस्सन्देह खूब मदद मिलेगी।

मैं समझता हूँ कि मैंने जिस बातको अच्छी तरह सिद्ध कर दिया है कि तालीमकी जिस प्रकारकी पद्धतिसे देशकी आर्थिक और राजनैतिक युन्नति जरूर होगी।

जितना कहनेके बाद मैं आपसे अंके प्रार्थना करूँगा। जब आप यहाँ आये हैं, तो मैं आपसे कहूँगा कि आप जिस शिक्षा-पद्धतिका अध्ययन करे और शुक्लजी तथा आर्यनायकम्जीको बतलाये कि आप जिसमें विश्वास लेकर जा रहे हैं या नहीं। मुझे तो निश्चय है कि अगर आप जिसकी अच्छी तरह आजमाविश करेंगे, तो तीन महीनेके अन्दर ही आप यह कह सकेंगे कि आपने स्कूलोंमें नवजीवन पैदा करके बच्चोंमें नया अुत्साह और नया जीवन भर दिया है। बीजको बढकर वृक्ष बननेमें वर्षों लग सकते हैं, लेकिन जिस शिक्षाके जिस बीजको आप बोयेंगे, उसके सीमित परिणाम कुछ महीनोंमें ही आप देख लेंगे। भारतीय जनताके सामने मैंने सबसे सादी चीजें रखी हैं— वैसे जो क्रांतिकारी परिवर्तन पैदा करेगी— जैसे खादी, मद्य-निषेध, गृह-अुद्योगका पुनर्जीवन और दस्तकारियों द्वारा शिक्षा। लेकिन जब तक आप मौजूदा स्थितिके नशेसे मुक्त न हो जायें, तब तक सादी बातें भी आप नहीं समझ सकेंगे।

आप कुछ भी करे, पर अपने आपको और हमें धोखा न दे। जिसलिये अगर जिस पद्धतिमें आपको अुत्साह न लगता हो, तो मेहरबानी करके वैसे साफ कह दीजिये।

अेक शब्द मकान व सामान वगैराके खर्चके वारेमें भी । जो अेक-मुश्त खर्च आप करेगे, वह अुस तरह वट्टे खाते नही जायगा, जैसे अिमारतो पर किया गया खर्च जाता है । आपको औजारो और स्टॉकके अूपर जो खर्च करना पडेगा, वह वरसो तक अुत्पादनके लिये अुपयोगी होगा । जिन चरखो, करघो और धुनकियो पर आप रुपया लगायेगे, वे विद्यार्थियोके अनेक समूहोंके लिये अुपयोगी होंगे । यात्रिक बुद्योगोमे अेकमुश्त तथा टूट-फूट और घिसाओका खर्च बहुत भारी होता है । लेकिन मौजूदा योजनामें अैसा कुछ नही है, क्योकि सुनियोजित ग्रामीण अर्थशास्त्रमें निस्सन्देह अैसे किसी खर्चकी जरूरत भी नही है ।

अन्तमें अेक बात और । मैं चाहता हूँ कि हमारी राजनैतिक पद्धतिमें जिस रद्दोवदलकी समावना है, अुससे आप विचलित न हो । मन्त्रि-मडल जैसे अस्तित्वमे आये थे, वैसे ही जा भी नकते हैं । यह ध्यान रखिये कि मन्त्रीपद यही समझकर स्वीकार किये गये थे कि यथासंभव कमसे कम समयकी सूचना पर अुन्हें छोड दिया जायगा । मन्त्री लोग यह जानते हैं कि अवसर आने पर अुन्हें सेक्रेटरियेटसे जेलकी ओर कूच करना पडेगा, और यह तय है कि अैसा वे बिना किसी पसोपेशके हँसते हुअे ही करेगे । लेकिन मन्त्रि-मडलोंके अूपर आपके काम और कार्यक्रमका दारोमदार रहनेकी कोअी जरूरत नही है । आपका आयोजित काम अगर ठोस बुनियाद पर आधारित है, तो चाहे जितने मन्त्रि-मडल आयें-जायें, वह तो कायम ही रहेगा । लेकिन यह अपने काममें आपके विश्वास पर निर्भर है । काअ्रेम जब तक अपने सत्य और अहिंसाके ध्येयके प्रति सच्ची रहेगी, तब तक अुसका काम कायम रहेगा । मैंने काअ्रेसकी कअी आलोचना की है और निर्दयताके साथ अुनकी कमियो पर प्रकाश डाला है, लेकिन मैं यह भी मानता हूँ कि जितने पर भी अुसका रोकड-पोता काफ़ी अच्छा है ।

जित्त सबके अलावा, मुझे आपको यह भी कह देना चाहिये कि हरअेक बातका दारोमदार आपके विश्वास और दृढ निश्चय पर है ।

अगर आपमें विच्छा हो, तो बुरसके लिये रास्ता निकलना निश्चित है। अगर आप यह निश्चय कर ले कि जिस योजना पर अमल करना ही है, तो फिर हरबेक कठिनायी दूर हो जायगी। जरूरत सिर्फ़ जिस बातकी है कि बुरसमें आपका जीवित विश्वास हो। हजारो आदमी जिस बातका ढोंग करते हैं कि अीश्वरमें बुरसका विश्वास है, लेकिन अगर वे जरासे अन्देशे पर भयभीत होकर भागे, तो बुरसका विश्वास जीवित विश्वास नहीं, बल्कि निर्जीव विश्वास है। जीवित विश्वास होने पर आदमी अपनी योजनाको पार लगानेके लिये आवश्यक ज्ञान और साधन जुटा लेता है। मुझे जिस बातकी खुशी है कि आपमें से हरबेक ऐसे विश्वासका दावा करता है। अगर सचमुच ऐसी ही बात है, तो आपका प्रान्त अन्य प्रान्तोके सम्मुख अेक सुन्दर बुदाहरण पेश करेगा।

हरिजनसेवक, ११-११-३९

३०

‘बौद्धिक विषय’ बनाम बुद्धोग

श्री नरहरि परीख लिखते हैं.

“खादी और नयी तालीमके विद्यालयोमें ‘बौद्धिक विषय’ शब्दका प्रयोग बहुत ही गलत तरीकेसे किया जाता है। अक्षर-ज्ञान भयवा पुस्तकका अध्ययन बौद्धिक विषय कहा जाता है। अमुक समय बुद्धोगके लिये है और अमुक समय बौद्धिक विषयके लिये — जैसा भी कहा जाता है। कुछ विद्यालयोमें तो यह भी कहते हैं कि अुन्हे दो घटे बुद्धोगमें लगाने होते हैं और तीस पढनेमें। किताबोके शुरू होनेसे ही यह माना जाता है कि पढायी आरम्भ हुगी। जिस विषय पर आप लिख तो, चुके हैं, लेकिन और भी लिखनेकी जरूरत है। बुद्धोगमें बुद्धिका

विकास तो होता ही है। जिसलिये यह नहीं कहा जा सकता कि बुद्धोग बुद्धिका विषय नहीं है। यह आवश्यक है कि आप जिसके सम्बन्धमें भी स्पष्ट रूपमें लिखें।”

लेखककी शिकायत विलकुल सच है। अक्षर-ज्ञान बुद्धिका विषय नहीं, वह तो स्मरण-शक्तिका विषय है। जिस तरह किसी पदार्थका चित्र देखकर उसे पहचानना सीखना बुद्धिका विषय नहीं, बुरी तरह अक्षरके चित्रके बारेमें है। लेकिन अक्षर-ज्ञानमें उसके अर्थका भी समावेश तो है ही। अनेक विषयोंकी किताबें पढ़ना और समझना भी अक्षर-ज्ञानमें शामिल है। यही बात बुद्धोगको लागू होती है। औद्योगिक ज्ञानका मतलब केवल कोसी घन्घा सीखना ही नहीं, बल्कि उससे सम्बन्धित शास्त्रको भी जानना है। जिस तरहके औद्योगिक ज्ञानसे बुद्धिका सिर्फ विकास ही नहीं होता, बल्कि अक्षर-ज्ञानके मुकाबले बहुत अधिक विकास होता है। अक्षर-ज्ञानमें तो बुद्धिके विकासके बदले स्मरण-शक्तिका ही विकास होता है। यह बात हम हाईस्कूल और कॉलेजोंसे निकले हुए सैन्डो विद्यार्थियोंके बारेमें कह सकते हैं। बुद्धोगके शास्त्र-ज्ञानके विषयमें ऐसा दुष्परिणाम होनेकी संभावना नहीं दीखती। अंगी सूरतमें अमुक समय अक्षर-ज्ञानके लिये और अमुक समय बुद्धोगके लिये, यह भेद — बुद्धोगके दर्जेको कम करनेकी यह प्रथा—दूर हो जाना चाहिये। क्योंकि यह भेद निकम्मा है और प्रायः जिससे नुकसान भी होता है। विद्यार्थियोंके मनमें यह भेद नमा जाता है और जिससे उनमें बुद्धोगके प्रति अदासीनता तथा पढ़नेके लिये मोह पैदा होता है। जिस तरह दोनों चीजें विगड़ जाती हैं। किताबका कीड़ा बननेसे ही कहीं बुद्धिका विकास नहीं होता — अज्ञान तो अज्ञान और विचार-शक्ति दोनों ही खराब होती है। बुद्धोगके प्रति अदासीनता होनेसे उसका ज्ञान अगूरी ही रहता है। प्रत्येक वस्तु अपने स्थान पर ही शोभा देती है। बुद्धोगके पूर्ण ज्ञानके लिये पुस्तकोंके अध्ययनकी आवश्यकता रहती ही है और उसके मिलमिलेमें जो कुछ पढ़ना पड़ता है, नो तो

समझकर ही पढा जा सकता है। जिस तरह अुसमें हानिके लिये अवकाश ही नहीं रहता। जिनको मैं समझा सकूंगा, अुनका पूर्ण विकास तो अुद्योग द्वारा ही करूँगा। जिसीका नाम नवी तालीम या सच्ची तालीम है। यह अपने समयानुसार तो आवेगी ही। फिर भी अुस समय तक अुद्योग और अक्षर-ज्ञानका भेद मिट ही जाना चाहिये। जिस तरह गणित, साहित्य अित्यादिका वर्ग होता है, अुसी तरह अुद्योगका भी होना चाहिये। सबको शिक्षाका अग ही समझना चाहिये। यह भ्रम तो निकल ही जाना चाहिये कि अुद्योग शिक्षा-क्षेत्रके बाहरका विषय है। जब तक यह भ्रम न मिटेगा, विद्यार्थियोंके विकासमें रुकावट होती रहेगी।

हरिजनमेवक, १२-४-'४२

३१

शरीर-भ्रम और बुद्धिका विकास

[वर्षामें तालीम लेने आये हुअे कुछ शिक्षकोंके साथ गाधीजीकी जो बातचीत हुअी, अुसका वर्णन देनेवाले श्री प्यारेलालके 'माप्ताहिक पत्र' में से यह हिस्सा लिया गया है। —सं०]

आपमें मे अेक भावीने मुझे अेक खत लिखा था। अुसमें यह शिक्षायत की गयी थी कि यहाँ हाथ-पैरकी मेहनत पर बहुत ही जोर दिया जाता है। मैं मानता हूँ कि अैसी मेहनत बुद्धिके विकासका अन्ट-ने-अच्छा जरिया है। हमारे मौजूदा स्कूल और कॉलेज ब्रिटिश ग्लानतकी तावतकी मजबूत बनानेके लिये हैं। आपमें मे जिन्होंने अुनमें शिक्षा पायी है, अुन्हें वे जरूर अच्छे लगेंगे। अुनमें पढनेवाले विद्यार्थियोंकी कौशी यह बोटे ही पूछना है कि वे रान्नों और पास्तानोकी

सफाई करना जानते हैं या नहीं? लेकिन यहाँ तो सफाई और स्वच्छता आपको बड़े बुनियादी चीजकी तरह सिखायी जाती है। भंगीके काममें भी कला तो है ही। 'तद् बुद्धि प्रणिपातेन परिश्रमेन सेवया' यानी बार-बार पूछकर और विनयके साथ आपको यह कला नीख लेनी चाहिये। बार-बार पूछनेमें बुद्धतता भी हो सकती है। जिसीलिखे ज्ञान प्राप्त करनेकी चाहके साथ 'नम्रताम्नी भी जरूरत रहती है। तनी बुद्धिके दरवाजे खुलते हैं।

अपयोगी शरीर-श्रमके जरिये हमारी बुद्धिका विकास होता है। बुद्धि तो बिसके बिना भी बढ़ सकती है, लेकिन वह बुद्धिका विकास नहीं, बिगाड होगा। कुनसे हम गुण्डे भी बन सकते हैं। बुद्धिके माय-साय आत्मा और शरीरका भी विकास होना चाहिये। जिसीलिखे यहाँकी तालीममें हाथ-पैरकी मेहनतको खान जगह दी गयी है। बुद्धिके माय आत्माका विकास होने पर ही बुद्धिका सदुपयोग होता है। वरना बुद्धि हमको दुरे रास्ते ले जाती है और भीखवरी देनेके बदले शाप बन जाती है। अगर आप बिस चीजको समझ लेगे तो आपको भेजनेवाली संस्थाओं आप पर जो खर्च कर रही हैं, वह बेकार न जायगा और आप अपने कामकी शान बड़ा मन्नेगे।

हरिजनसेवक, २२-९-'४६

नयी तालीममें डॉक्टरोंकी जगह

श्रीमती आशादेवी अपने कामोंमें लगी रहती है और मेरा वक्त बचा लेना चाहती है। फिर भी अकेले रोज अन्होंने मुझसे पाँच मिनट माँगे। मुनका कहना था कि नयी तालीमवालोंको थोड़ा डॉक्टरोंका ज्ञान देना चाहिये। जिसलिये क्या वे खुद चार-पाँच साल डॉक्टरोंको सीखनेमें दें ?

मैं समझ गया कि बहुत कोशिश करने पर भी पुरानी तालीमका असर अभी तक जड़से गया नहीं है। आखिर अन्होंने अेम० अे० की डिग्री अग्रजोंकी बनायी हुयी युनिवर्सिटीसे ली है न ? मेरे पास तो कोयी डिग्री नहीं है। जो थोड़ा ज्ञान हायीस्कूलमें पाया था, मेरी नजरमें अुनकी कोयी कीमत न थी। किसी जमानेमें कुछ थी भी, लेकिन वह बरसों पहले खतम हो गयी। और कुदरती अिलाजका रस तो मैंने काफी पिया है। मैंने अुनसे कहा "आप कहती हैं, हमारे वच्चोंकी पहली तालीम अपनी तन्दुरुस्ती कायम रखना और सब किस्मकी सफायीकी तालीम पाना है। मैं कहता हूँ, जिसीमें हमारी सब डॉक्टरों आ जाती है। हमारी तालीम करोड़ी देहातियोंके लिये है, अुनके कामकी है। वे कुदरतके नजदीक रहते हैं, फिर भी कुदरती जीवनके कानून नहीं जानते। जो जानते हैं, वे अुनका पालन नहीं करते। अुनका अँमा जीवन देखकर ही हमने नयी तालीम चलायी है। अुमवा ज्ञान हमको किताबोंसे कम ही मिलता है। जो मिलता है सो नाँ कुदरतकी किताबसे ही मिलता है। ठीक जिसी तरह हमें कुदरतसे डॉक्टरों भी सीखनी है। जिसका निष्कर्ष यह निकला कि अगर हम सफाजीमें नियम जाने, अुनका पालन करें और नहीं मुराक ले, तो

हम खुद अपने डॉक्टर बन जायें। जो आदमी जीनेके लिये खाता है, जो पाँच-महाभूतोंका यानी मिट्टी, पानी, आकाश, सूरज और हवाका मिश्र बनकर रहता है, जो अन्नको बनानेवाले अश्वरका दास बनकर जीता है, वह कभी बीमार न पड़ेगा। पडा भी तो अश्वरके भरोसे रहता हुआ शान्तिसे मर जायगा। वह अपने गाँवके मैदानो या खेतोमें मिलनेवाली जड़ी-बूटी या औषधि लेकर ही संतोष मानेगा। करोड़ो लोग अिसी तरह जीते और मरते हैं। अुन्होंने डॉक्टरका नाम तक नहीं सुना तो अुसका मुँह कहाँसे देखें? हम भी ठीक अैने ही बन जायें, और हमारे पास जो देहाती लडके और अुनके बड़े-बूढ़े आते हैं, अुनको भी अिसी तरह रहना सिखा दें। डॉक्टर लोग कहते हैं कि १०० में से ९९ रोग गन्दगीसे, न खानेका खानेसे और खाने लायक चीजोंके न मिलने और न खानेसे होते हैं। अगर हम अिन ९९ लोगोंको जीनेकी कला सिखा दें, तो बाकी अेकको हम भूल सकते हैं। अुसके लिये डॉ० सुशीला नय्यर जैसा कोअी डॉक्टर मिल जायगा। हम अुसकी फिकर न करें। आज हमें न तो अच्छा पानी मिलता है, न अच्छी मिट्टी और न साफ हवा ही मिलती है। हम सूरजसे छिप-छिपकर रहते हैं। अगर हम अिन सब बातोंको सोंचे और सही खुराक सही तरीकेसे लें, तो समझिये कि हमने जमानोंका काम कर लिया। अिनका ज्ञान पानेके लिये न तो हमें कोअी डिग्री चाहिये और न करोड़ो रुपये। जरूरत सिर्फ अिस बातकी है कि हमें अश्वर पर अ्रद्धा हो, सेवाकी लगन हो, पाँच महाभूतोंका कुछ परिचय हो, और हो सही भोजनका ज्ञान। अितना तो हम स्कूल और कॉलेजकी गिद्याके वनिस्वत खुद ही थोड़ी मेहनतसे और थोड़े समयमें हासिल कर सकते हैं।”

हरिजनमेवक, १-९-४६

चौथा भाग : कुछ महत्त्वके प्रयोग

३३

दस्तकारी द्वारा शिक्षा

श्रीमती आशादेवीने नीचे लिखे दिलचस्प आंकड़े भेजे हैं

“विहारके चम्पारन जिलेके बेतिया थानेमें बुनियादी तालीमकी जो २७ पाठशालाओं चल रही है, अन्होंने अप्रैल, १९४२ में अपने तीन साल पूरे किये हैं। अिन पाठशालाओंके दर्जे अेक, दो और तीनका सन् १९४१-४२ के सालका जो सालना आर्थिक लेखा तैयार हुआ है, वह बुनियादी तालीमके सभी कार्यकर्ताओंके लिये बहुत ही अुत्साहप्रद है। यह लेखा बुनियादी तालीमके मासिक मुखपत्र 'नयी तालीम' में ब्यौरे-वार प्रकाशित किया जायगा। यहाँ तो हम अुसकी मुख्य-मुख्य बातोंका सक्षिप्त सार ही बुनियादी तालीमकी प्रगतिमें रस लेनेवालोंकी जानकारीके लिये दे रहे हैं।

अिन २७ पाठशालाओंकी औसत हाजिरी पहले दर्जेमें ७०, दूसरे दर्जेमें ७६ और तीसरे दर्जेमें ७९ फी सदी रही थी। और हरअेक छात्रकी औसत कमाबी दर्जा अेकमें रु० ०-११-०, दर्जा दोमें रु० २-४-२ और दर्जा तीनमें रु० ६-१-१ रही। सभी पाठशालाओंके कुल ३९० बालकोने (औसत हाजिरीके अनुसार) दर्जा अेकमें १०,२६४ घटे काम करके रु० २६७-८-६, ३५६ बालकोने (औसत हाजिरीके अनुसार) दर्जा दोमें कुल १४,०८२ घटे काम करके

१३७

₹० ८०४-१३-८ और ३१९ बालकोंने (औसत हाजिरीके अनुसार) दर्जा तीनमें १४,३६२ घण्टे काम करके ₹० १९३५-१४-११ कमाये; यानी कुल १०६५ बालकोंने सारे सालमें ₹० ३००८-५-१ कमाये। अिन पाठशालाओंमें विद्याभियोगी अधिकसे अधिक औसत व्यक्तिगत कमायी दर्जा तीनमें ₹० १५-१२-०, दर्जा दोमें ₹० ६-२-० और दर्जा अेकमें ₹० २-१०-१ रही। चरखे पर अधिकने अधिक औसत गति दर्जा तीनमें फी घंटा ८८० तार और तकली पर फी घंटा २८१ तार रहीं। दर्जा दोमें चरखे पर फी घंटा ३५० तार और तकली पर फी घंटा २४२ तार रही; दर्जा अेकमें तकली पर फी घंटा १६४ तार रहीं।”

यहाँ ये आँकड़े आमदनी और उत्पातिका खयाल करानेके लिये नहीं दिये गये, यद्यपि अपने स्थान पर अिनका भी महत्त्व है। शिक्षा-संबंधी लेखमें उत्पाति और आमदनीका स्थान गौण ही होता है। यहाँ तो वे यह दिखानेके लिये दिये गये हैं कि नवयुवकोंकी शिक्षाके माध्यमके रूपमें दस्तकारीका औद्योगिक मूल्य कितना ऊँचा है। स्पष्ट है कि बूद्योग, सावधानी और तफ्तीलकी बातों पर ध्यान दिये बिना कितना काम कनी न हो सकता था।

हरिजनसेवक, २१-६-४२

कतामी और चारित्र्य

अखिल भारत चरखा-सघके कर्नाटक शाखाके मन्त्रीने मुझे जरायम पेना मानी जानेवाली जातियोकी वस्तियोके स्कूलोके कतामी-कामकी नीचे लिखी रिपोर्ट भेजी है

“जब हुवलीकी बस्तीके सचालक रेवरेंड आर० अने० अुशर विल्सनने और बस्तीकी प्रमाणित शालाकी मुख्य अध्यापिका मिस जी० डब्ल्यू० त्रिस्कोने अखबारोमें देखा कि अखिल भारत चरखा-सघकी-कर्नाटक शाखाने बीजापुर और गदगकी बस्तियोमें देकारोको कालना-पीजना सिखानेके लिये शिक्षक भेजे है, तब अुन्हें लगा कि हुवलीकी बस्तीमें भी यह प्रयोग करके देखना चाहिये। रेवरेंड विल्सन और मिस त्रिस्कोके अुत्साह और अुत्सुकताके कारण शाखाने हुवली बस्तीका काम भी अुठा लिया।

“अुन लडकोमें, जिनको कच्ची कैदकी सजा दी जाती है, हमने काम शुरू किया। अिस कच्ची कैदमें आठ और सोलह सालके बीचकी अुम्रके कुल ३३ लडके है। लडकोको कच्ची कैदमें अुनके सरक्षक या पुलिस रख जाते है, ताकि अुनकी देखरेख रखी जाय। लडकोको वहाँ रखनेका कारण आम तौर पर अुनका विचित्र बर्ताव या छोटी-मोटी चोरियाँ करनेकी आदत होती है। व्यवस्थापकोको अिन लडकोको सीधा रखनेका काम कठिन लगता था। अुनमें से कमी लडके तो भाग जाते थे और अुनका पीछा करना पड़ता था और दूँद-दूँदकर वापस कच्ची कैदमें रखना पड़ता था। अिन लडकोको अुहरमें प्राथमिक

या दूसरे स्कूलोंमें नहीं भेजा जा सकता था, क्योंकि हमेशा यह डर रहता था कि वे भाग जायेंगे। वस्तीके सचालक कौमी असा काम नहीं ढूँढ सके थे, जो बिन लडकोंके शरीर और मनको काममें लगाये रखे।

“अखिल भारत चरखा-संघने बिन लडकोंको बुधोग सिखानेके लिये अके शिक्षक नियुक्त किया। अुसने साढे तीन महीने तक लडकोंको सिखाया। स्त्री साफ करना, पीजना, कातना सब आध्र-पद्धतिसे होता है। यह काम सिखानेके लिये बडे लडके—१४ मे १६ सालकी अुम्रके—चुने गये थे। हरअक लडका २५ से ३० अकका सूत १२०० गजसे लेकर १५०० गज तक रोज कातता है। कच्ची कैदके व्यवस्थापकने मुझे बताया है कि जवसे ये लडके कुछ मेहनताना लेकर नियमित रीतिसे काम करने लगे है, अुनके वर्ताव और ढगमे काफी सुधार हुआ है। मिस त्रिस्कोका पत्र खुद सब कुछ वर्णन करता है। अुसमें कुछ और जोडनेकी म आवश्यकता नहीं समझता। वह पत्र अिमके साथ है।”

मुख्य अध्यापिका मिस त्रिस्कोका मुझे लिखा हुआ पत्र नीचे दिया जाता है

“अखिल भारत चरखा-संघकी ओरसे मुझे कहा गया है कि हमारे प्रमाणित स्कूलमें जो कताबीका काम होता है, अुमके बारेमें मैं आपको बताऊँ।

१ हमने कताबीका क्लास १५ जनवरी, १९४० को शुरू किया था।

२ लडकोंकी अुम्र १४ से १६ साल तककी है। अुन्हें कातनेमें कितना आनन्द आता है, यह देखकर हमें बहुत आश्चर्य हुआ।

३ जिससे पहले वे लोग यो ही बिना किसी खास कामके बैठे रहते थे, क्योंकि हम लोग महँगे अद्योग शुरू नहीं कर सकते थे। अब वे लोग प्रसन्न हैं। खूब काममें लगे रहते हैं। भागनेका अब अुनका जी नहीं करता। ४-५ घण्टे काम करके वे लोग रोज दो आने, सवा दो आने कमा लेते हैं। कताबीका काम शुरू करनेके लिये निजी जेबसे जो पैसा दिया गया था, वह पैसा ये लोग वापस दे रहे हैं। थोडा-सा पैसा अुनके हाथमे दिया जाता है, बाकी अुनके नाम जमा कर दिया जाता है, ताकि जब वे लोग यहाँसे जायें तो अुनकी जेबमें कुछ पैसे हो। यह काम लडकोमें चूँकि अितना सफल हुआ है, इसलिये, हमने लडकियोकी प्रमाणित झालामें भी जिस हफ्तेसे जिसे शुरू कर दिया है। हमें लगा कि आपको जिस खबरसे खुशी होगी, जिसलिये मैं यह पत्र लिख रही हूँ और जिसके साथ कताबी करनेवाले लडकोका फोटो भी भेज रही हूँ। वे लोग कितने प्रसन्न हैं, यह देखकर आपको खुशी होगी।”

कताबीमें मनको स्थिर करनेका जो गुण है, अुसके अूपर लिखे वर्णनका समर्थन करनेवाले काफी प्रमाण मौजूद हैं। आशा है जिस त्रिस्को समय-समय पर मुझे अपने कामकी रिपोर्टें भेजती रहेगी।

हरिजनसेवक, २४-८-४०

बिहार प्रान्तकी शालाओं

['रेगिस्तानमें भीठे पानीका चोता' नामक टिप्पणी]

बुनियादी तालीमके वारेमें सरकारी अधिकारियोंकी विरोधी किन्तु पूर्ण विचारके बिना की हुयी टीकाओंके रेगिस्तानमें बिहारके गवर्नरके सलाहकार मि० जी० आर० जे० आर० कजिन्सने हिन्दुस्तानी तालीमी संघके मन्त्री श्री आर्यनायकम्के नाम भेजे अपने पत्रमें बिहारके बुनियादी तालीमके स्कूलोंकी जो नीचे लिखी ब्दर की है, वह सचमुच प्रसन्न करनेवाली है

“मूसलाघार वर्षाके कारण बुनियादी तालीमके स्कूलोंका निरीक्षण करनेके मेरे कार्यक्रममें विक्षेप पडा, बिसने मुझे अफसोस हुआ। परन्तु मैंने २७ में से १८ स्कूलोंके शिक्षक और विद्यार्थियोंमें मिल सका—६ स्कूलोंके शिक्षकों और विद्यार्थियोंको वृन्दावन-रामपुरवामें और १२ स्कूलोंके शिक्षकों और विद्यार्थियोंको चोबेटोला-भरुफियामें। वहाँ मैंने जो कुछ देखा सुनमें मुझे खूब दिलचस्पी पैदा हुयी। अलबत्ता, बिनके मातो वर्गोंका अभ्यास पूरा हुअे बिना बिस प्रयोगकी सच्ची कीमत हम नहीं आंक सकते। परन्तु विद्यार्थियोंकी स्वच्छता, बुद्धिमत्ता तथा अपने काममें अट्टे आनेवाला स्पष्ट आनन्द देखकर मुझ पर गहरा असर हुआ। मुझे विदवास है कि हम नहीं दिशामें आगे बढ़ रहे हैं। और बुनियादी तालीमका नंपूर्ण पाठ्यक्रम पूरा करनेवाले १४ वर्षके बालक अन्य सामान्य स्कूलोंके पाठ्यक्रमके अनुसार अभ्यास करनेवाले अतनी ही बुझके बालकोंके मुकाबले कमजोर नहीं निकलेगे।

“ जिस पर मैं सबसे अधिक जोर देता हूँ, असा अंक खास आशास्पद लक्षण यह है कि वे स्कूल ग्रामवासियोंकी शुभेच्छा और दिलचस्पी पानेमें सफल हुअे हैं, जिसमें कोभी शक नहीं । और जहाँ तक ये कायम रखे जा सकेंगे, वहाँ तक प्रयोग सफल हुअे बिना रह ही नहीं सकता । चोबेटोला-पशुक्रियामें जमीन-मालिकों तथा ग्रामवासियोंने स्कूलके लिये सुन्दर क्रीडागण बनानेमें, रास्ते तैयार करनेमें और बालसेना — जो मेरी देखी हुअी बालसेनाओंमें सबसे बड़ी थी — के लिये आवश्यक सामग्री जुटानेमें, और खासकर गाँवके बालक नियमित रूपसे स्कूलमें जायें, असा आग्रह रखनेमें जो प्रजाहितकी भावना बतलायी है, वह अतिशय प्रशंसनीय है । और मुझे यह आश्वासन दिया गया है कि जिनकी मैं मुलाकात नहीं कर सका, उन दूसरे स्कूलोंमें भी इसी प्रकारकी प्रजाहितकी भावना दिखलायी जाती है । मुझे विश्वास है कि ग्रामवासियोंके प्रयत्नोंका योग्य फल मिलेगा और गाँवोंके भावी बालक जिन स्कूलोंमें आजके सामान्य शिक्षणके अलावा अैसे मानसिक चपलता और शारीरिक निपुणताके गुण तथा स्वास्थ्य और स्वच्छता प्राप्त करेंगे, जिनके कारण भूतकालकी अपेक्षा भविष्यके गाँव ज्यादा तन्दुरुस्त, ज्यादा आकर्षक और ज्यादा सस्कारी बनेंगे । ”

हरिजनबन्धु, १-३-'४२

मेरी अपेक्षा

['अंक हलका प्रसंग' नामक टिप्पणीमें से]

श्री आर्यनायकम् सेवाग्राम स्कूलकी सातवी कक्षाके विद्यार्थियोंको गांधीजीके सामने लाये। जिन सब लड़कोने सेवाग्रामकी बुनियादी शालाका पाठ्यक्रम लगभग पूरा किया है। ये सब सेवाग्राम तथा आसपासके गांवोंके हैं। जिनमें से अंक लड़केने तो गांधीजीसे यह पूछनेकी हिम्मत भी की कि सात वर्ष बुनियादी तालीमकी स्कूलमें पढनेके बाद अुत्तमें से १४ वर्षकी अुत्तके किस प्रकारके लड़के निकलनेकी आप अपेक्षा रखते हैं ?

अुत्तके जवाबमें गांधीजीने कहा .

स्कूलने यदि विद्यार्थियोंके प्रति अपना पूरा फर्ज अदा किया होगा, तो १४ वर्षकी अुत्तके लड़के सच्चे, निर्मल और तन्दुरुस्त होने चाहिये। वे अुत्तकी बुद्धिके होने चाहिये। अुत्तके दिमाग तथा हाथ अंकसे विकसित होने चाहिये। अुत्तमें छलकपट नहीं होगा। अुत्तकी बुद्धि तीक्ष्ण होगी, पर वे ऐसे कमानेकी चिन्तामें नहीं पडेंगे। जो कुछ प्रामाणिक काम अुत्तमें मिल जाय, अुत्त वे कर सकेंगे। वे शहरमें जाना नहीं चाहेंगे। वे स्कूलमें सहयोग व सेवाके पाठ सीखे होंगे। वसी ही भावना वे अपने आसपासके लोगोंमें प्रकट करेंगे। वे भ्रिखारी या परोपजीवी कमी नहीं बनेंगे।

हरिजनबन्धु, १५-९-'४६

म्युनिसिपैलिटियाँ और प्राथमिक शिक्षा

['म्युनिसिपल समस्याओं' नामक लेखमें से]

[२८ जनवरी, १९३९ को गुजरातकी म्युनिसिपैलिटियो और लोकल बोर्डोंके लगभग दोसी कांग्रेसी प्रतिनिधियोने गांधीजीसे वारडोलीमें मिलकर दोनो सस्थाओकी शिक्षण-प्रवृत्तिके बारेमें कुछ प्रश्न किये थे। प्रश्नोत्तरोकी श्री प्यारेलाल द्वारा ली हुयी रिपोर्टमें से नीचेका भाग दिया गया है — सं०]

खेडा जिलेके एक प्रतिनिधिने शिकायत करते हुये कहा "लोकल बोर्डोंकी ओरसे चलनेवाली प्राथमिक शालाओमें वर्धा-योजना दाखिल करना हमें तो बहुत पसन्द होगा। लोकल बोर्ड जिसके लिये तैयार हैं। लेकिन डिन्स्पेक्टर और शिक्षा-विभागके बड़े अधिकारी अभी तक पुरानी लकीर पर ही चलना चाहते हैं। मुनमे वर्धा-शिक्षा-योजनाके सिद्धान्तोंके प्रति श्रद्धा नहीं पैदा हुयी है। जिस कठिनायीको हम कैसे दूर करें ? "

गांधीजी "जिससे मुझे कोयी आश्चर्य नहीं होता। जिसके विपरीत, यदि शिक्षा-विभागके बड़े अधिकारियोंकी श्रद्धा वर्धा-योजनामें एकदम बैठ जाय तो मुझे जरूर आश्चर्य होगा। यह श्रद्धा तो अनुभवसे ही पैदा होगी। जिस बीच में अितना ही कह सकता हूँ कि जहाँ अच्छा हो वहाँ रास्ता मिल ही जाता है। शिक्षा-मन्त्री यदि शिक्षा-विभागके डायरेक्टरको यह आदेश दें कि वर्धा-योजनाका अमल करनेवाली शिक्षा-सस्थाओको जितनी हो सके मदद करे, तो

में नहीं मानता कि जिसमें कोअी वैधानिक कठिनाअी रास्तेमें आयेगी। मध्यप्रान्तके मन्त्रि-मंडलको शिक्षा-विभाग द्वारा अपनी अिच्छा पूरी करानेमें कोअी कठिनाअी नहीं हुअी। लेकिन यदि कोअी वैधानिक कठिनाअी मालूम हो, तो अुसका कानूनी अिलाज किया जा सकता है।”

प्रश्न “हमारी प्रौढ-शिक्षाकी योजनामें अ्येय अक्षरज्ञानके प्रचारका होना चाहिये या ‘अुपयोगी ज्ञान’ देनेका? स्त्रियोंकी शिक्षाका अ्येय क्या हो?”

गार्गीजी — “जो अघेड अुमरके हो गये हैं और कोअी अघा करते हैं, अुन्हें पढना-लिखना सीखनेकी खास जरूरत है। आम जनताकी निरक्षरता हिन्दुस्तानका पाप है, अर्म है; अुसे दूर करना ही चाहिये। वेगक, अक्षरज्ञानके प्रचारकी प्रवृत्ति मूलाक्षरके ज्ञानसे शुरु होकर वही एक न जानी चाहिये। परतु म्युनिसिपैलिटियोंको अेक साथ दो ढोडो पर सवार होनेका लोभ नहीं करना चाहिये। वर्रा अुन्हें पछताना पडेगा। पुरुषोंकी तरह स्त्रियोंकी निरक्षरताका कारण केवल अालस्य और जडता नहीं है। अिसने ज्यादा बडा कारण तो अनादि कालसे स्त्रियोंको नीची माननेवाली सामाजिक ऋटि है। पुरुषने स्त्रीको अपनी महायक और सहअमिणी बनानेके ददले अुगे अरका काम करनेवाली दासी और भोग-विलासका साधन बना रखा है। अिमके फलस्वरूप हमारे नमाजका आषा अग बेकार हो गया है। स्त्रीको प्रजाकी माता रखा गया है वह बिलबुद्ध मही है। पर हमने अुमने साथ यह जो महा अन्याय किया है अुमें दूर करना हमारा कर्तव्य है।”

उपअ्यजके अेक प्रतिनिधिने पूछा “अपन अमूत विषये पर अरुण-अरुण ढोकों पर अरुण-अरुण मन प्रचट रिये है। अमूत उरुपयोग करके हमारे विरोधी हमारी अात्मनी नृनिता गिरीं करे है। अंने अ्यनिर्मे अमें क्या करना चाहिये?”

गांधीजीने कहा—“मेरे अलग-अलग मतोंमें परस्पर जो विरोध दीखता है, वह आभासमात्र है, और अन्तके बीच आसानीसे मेल बैठाय जा सकता है। सुरक्षित नियम तो यह है कि मेरा जो वचन कालक्रमसे आखिरी हो, उसे पहलेके सब वचनोंसे ज्यादा प्रामाणिक माना जाय और उसका अनुसरण किया जाय। लेकिन मेरे किसी भी वचनको, यदि वह आपके दिल और दिमागको अपील न करता हो, आप माननेके लिये बँधे हुअे नहीं हैं—भले वह आजका हो या पहलेका। जिसका अर्थ यह नहीं कि मेरा दृष्टिकोण गलत था। लेकिन जिस दृष्टिकोणको आप समझ या ग्रहण न कर सकें, उसे स्वीकार करना ठीक नहीं है।”

हरिजनवधु, २६-२-३९

३८

कांग्रेसी मन्त्रि-मंडल और नयी तालीम

[शिक्षा-विभागके मंत्रियोंकी कॉन्फरेन्सके साथ गांधीजीकी जो बातचीत हुअी, उसकी श्री प्यारेलाल द्वारा दी गयी रिपोर्ट जिस तरह है —सं०]

सन् १९३९ में जब सात सूबोंके कांग्रेसी मन्त्रि-मंडलोंने विस्तीफा दिया, तो वहाँ १९३५ के विधानकी ९३ वी धाराका गवर्नरी राज कायम हुआ। उस राजमें कांग्रेसी मन्त्रि-मंडलों द्वारा शुरू की गयी नयी तालीमकी स्कीमों और शराव-बन्दी, ग्राम-सुधार और देहातकी बुनियादी दस्तकारियोंको फिरसे जिलानेके प्रोग्रामको सबसे बड़ा धक्का पहुँचा। कांग्रेसी मन्त्रि-मण्डलोंने जब फिरसे हुकूमतकी वागडोर अपने हाथमें ली, तो कुदरती तौर पर सबसे पहले अन्होंने अपने प्रयोगोंकी

बच्ची-बुच्ची निशानियोंको बर्वादीसे बचाने और १९३९ के छोड़े हुअे कामोंको फिरने हाथमें लेनेकी तरफ ध्यान दिया।

श्री बालासाहब खेरका न्यौता पाकर कांग्रेसी सूबोसे आये हुअे शिक्षा-विभागके मंत्रियोंकी अेक कॉन्फरेन्स श्री खेरकी बव्यसतामें पूनाके कौंसिल हॉलमें २९ और ३० जुलाबीको हुअी। न्यौता तो सभी सूबोंके मंत्रियोंकी दिया गया था, लेकिन अुनमें से दोके मंत्री कॉन्फरेन्समें शरीक न हो सके। २९ जुलाबीको तीसरे पहर गाधीजी अेक घंटेसे भी ज्वादा कॉन्फरेन्समें बैठे थे। सरकारी और अुनसे जुडी हुअी मस्थायोंमें नबी तालीमके प्रयोगको जरूर बक्का लगा। लेकिन तालीमी सधमें वह अुनी तरह चलता रहा, जो गांधीजीकी दूरन्देशीसे हर मुसीबतका सामना करनेके लिये पूरी तरह तैयार था। पहले तात नाल पूरे हो जानेसे नबी तालीमकी अुमर पुल्ता हो चुकी है। नजर-बन्दीमें छूटनेके बाद सन् १९४४ में जब गांधीजी तालीमी सधके मेम्बरोंमें पहले-पहल मिले, तो अुन्होंने समझाया कि अब आपका प्रयोग अैसी हद तक पहुँच गया है, जब कि नबी तालीमका दायरा बढाया जाना चाहिये। अब आपका अपने दायरेमें पोस्ट-बैसिक यानी नबी तालीमके बादकी और प्री-बैसिक यानी नबी तालीमके पहलेकी ट्रेनिंग भी शामिल करनी चाहिये। नबी तालीमको सच्चे मानीमें जिन्दगीकी तालीम बन जाना चाहिये। अिनी दलीलको आगे बढाते हुअे गांधीजीने कॉन्फरेन्सके लोगोको यह समझाया कि किस लाइन पर नबी तालीमका दायरा बढाना चाहिये और मंत्रियोंका बिस बारेमें ब्या फजं है। गांधीजी डॉ० जाकिर हुसैनके सवालके जबाबमें बोल रहे थे। डॉक्टर नाह्वकी डर था कि जरूरतमें ज्यादा जोरामें अाकर कोअी अैनी जिम्मेदारी सिर पर न ले ली जाय, अिमें पूरा न किया जा सके। अैना जोराना प्रोग्राम, अिने अन्तो रूप देनेके हमारे पास जरिये न हों, हमें ग्रामटॉर्न फँसानेवाला और अतन्नाय माघिन होगा।

‘अगर मैं मंत्री होता’

गांधीजीने कहा “हमें क्या करना चाहिये, यह तो मैं अच्छी तरह जानता हूँ, लेकिन वह किस तरह किया जाय, यह मैं ठीक-ठीक नहीं जानता। अभी तक जो रास्ता आपने तय किया है, उसकी सही जानकारी आपको थी। लेकिन अब आपको जैसे रास्ते पर आगे बढ़ना है, जिस पर कभी कोखी चला नहीं। मैं आपकी मुश्किलोको खूब समझता हूँ। जो लोग (शिक्षाकी) पुरानी परम्परामें पले हैं, उनको लिये ऐसे अकेवारगी ठुकरा देना आसान काम नहीं है। अगर मैं मंत्री होता, तो मैं जिस तरहकी खास हिदायते जारी करता कि आज़िन्दासे शिक्षासे सम्बन्ध रखनेवाला सरकारका समूचा काम नयी तालीमकी लाजिन पर चलेगा। कयी सूबोमें बडी अुमरवालोको तालीम देनेका आन्दोलन शुरू किया गया। अगर मेरी चले तो मैं ऐसे भी किसी वुनियादी दस्तकारीके जरिये ही चलाऊँ। मेरे खयालमें कताबी और मुससे जुडे हुये काम जिसके लिये सबसे अच्छी दस्तकारियाँ है। लेकिन किस जगह कौनसी दस्तकारीके जरिये तालीम दी जाय, यह बात मैं काम करनेवालो पर ही छोड दूँगा। क्योकि मेरा यह पूरा विस्वास है कि जिसके अन्दर जरूरी खूबियाँ होगी, वही दस्तकारी आखिरमें जिन्दा रहेगी। बिन्स्पेक्टरो और शिक्षा-विभागके दूसरे अफसरोका यह फर्ज है कि वे लोगो और स्कूलोंके शिक्षकोके पास जायँ और प्रेमसे दलीले दे-देकर सरकारकी शिक्षा-विभागकी नयी नीतिकी कीमत और मुससे होनेवाले फायदे बुन्हे समझाये। ऐसा करनेमे जवरदस्ती कभी न की जाय। अगर जिस नीतिमें उनकी श्रद्धा नहीं है, या वे भीमानदारीसे जिस पर अमल करना नहीं चाहते, तो मैं बुन्हे जिस्तीफा देकर चले जानेकी छूट दूँगा। लेकिन अगर मंत्री अपना फर्ज समझ ले और जिस नीतिको अमली शकल देनेकी कोशिश करे, तो यह नौबत ही न आये। सिर्फ हुक्म निकाल देनेसे काम नहीं चलेगा।

युनिवर्सिटी-शिक्षाकी कायापलट

“ग्रीड शिक्षाके वारेमें मने जो कहा, वह युनिवर्सिटी-शिक्षा पर ना खुसी तरह लागू होता है। अमुका हिन्दुस्तानकी जरूरतोंके नाय पूरा-पूरा मेल् बँठना चाहिये। अिसलिये युनिवर्सिटीकी शिक्षा नली तालीमके सिलसिलेमें जारी रहनेवाला अमुका विस्तृत रूप ही होना चाहिये। यही मेरी बातका असल मुद्दा है। अगर अिस वारेमें आप मुझसे पूरी तरह अेकराय नहीं है, तो मुझे डर है कि मेरी नलाहने आपको कौंसी फायदा नहीं होगा। लेकिन अगर मेरे साथ आप भी अिस बातको मानते है कि आजकी युनिवर्सिटी-शिक्षाने हमें आजकीका रास्ता दिखानेके बजाय गुलाम ही बनाया है, तो मेरे जैसे आप भी अुसे पूरी तरह बदल डालने और मुल्ककी जरूरतोंके मुताबिक नली अकल देनेके लिये अुतावले हो अुठेंगे।

“आज युनिवर्सिटियोंमे तालीम पाये हुअे हमारे नौजवान या नो सरकारी नौकरियोंके पीछे मारे-मारे फिरते है या अुसमें नाकामयाब होकर लोगोंको लूट-पाटके लिये भड़काकर अपनी कुडन मिटाते हैं। लोगोंसे भीख माँगने या अुनके टुकडोंके मुहताज बननेमें भी वे अरम महसूस नहीं करते। अुनकी दुर्दशाकी भी कौंसी हद है। आज युनिवर्सिटियोंको चाहिये कि वे मुल्ककी आजकीके लिये जीने और मरनेवाले जनताके नेवक तैयार करे। अिनलिये मेरी राय है कि तालीमी सचके अिसकोकी मददमे युनिवर्सिटी-शिक्षाको नली तालीमके नाय जोड़कर अुमकी लाजिनमें ले जाना चाहिये।

“आपने लोगोंके नुमाअिन्दोंके नाते हुकूमतकी दागडोर सँनाली है। अिनलिये अगर आप लोगोंको अपने साथ नहीं ले सके, तो आपके हुकूम कौन्सिल हॉलकी चहारदीवारीके बागे नहीं बढ पायेंगे। आज बम्बई और अहमदाबादमें जो कुछ हो रहा है, अुसने अगर यह जाहिर होता है कि लोगों परने अंग्रेजका काबू अुठ गया है, नो वह बुरा

अकुन ही कहा जायगा। नबी तालीम आज भी अेक कमजोर पीदा ही है, फिर भी वह भविष्यमें बडे भारी पेडकी शकल लेगी। लेकिन अगर जनता अुसे पसन्द न करे, तो मत्रियोके हुकमोके सहारे वह पनप नही सकती। जिसलिअे अगर आप जनताको अपनी रायकी नही वना सकते, तो मैं आपको सलाह दूंगा कि आप अिस्तीफा दे दें। आपको अराजकतासे डरना नही चाहिये। आप लोग अपनी बुद्धिके कहे मूताविक अपना फर्ज अदा करें और बाकी सब भगवान्के भरोसे छोड दें। अुस तजरवेसे भी लोग सच्ची आजादीका सबक सीखेंगे। ”

जिसके बाद गाधीजीने लोगोसे सवाल पूछनेके लिअे कहा। पहला सवाल था “क्या स्वावलम्बनके सिद्धान्तके बिना भी नबी तालीम दी जा सकती है ? ”

गाधीजीने जवाब दिया “आप बेशक जिसकी कोशिश कर सकते हैं। लेकिन अगर आप मेरी सलाह पूछेंगे, तो मैं यही कहूंगा कि वैसी हालतमें आपका नबी तालीमको पूरी तरह भूल जाना ही बेहतर होगा। स्वावलम्बन मेरे लिअे नबी तालीमकी पहली शर्त नहो, वल्कि अुसकी सच्ची कसौटी है। जिसका मतलब यह नही कि नबी तालीम शुरूसे ही स्वावलम्बी बन जायगी। नबी तालीमकी स्कीमके मूताविक सात सालके पूरे अरसेमें आमद और खर्चका हिसाब बराबर बँठना चाहिये। नही तो विद्यार्थियोकी ट्रेनिंग पूरी होनेके बाद यही साबित होगा कि नबी तालीम अुन्हें जिन्दगीकी तालीम नही दे सकती। स्वावलम्बनके बिना नबी तालीम वैसी ही मानी जायगी, जैसे बिना प्राणका शरीर। ”

जिसके बाद और भी सवाल जवाब हुअे।

स० — हमने बुनियादी दस्तकारीके जरिये शिक्षा देनेके सिद्धान्तको मान लिया है। लेकिन मुसलमान किसी वजहसे चरखेके खिलाफ हैं। जिन जगहोंमें कपास पैदा होती है, वहाँ तो आपका कतामी पर जोर देना ठीक मालूम होता है। लेकिन क्या आप अिस बातको नही मानते

कि जहाँ कपास पैदा नहीं होती, वहाँ चरखे और कताबीके लिये कोबी जगह नहीं है। क्या ऐसी जगहोमे कताबीके वजाय कोबी दूसरी दस्तकारी नहीं ली जा सकती—मसलन्, खेती ?

ज० — यह बहुत पुराना सवाल है। कोबी भी दुनियादी दस्तकारी, जिसके जरिये शिक्षा दी जाय, सब जगहके लिये मौजूं होनी चाहिये। सन् १९०८ में ही मैं ब्रिज नतीजे पर पहुँच गया था कि हिन्दुस्तानको आजाद करने और मुझे अपने पाँव पर खड़ा होने लायक बनानेके लिये मुझे हर घरमें चरखा चलना चाहिये। कपानकी अक फली भी पैदा न करके अगर ब्रिग्लैण्ड सारी दुनियाको और हिन्दुस्तानको कपड़ा भेज सकता है, तो सिर्फ पड़ोसके सूवे या जिलेमे कपास मँगाकर भी हम अपने घरोंमें कताबी शुरू नहीं कर सकते ? सच पूछा जाय तो पुराने जमानेमें हिन्दुस्तानका अक भी ऐसा हिस्सा नहीं था, जहाँ कपास न पैदा की जाती हो। सिर्फ 'कपास पैदा कर सकनेवाली धरती' में ही कपास पैदा की जाय, यह नुकसानदेह चीज तो हाल ही सूती माल तैयार करनेवाले निहित स्वार्थीने हिन्दुस्तान पर जबरन् लादी है। ऐसा करनेमें उन्होंने गरीब टैकम देनेवाले और सूत कातनेवालोंके हितकी जरा भी परवाह नहीं की। आज भी पेड़की कपास हिन्दुस्तानमें हर जगह मिलती है। ऐसी लचर दलीलें यह साबित करती हैं कि कोबी कठिन काम हाथमें लेनेकी और वक्त आने पर नये-नये जरिये खोज निकालनेकी हममें योग्यता नहीं है। अगर कच्चे मालको अक जगहमे दूसरी जगह ले जानेके कामको दूर न की जा सकनेवाली अडचन मान लिया जाय, तो सारे कारखाने बन्द हो जायें।

ब्रिजके अलावा, किमी आदमीको अमुकी कोशिशोमे अपना तन डकने लायक बना देना — जब कि ऐसा न किया जाने पर अने नगा रहना होगा — अपने आपमें अक तालीम है। और, कताबीमे नवध रखनेवाले अलग-अलग कामोंकी बुद्धिपूर्वक छानबीन की जाय, तो अमुने

शिक्षामें प्रगति करनेके लिये क्या किया जाना चाहिये ? ” गांधीजीने बुद्ध अंग्रेजीमें सवाल करनेके लिये चिढ़ाते हुये हँसीके फव्वारोंके बीच मुझाया “अगर आप हिन्दुस्तानीमें नहीं बोल सकते थे, तो आपको अपने पड़ोसीके कानमें धीरेसे यह बात कह देनी थी और वे मुझे उसे हिन्दुस्तानीमें कह सुनाते । ”

गांधीजीने आगे चलकर कहा “अगर आप यह महसूस करते हैं कि आजकी शिक्षा हिन्दुस्तानको आजाद बनानेके बजाय अुसकी गुलामीको और ज्यादा बढ़ाती है, तो आप उसे बढ़ावा देनेसे बिनकार कर दें, भले ही अुसकी जगह कोबी दूसरी शिक्षा ले या न ले। आप नहीं तालीमकी चहारदीवारीके भीतर जितना कर सके, करें और अुससे सन्तोष मानें। अगर लोग बिस बात पर मन्त्रियोंको अुनकी जगह रखना नहीं चाहते, तो वे बिस्तीफा दे दें। वे लोगोंको जिन्दगी देने-वाला खाना नहीं दे सकते या लोग अैसा खाना पसन्द नहीं करते, बिनालिये लोगोंको जहर खिलानेमें तो वे हरगिज हिस्ता न लेंगे । ”

स० — आप कहते हैं कि नहीं तालीमके लिये हमें पैसेकी नहीं, बल्कि आदमियोंकी जरूरत है। लेकिन लोगोंको सिखानेके लिये हमें सत्याओंकी जरूरत होगी और संस्थाओंके लिये पैसेकी भी। हम बुराबियोंके बिस घरेसे कैसे बाहर निकलें ?

ज० — बिमका बिलाज आपके ही हाथोंमें है। अपने-आपसे यह काम शुरू कीजिये। अंग्रेजीकी अेक बड़ी अच्छी कहावत है दान घरमे शुरू होता है। लेकिन आप खुद साहब बनकर आराम-कुर्सी पर बैठें और दूसरे ‘कम योग्यतावालो’ से आशा करें कि वे बिस कामके लिये तैयार हो, तो आपको सफलता नहीं मिल सकती। काम करनेका मेरा ढंग बिससे जुदा है। बचपनसे मेरी यह आदत रही है कि मैंने अपने-आपमे और आसपासके लोगोंसे ही किसी कामकी शुरुआत की है — फिर वह कितनी ही छोटी शकलमें क्यों न हो। बिना वारेमें

हम ब्रिटिश लोगोसे सबक लें। पहले पहल सिफं मुट्ठीभर अपेज हिन्दुस्तानमें आकर वसे और धीरे-धीरे अन्होंने अपना जेक साम्राज्य खडा कर लिया। यह साम्राज्य राजनैतिक दृष्टिसे अतना डगवना नही है, जितना कि सांस्कृतिक दृष्टिसे। अुसने हम पर अंगा जादू डाला है कि हम अपनी मातृभाषाको भी भूल गये और अंग्रेजीके वसमें होकर अुससे वैसे ही चिपटे रहते है, जैसे जेक गुलाम अपनी बेहियोसे। लेकिन जिस साम्राज्य-निर्माणके पीछे कितनी श्रद्धा, कितनी भक्ति, कितनी कुरबानी और कितनी मेहनत छिपी हुयी है! यह जिस बातका सबूत है कि विच्छा होने पर रास्ता भी निकल आता है। जिसलिये हम बूठे और पक्के बिरादेसे अपने काममें लग जायें। यदि रास्तेमें आनेवाले बडे-से-बडे खतराकी भी हम परवाह न करे, तो हमारी सारी मुश्किलें वरफकी तरह गल जायेंगी।

अंग्रेजीकी जगह

स० — जिस कार्यक्रममें अंग्रेजीकी क्या जगह रहेगी? अुसे अनिवार्य बनाया जाना चाहिये या दूसरी भाषाकी तरह पढाया जाना चाहिये?

ज० — मेरी मातृभाषामें कितनी ही खामियां क्यो न हो, मैं अुससे अुसी तरह चिपटा रहूंगा, जैसे अपनी मांकी छातीसे। वही मुझे जिन्दगी देनेवाला दूध दे सकती है। मैं अंग्रेजीको अुसकी जगह प्यार करता हूँ। लेकिन अगर वह अुस जगहको हडपना चाहती है, जिसकी वह हकदार नही है, तो मैं अुससे सख्त नफरत करूंगा। यह बात मानी हुयी है कि अंग्रेजी आज सारी दुनियाकी भाषा बन गयी है। जिसलिये मैं अुसे दूसरी भाषाके तौर पर जगह दूंगा — लेकिन युनिवर्सिटीके कोर्समें, स्कूलोंमें नही। वह कुछ लोगोके सीखनेकी चीज हो सकती है, लाखों-करोडोंकी नही। आज जब हमारे पास प्राथमिक शिक्षाकी भी देशमें अनिवार्य बचानेके साधन नही है, तो हम अंग्रेजी

सिखानेके जरिये कहाँसे जुटा सकते हैं? रुसने बिना अंग्रेजीके ही विज्ञानमें अितनी तरक्की की है। आज अपनी मानसिक गुलाबीकी वजहसे ही हम यह मानने लगे हैं कि अंग्रेजीके बिना हमारा काम चल ही नहीं सकता। मैं अिस चीजको नहीं मानता।

हरिजनसेवक, २५-८-'४६

३६

ग्राम-विद्यापीठ

डॉक्टर किनी मैसूरमें शिक्षा-विभागके मंत्री थे। बुन्होंने 'हरिजन' के लिअे अेक लम्बा लेख लिखा है। उनका मतलब यह है कि हिन्दुस्तान अिमलिअे गरीब रहा है कि राजसत्ताने गरीब देहातको मच्छी शिक्षासे दूर रखा है। वे मानते हैं कि हमारे अहरोंमें जो विद्यापीठ या युनिवर्सिटियाँ हैं, उनमें देहातकी सेवा नहीं हो सकेगी। क्योंकि अिन विद्यापीठोंमें अंग्रेज सरकारने पढाबीका जो अिन्तजाम किया है, वह सत्र पश्चिमकी बातोंको बढ़ानेके लिअे है, और अिन विद्यापीठोंमें देहातके लायक शिक्षा चालू करना मुश्किल है।

डॉ० किनी कहते हैं कि देहातके लिअे देहाती विद्यापीठ होने चाहिये, अिनमें बड़ी अुमरके लोग भी पढ सकें।

किनी महाशय लिखते हैं कि ग्रामीण विद्यापीठोंमें तंत्रोविद्या, फलविद्या, रोगनविद्या, गांविद्या, मुर्गीविद्या, मधुविद्या, मछलीविद्या, मधु-विद्या, ग्रामीण स्वच्छता, ग्रामीण विद्युत्विद्या, ग्रामीण गस्ने, ग्रामीण गृहविद्या, ग्रामीण पुम्हारविद्या, ग्रामीण अर्धंगालय, ग्रामीण मनाजसामन, ग्राम-रचना, ग्रामीण व्यापार, और ग्रामीण सराफा व साहूकारी-विद्या अैरा अितरानेका अिन्तजाम होना चाहिये। अगर हिन्दुस्तानके देहातमें ये नव चीजें आम्शके रूपमें अित्यात्री जायें, तो लेम्बक कहते हैं कि

देहातकी शकल ही बदल जायगी, मुन्हें शहरोकी ओर नही देखना पडेगा, बल्कि गुलटे शहरोको देहातकी ओर देखना पडेगा।

डॉ० किनीके लेखका मने सार ही दिया है। अगर केन्द्रीय सरकार और प्रान्तीय सरकारें जिसे अपना लें, तो बडा काम हो सकता है। अुसको योग्य रूप देनेके लिये किनी महोदयको डॉ० जाकिर हुसैन और आर्यनायकम् दम्पतीसे सलाह-मशविरा करना चाहिये। मैं तो मानता हूँ कि शहरके विद्यापीठ भी देहाती विद्यापीठमे बदल सकते हैं।

हरिजनसेवक, १३-१०-'४६

४०

नये विश्व-विद्यालय

बाजकल देशमे नये विश्व-विद्यालय कायम करनेकी आँधी-सी बूठ खडी हुयी है। गुजरातको गुजराती भाषाके लिये, महाराष्ट्रको मराठीके लिये, कर्नाटकको कन्नडके लिये, बुडीसाको बुडियाके लिये और आसामको आसामी भाषाके लिये विश्व-विद्यालय चाहिये। मुझे लगता है कि अगर प्रान्तोकी जिन सम्पन्न भाषाओ और मुन्हे बोलनेवाले लोगोको पूरी-पूरी अुन्नति करनी हो, तो अँमे विश्व-विद्यालय होने ही चाहिये।

लेकिन अँसा मालूम होता है कि जिन विचारो पर अमल करनेमें जरूरतसे ज्यादा अुताबलापन दिखाया जा रहा है। जिसके लिये सवमे पहले भाषावार प्रान्तोकी रचना की जानी चाहिये। अुनका राज-तय अलग होना चाहिये। बम्बयी प्रान्तमे गुजराती, मराठी और कन्नड तीन भाषाअँ बोली जाती है। मद्रास प्रान्तमें तामिल, तेलुगू, मलयाली और कन्नड चार भाषाअँ बोली जाती है। आन्ध्र देगका अपना अलग

विश्व-विद्यालय है। बुने कायम हुये थोडा नमय हो गया। लेकिन बुने काफ़ी अज्ञति की है, असा नही कहा जा सकता। अनामली विश्व-विद्यालय तामिल भापाके लिखे माना जा सकता है। लेकिन मैं नही समझता कि बुससे तामिल भापाका पोषण होता है या बुसका गौरव बढा है।

नये विश्व-विद्यालयके लिखे ठीक-ठीक वातावरण होना चाहिये। बुसे जमानेके लिखे अने स्कूल और कॉलेज होने चाहिये, जो अपने-अपने प्रान्तकी भापाओके जरिये तालीम दें। तभी विश्व-विद्यालयका पूरा वातावरण खडा हुवा माना जा सकता है। विश्व-विद्यालय चौटीकी शिक्षण-सत्था है। लेकिन अगर नीव मजबूत न हो, तो बुम पर बिमारतकी मजबूत चौटी खडी करनेकी आशा नही रखी जा सकती।

हालांकि हम राजनैतिक दृष्टिसे आजाद हैं, फिर भी पश्चिमके प्रभावसे अभी आजाद नही हुये हैं। जो यह मानते हैं कि पश्चिममें ही सब कुछ है और हर तरहका ज्ञान वहीसे मिल सकता है, बुने मुझे कुछ नही कहना है। न मेरा यही विश्वास है कि पश्चिमसे हमें कोअी अच्छी चीज मिल ही नही सकती। वहाँ क्या अच्छा है और क्या बुरा है, यह समझने लायक प्रगति अभी हमने नही की है। अभी यह नही कहा जा सकता कि परदेशी हुकूमतसे आजाद हो गये हैं, जिसलिखे हम परदेशी भाषा या परदेशी विचारोंके असरने भी आजाद हो गये हैं। क्या यह समझदारीकी बात नही होगी, क्या देशके प्रति रहनेवाले हमारे फर्जका यह तकाजा नही है कि नये विश्व-विद्यालय कायम करनेके पहले हम थोडी देर ठहरें और अपनी नबी मिली हुअी आजादीके जीवन देनेवाले वातावरणमें कुछ सोचें? विश्व-विद्यालय सिर्फ पैसोंसे या बडी-बडी बिमारतोंसे नही बनते। विश्व-विद्यालयके पीछे जनताकी जाग्रत रायका होना सबसे जरूरी है। बुनेके लिखे पढानेवाले योग्य शिक्षकोंकी जरूरत है। बुन्हें कायम करनेवाले लोगोंमें काफ़ी दूरदेशी होनी चाहिये।

मेरे विचारसे विश्व-विद्यालय कायम करनेके लिये पैसका प्रवध करनेका काम लोकशाही हुकूमतका नहीं है। अगर लोग अन्हे कायम करना चाहेंगे, तो वे अुनके लिये पैसे भी देंगे। लोगोके पैसेसे कायम किये जानेवाले विश्व-विद्यालय देशकी शोभा बढायेंगे। जिस देशका राजकाज विदेशियोके हाथमें होता है, वहाँ सब कुछ अपरसे टपकता है, और असलिये लोग दिनोदिन पराधीन या गुलाम बनते जाते हैं। जहाँ जनताकी हुकूमत होती है, वहाँ हर चीज नीचेसे अपर उठती है, और असलिये वह टिकती है, शोभा पाती है और लोगोकी शक्ति बढाती है। जिस तरह अच्छी जमीनमें बोया हुआ वीज दम गुनी अपज देता है, अुसी तरह विद्याकी अुन्नतिके लिये खर्च किया हुआ पैसा कभी गुना लाभ पहुँचाता है। विदेशी हुकूमतके मातहत कायम किये गये विश्व-विद्यालयोने अससे अुलटा काम किया है। अुनका दूसरा कोबी नतीजा हो भी नहीं सकता था। असलिये हिन्दुस्तान अब तक नबी मिली हुयी आजादीको अच्छी तरह पचा नहीं लेता, तब तक नये विश्व-विद्यालय कायम करनेमें मुझे बडा डर मालूम होता है।

अिसके अलावा, हिन्दू-मुसलमानोके झगडने असा भयकर रूप ले लिया है कि आज पहलेसे यह कहना मुश्किल हो गया है कि हम कहाँ जाकर सकेंगे। मान लीजिये कि अनहोनी वात हो जाय और हिन्दुस्तानमें सिर्फ हिन्दू और सिक्ख ही रहें और पाकिस्तानमें सिर्फ मुसलमान, तो हमारी शिक्षा जहरीला रूप ले लेगी। अगर हिन्दू-मुसलमान और दूसरे धर्मके लोग हिन्दुस्तानमें भाबी-भाबी बनकर रहेंगे, तो स्वभावत हमारी शिक्षा सौम्य और सुन्दर रूप लेगी। या तो हमारे देशमें अलग-अलग धर्मके लोगोके मित्रता और भाबीचारेसे रहते आनेके कारण जो मिलीजुली सुन्दर सभ्यता पैदा हुयी है, असे हम मजबूत बनायेंगे और ज्यादा अच्छा रूप देंगे, या फिर हम असे समयकी खोज करेंगे जब हिन्दुस्तानमें सिर्फ हिन्दू धर्मके लोग ही रहते थे। इतिहासमें

ऐसा कोबी समय शायद न मिल सके। लेकिन ऐसा कोबी समय मिला और हम उसके पीछे चले, तो हम कबी सदी पीछे हट जायेंगे और दुनिया हमसे नफरत करेगी और हमें कोसेगी। अुदाहरणके लिये, अगर हम इतिहासके मुगलकालको भूलनेकी वेकार कोशिश करेंगे, तो हमें दुनियामें सबसे अच्छी दिल्लीकी जामा मसजिदको भूल जाना होगा, या अलीगढकी मुस्लिम युनिवर्सिटीको भूलना होगा, या दुनियाके सात आश्चर्योंमें से अेक आगराके ताजको, या मुगलकालमें बने हुअे दिल्ली और आगराके बडे बडे किलोको भूलना पडेगा। तब हमें अुसी दृष्टिसे अपना इतिहास फिरसे लिखना होगा। आजका वातावरण सचमुच ऐसा नहीं है, जिसमें हम जिस वारेमें किसी सही नतीजे पर पहुँच सकें। अपनी दो महीनेकी आजादीको अभी हम गढनेमें लगे हैं। हम नहीं जानते कि आखिरमें वह क्या रूप लेगी। जब तक हम ठीक-ठीक यह नहीं जान लेते, तब तक अगर हम मौजूदा विश्व-विद्यालयोंमें ही भरसक फेरफार करें और आजकी शिक्षण-संस्थाओंमें आजादीके प्राण फूँके, तो अितना काफी होगा। जिस तरह हमें जो अनुभव होगा, वह नये विश्व-विद्यालय कायम करनेमें हमारी मदद करेगा।

अब रही बात दुनियादी तालीमकी। जिस तालीमको शुरू हुअे अभी आठ बरस हुअे हैं। जिसलिये अुसके अमलमें जो अनुभव हुआ हैं, वह हमें मैट्रिकके दरजेसे आगे नहीं ले जाता। फिर भी, जो लोग जिसके प्रयोगमें लगे हैं, अुनके मनमें दुनियादी तालीमका विकास होता ही रहता है। जिस सस्थाके पीछे आठ सालका ठोस अनुभव है, अुसकी सिफारिसोको कोबी भी शिक्षाशास्त्री ठुकरा नहीं सकता। हमें यह ध्यान रखना चाहिये कि यह दुनियादी तालीम देशके धाता-वरणमें भे पैदा हुअी है और देशकी जरूरतोंको पूरा कर सकती है। यह वातावरण हिन्दुस्तानके सात लाख गाँवों और अुनमें रहनेवाले करोडों लोगोंमें छाया हुआ है। अुनको भुलाकर आप हिन्दुस्तानको भी भूल जायेंगे। मन्ना हिन्दुस्तान गहरोमें नहीं, बल्कि अिन मात

एतन् गांवोंमें जगा है। शहर विदेशी हुकूमतकी जरूरतें पूरी करनेके लिये उठे हुए थे। आज भी वे पहलेकी तरह निभ रहे हैं। क्योंकि विदेशी हुकूमत हिन्दुस्तानमें चली गयी, लेकिन बुसका असर अभी अना हुआ है—वितनी जल्दी वह जा भी नहीं सकता।

यह देश में अभी दिल्लीमें लिरा रहा हूँ। यहाँ बैठे-बैठे मैं गांवोंका क्या खयाल कर सकता हूँ? जो बात मुझ पर लागू होती है, वही हमारे मंत्रि-मण्डल पर भी लागू होती है। फर्क यही है कि बुस पर यह विशेष रूपसे लागू होती है।

यहाँ हम बुनियादी तालीमके खास-खास सिद्धान्तों पर विचार करें-

१. पूरी शिक्षा स्वावलम्बी होनी चाहिये। यानी, आखिरमें पूंजीको छोड़कर अपना सारा खर्च बुसे खुद निकालना चाहिये।

२. जिसमें आखिरी दरजे तक हाथका पूरा-पूरा बुपयोग किया जाय। यानी, विद्यार्थी अपने हाथोंसे कोसी न गोभी बुद्योग-धवा आखिरी दरजे तक करें।

३. सारी तालीम विद्यार्थियोंकी प्रान्तीय भाषा द्वारा ही जानी चाहिये।

४. जिसमें साम्प्रदायिक धार्मिक शिक्षाके लिये कोसी जगह नहीं होगी। लेकिन बुनियादी नैतिक तालीमके लिये काफी गुजाबिश होगी।

५. यह तालीम, फिर बुसे बच्चे ले या बड़े, औरत ले या मर्द, विद्यार्थियोंके घरोंमें पहुँचेगी।

६. चूँकि जिस तालीमको पानेवाले लाखों-करोड़ों विद्यार्थी अपने आपको सारे हिन्दुस्तानके नागरिक समझेंगे, जिसलिये अन्हें अक आन्तरप्रान्तीय भाषा सीखनी होगी। सारे देशकी यह अक भाषा नागरी या बुर्दुमें लिखी जानेवाली हिन्दुस्तानी ही हो सकती है। जिसलिये विद्यार्थियोंको दोनो लिपियाँ अच्छी तरह सीखनी होगी।

जिस दुनियादी विचारके बिना या जिसको ठुकराकर जो नये विश्व-विद्यालय कायम किये जायेंगे, वे मेरे विचारसे देशको कोभी फायदा नहीं पहुँचायेंगे, बुलटे नुकसान ही करेंगे। जिसलिसे सब शिक्षाशास्त्री जिस नतीजे पर पहुँचेंगे कि नये विश्व-विद्यालय खोलनेमें पहले थोड़ी देर ठहरना और सोच-विचार करना जरूरी है।

हरिजनसेवक, २-११-४७

४१

तालीमी संघके सदस्योंसे बातचीत

[गांधीजीका कार्यक्रम निश्चित न होनेकी वजहसे तालीमी संघकी बैठक बुलानेमें काफी परेशानी हुई। आखिर किस्मतसे गांधीजी वक्त पर दिल्लीसे वापस लौट आये और पटनामें बैठक हो सकी। जिस अरसेमें गांधीजीने दो दिन (२२ और २३ अप्रैल, १९४७) तक रोज दो घंटेका समय दिया। बैठकमें जुटाये गये सवाल और गांधीजी द्वारा दिये गये अनुके जवाबकी श्री देवप्रकाश नय्यर द्वारा ली गयी रिपोर्ट नीचे दी जाती है. —स०]

वजट

जाकिर साहब — सुवहकी मीटिंगमें प्रान्तोका हाल सुनाया गया। वजट पास हुआ और जिस बातकी चर्चा हुई कि सरकारने कितनी रकम ले ?

गांधीजी — हम जितनी चाहें, सरकार दे देगी। लेकिन अगर हमने सरकारके सहारे खडे होनेकी कोशिश की, तो हमारा काम मिट जायगा।

जाकिर साहब — नहीं, वह तो सिर्फ तालिब-बिल्मोकी फीसके बारेमें बात थी। कितने विद्यार्थी ले, यह मसला था। ज्यादा लेनेमें खर्च तो निकल आयगा, पर बहुत ज्यादा लेनेसे काम बिगड़ेगा।

गाधीजी — यह तो साफ बात है। जितने विद्यार्थी लेना चाहे, अतने ही लें। ज्यादा न ले। वजटके बारेमें मुझे काफी कहना है। बिसके लिअे तो आशादेवी और आर्यनायकम् मेरे साथ बैठें और जो तब्दीली कर सकते हैं, करें। तीन बरसके बाद न मुझसे, न किसी औरसे कुछ लेना है। लेकिन असा नही कर सकेंगे, तो नबी तालीम चलनेवाली नही। अगर आप चाहते हैं कि वह स्वावलम्बी बने, तो अुसी तरहसे वजट बनाकर चलिये। अगर तीन सालके बाद असा न हो, तो देशके सामने हमें कहना होगा कि हम हार गये। बिस डरसे हम चुप न रहें कि हमारी बनी हुअी प्रतिष्ठाको घक्का पहुँचेगा। सच्ची प्रतिष्ठा तो कामयाबी है।

चादर देखकर पाँव फँलाबिये

जाकिर साहब — मद्रास प्रान्तकी तरफसे माँग आभी है कि वहाँ तालीमी सघकी तरफसे अेक स्कूल चलाया जाय। खर्च सरकार देनेको तैयार है। अुन्होने रामचन्द्रम्को भी बिसके लिअे माँगा और कहा है कि वे शिक्षा-विभागके मंत्रीके मातहत रहकर नबी तालीमको चलानेकी जिम्मेदारी लें।

गाधीजी — रामचन्द्रम् आये तो नही न? मुझे अुनसे बिस बारेमें बात करनी होगी। जहाँ तक स्कूलकी बातका सबघ है, हममें ताकत हो तो, अुसे हाथमें लें, नही तो हम अुन्हें (सरकारको) भी फँसायेंगे। आज हमारे पास सत्ता आ गयी है। करोडो रुपये हाथमें आ गये हैं। अुनको जिस तरहसे चाहे, हम खर्च कर सकते हैं। अगर दिल नही पूछेगा, तो शायद कोअी भी पूछनेवाला नही होगा। अेक-दो साल असा चलेगा। फिर अगर ठोस काम नही होगा, तो वह ज्यादा देर नही चल सकेगा। बिसलिअे मेरी सलाह है कि अगर शक्ति हो, तो बिस कामको हाथमें ले। अगर हमारी यह तैयारी नही है, तो कहना होगा कि हम केन्द्रमें ही सिखा सकते हैं; प्रान्तों तक नही पहुँच सकते। सेवाग्राममें हमारा जो काम चलता है, अुने मद्रासके शिक्षक आकर देख लें।

तीन तरहकी तालीम

हमारी तालीम तीन तरहकी है। जिससे बुद्धि, शरीर और आत्मा तीनों बढ़ते हैं। दूसरे ढंगकी तालीमसे सिर्फ बुद्धि बढ़ती है। जिसमें भी मेरा दावा है कि नयी तालीममें बुद्धि शुद्ध होती है और बुनकी प्रगति सन्तुलित होती है। आत्माको भी खुराक मिलती है। मजहबी तालीम नहीं होगी तो क्या? कोबी जरूरी नहीं कि आत्माको मजहबी तालीम—वह भी कित्तावमे दी हुयी—के साथ जोड़ा जाय। हम सब धर्मके अच्छे-अच्छे मिद्वान्त जीवनके मारफत लडकोको सिखायेंगे।

कातना और झाडू देना सिखानेमे ही नयी तालीमका मकसद पूरा नहीं हो जाता। वह तो करना ही है, पर वही काफी नहीं है। झाडू देनेमें अगर आत्मा नहीं बढ़ती, तो उसे छोडना होगा। मैं यहाँ दूसरे कामोंमें पड़ा हूँ, पर नयी तालीमको कभी भूलता नहीं हूँ।

नयी तालीममें खादीका स्थान

नयी तालीमकी बातसे पहले चरखेकी बात थी। जब १९०८ में मैंने दक्षिण अफ्रीकामें जिनकी बात छोडी, तब उसके वारेमें मैं कुछ भी नहीं जानता था। उसकी जानकारी पीछे आयी। वादमे आया नविनय कानून-भंग और अर्ली भाषियोका जमाना। जिसमें भी चरखेका बडा स्थान था। बल प्रायनामों मैंने बताया था कि मेरे सामने खादीकी क्या तसवीर है। खादी वह है जो मिलके सारे कपडोंकी जगह ले सके। मैंने यह नहीं कहा कि नयी तालीममें खादीको ही रखना है। पर आप मुझे बताविये कि वह कौनसी चीज है, जो गरीबीको मिटा सकती है? तब मैं अपनी गलती नमन्न लूंगा। मैंने विनोबा, कृष्णदास और नारणदासमें पूछा था। पर मेरे सामने तो ब्रेक सादा हिमाय है। सब हिन्दुस्तानी अगर अरे घटा कातें, तो सबको जरूरी तरह मिन्न मरना है। हरअरेको अगर ६ घण्टे जिनमें देने पडे, तो

खादीको मरना है। क्योंकि लोगोंको दूसरे काम भी तो रहते हैं। अनाज पैदा करना है, दिमागी काम करना है। और नबी तालीममे अगर कमी भी वैल जैसा काम करना पड़े, तो वह निकम्मी बन जायगी। कातनेमें अंक घण्टा भी जाय, तो उससे आत्मा बढ़ती ही है।

अुत्तर-बुनियादी तालीम

संयदेन साहबने जब कहा कि अुत्तर-बुनियादी तालीममे तो मिल-मशीनरीका काम सिखाना ही होगा, तो मैं उसे मान न सका। मेरी निगाहमें तो अगर बुनियादी तालीमकी नीव खादी पर ठीक हो, तो अुत्तर-बुनियादी तालीममे उसे ही बढ़ाना होगा। कल देवप्रकाशने मुझे शाहू और तकली पर अंक लेख लिखकर बताया। अुन्होंने तो नबी तालीमका कुछ काम कर लिया है। अगर उस लेखमें जो बताया गया है, वह सब सही हो तो उसमें काफी चीजें आ जाती है। उसमें आला दरजेकी मिजीनियरिंग भी आ जाती है। लेकिन हम वह सब तभी सिखा सकते हैं, जब हमने सब हजम कर लिया हो। हमने अिन चीजोंके शास्त्र नहीं बनाये। अग्नेजोंकी मिलकी बुनियाद हमारी तकली और करघे पर है। अुन्होंने मिल बनायी, क्योंकि अुन्हें हमें चूसना था। लेकिन हम अँसा नहीं करना चाहते। हमें मिलोकी जरूरत नहीं। हमें तकली और करघेका ही शास्त्र बनाना चाहिये। युरोपने जैसा किया, अगर हिन्दुस्तान भी वैसा ही करे, तो हिन्दुस्तानका नाश होनेवाला है, बुनियाका नाश होनेवाला है। हाँ, अगर आपका खयाल अँसा बन गया है, तो मिलोकी ही बात कीजिये।

जाकिर साहब — हमारे स्कूलोंसे लडके निकलते हैं तो वे मिलोमे नौकरी ढूँढते हैं।

गाधीजी — मेरे स्कूलसे जो लडके निकलेंगे, वे मिलकी तरफ नहीं देखेंगे। मिलोका कपडा खादीके साथ-साथ नहीं विकना चाहिये। मिलें हिन्दुस्तानसे बाहर कपडा भेज सकती हैं। लकाशापरन्ना कपडा आपको लकाशापरमे नहीं मिलता। सब बाहर चला जाता है। पर

हमारी मिलोका कपडा बाहरके बाजारमें भी शायद ज्यादा देर तक न विक सके।

यह बात आप ठीक कहते हैं कि जब चारो तरफ मिल ही निकल जातावरण है, जब हमारे अपने मंत्री भी मिलें ही खोलना चाहते हैं, तब हम क्या करें? हम करते-करते मरेंगे। अगर हमें खादीनें सच्चा विश्वास है, तो हमें खुसे चलाना और मंत्रियोंको बताना है कि हम ठीक कर रहे हैं, और करते जायेंगे। हम हारनेवाले नहीं। ताजीमी संघको कांग्रेसने बनाया, पर खुसने संघमें दिलचस्पी नहीं ली। चरखा-संघको भी कांग्रेसने बनाया था, लेकिन अपनाया नहीं। आज जुन मस्थाओको कोसी पूछता है? कांग्रेसवालोंके पास जब थोड़ा लया था, कुछ तजरवा था, खुन्होंने रचनात्मक कामकी तरफ कुछ ध्यान दिया। कुछ काम भी किया। अब हाथमें हूकूनत बाजी है। खुसे हमने हजम नहीं किया। लेकिन आहिस्ता-आहिस्ता हजम होगी।

राज्य और तालीमी संघका संबंध

जाकिर साहब — दडी मुजिलका नामना है। नजी तालीमका मदरना चलाना अक नये निजामको फंजाना है। और नारा अग्निधार नत्रियोंके हाथमें है जो हमारे नाथ पूरे-पूरे अकेराम नहीं हैं।

गामीजी — बिनमें कोसी गल नहीं। गहरी (नागरिक) कोसी हदामें योड़े ही बननेवाले है!

जाकिर साहब — या तो आप सरकारके नाथ तालीमी संघका नाम जुडवा डीजिये या फिर हमें अपना अकेला रास्ता खोजन होगा।

गामीजी — मैं बबूल करता हूँ कि पहले मेरी जो तरकन थी, वह आज नहीं है। अिनमें सरकारका दोष नहीं। अूनके पास सरकारका बाँचा बना बनाया जा गया है। खुन्हें अूनने चजाना है। नें भी नयी होना, तो शायद अँना ही करता। अबाहरलाअजी वगैरसे मैं बात कर रहा हूँ। तालीमका काम ही नमखाना है न? आज यह मेरी प्रार्थना

है कि या तो भगवान मुझे उठा लें या मैं जो कहता हूँ, उसमे वितनी ताकत दे कि लोगो और उनके प्रतिनिधियोंको समझा सकूँ।

नबी तालीममें सब शक्ति भरी है। अगर आप वैसा नहीं मानते तो उसे फेंक दें। कुछ लोग मुझसे कहते हैं कि अब तुम्हारा काम खतम हो गया। आज तक अहिंसासे काम हुआ, अब तुम्हें भागना है। हम तुम्हारी सुननेवाले नहीं।

जाकिर साहब—लेकिन बापूजी, कांग्रेसको सरकारोसे कहना तो चाहिये। कांग्रेसने अपने मंत्रियोंसे कहा ही नहीं कि तालीमके बारेमें उसकी नीति क्या है। मौलाना साहबसे मैं यहाँ आनेसे पहले मिला था। बुन्दोने कहा कि सघ उनके साथ बातचीत करे। बुन्दोने हमदर्दी दिखायी। अभी तालीमी सघने तय किया है कि उनसे मिला जाय।

गाधीजी—अुन्हें पहले ही आप लोगोको बुलाना चाहिये था। सर्जेन्ट साहब भले काम करें, लेकिन अुन्हे आप लोगोकी सलाहके नीचे काम करना है। मैं तो कह आया हूँ कि जाकिर हुसैन साहबको बुलाजिये। यह सब समझकर ही काम कीजिये।

जाकिर साहब—हम तो समझते हैं कि थोड़ी कोशिशसे काम हो सकता है। पर हमने कोशिश ही नहीं की।

गाधीजी—आज कांग्रेसका तंत्र टूट रहा है। सब यह महसूस नहीं करते, पर मैं तो करता हूँ।

मजहबी तालीम

जाकिर साहब—मेरे खयालमें मजहबी तालीमके लिखे स्कूलमें आसानी पैदा कर दी जानी चाहिये और वक्त दिया जाना चाहिये। अगर वैसे हालतमें मजहबी तालीम दी जायगी, तो वे लोग सिखा सकेंगे जो जिसे जानते और समझते हैं। लेकिन जिससे ज्यादा जिम्मेदारी अगर सरकार हाथमें लेगी, तो और भी ज्यादा गलतफहमी और झगडा बढ़नेवाला है। मान लीजिये कि मौलाना साहब पाठ्यक्रम बनायें। लेकिन सब लोग उसे मानेंगे कब ?

गांधीजी — मौलाना साहबसे बात कीजिये। मैं नहीं मानता कि मरकार मजहबी तालीम दे। माना कि कुछ मुत्सलमान अँचे हैं जो गलत तरीकेसे मजहबी तालीम देना चाहते हैं। लेकिन आप कुन्हे कैते रोकेंगे? अँसी कोमिश्न करेगे, तो वुरा नतीजा निकलनेवाला है। मजहबी तालीम जो अपनी तरफसे मुफ्त देना चाहें दें। नैतिक तालीम, जो सब धर्मोंके मोटे-मोटे सिद्धान्तों पर आधार रखती हो, हम दें।

प्रमाण-पत्र

बार्थनायकम् — अँके और सवाल है। सात सालका कोर्स अभी खतम हुआ है। अब लडकोंको प्रमाण-पत्र देना है। वह किस दृष्टिसे दिया जाय? और बुनका क्या नाम रखा जाय?

गांधीजी — अँके खास मसविदा हिन्दुस्तानीमे दोनो लिपियोंमें बना दीजिये, जिमे सब समझ सकें। अबुसमें यह बताविये कि यहाँ तक लडका चला गया है। अगर हम कहें कि हमारा लडका नैट्रिकमे ज्यादा जानता है, तो हमें बताना चाहिये कि वह कितना ज्यादा जानता है। नाम और काम साथ-साथ जाने चाहिये। नाम बटा दें और काम बताना न हो, तो अच्छा नहीं लगेगा।

जाकिर साहब — अगर यह कह दें कि लडकेने पूरी बुनियादी तालीम ली है तो?

गांधीजी — जिसके लिले अँके शब्द होना चाहिये। जैसे हिन्दी सम्मेलनवालोंने अपनी परीक्षाओंके नाम रखे हैं।

सहशिक्षा

अविनागर्लिंगम् — तालीमी सषकी यह नीति है कि लडके और लडकियोंकी साथ-साथ पढाबी हो। हम दक्षिणमें दोनोंको साथ-साथ पढानेका रिवाज नहीं डालना चाहते।

गांधीजी — तब आप जैसा भी कह सकते हैं कि आप नली तालीमका कुछ हिस्सा ही लेंगे। खुने पूरे रूपमें लेना मद्दासके लिजे कठिन होगा। अगर आप स्कूलोंमें अँकट्ठी तालीम दें और

ट्रेनिंग स्कूलोमे न दें, तो वच्चे समझेंगे कि कुछ न कुछ दालमे काला है।

अविनाशिलिगम्—अेक अुम्र पर पहुँचनेके बाद, जब लोग अपना मन जान सकते हैं, लडके और लडकियोके अिकट्ठे पढनेसे कोबी नुकसान नही होता। १५-१६ बरसकी लडकियाँ जिस वक्त हमारे शिक्षण-शिविरोमें आती हैं, तब अुन्हे अलग ही सिखाना अच्छा है।

जाकिर साहब—हमारी तरफसे ट्रेनिंग स्कूलोमें अिकट्ठा पढाना कोबी जरूरी नही।

गाधीजी—आप (अविनाशिलिगम्) की दलीलका असर मेरे विचारो पर नही पडता। मेरे वच्चे अगर बुरे भी हैं, तो भी मैं अुन्हें खतरेमें पडने दूंगा। अेक दिन हमे काम-वृत्तिको छोडना होगा। हमें हिन्दुस्तानके लिअे पश्चिमकी मिसालें नही ढूँढनी चाहिये। ट्रेनिंग स्कूलोमें अगर सिखानेवाले लायक और पवित्र हो, नबी तालीमकी आत्मासे भरे हो, तो कोबी खतरा नही। दुर्भाग्यसे कुछ घटनाओं अैनी हो भी जायें, तो कोबी परवाह नही। वे तो हर जगह होगी।

जाकिर साहब—हमें मद्रासका तजरवा नही। अगर मद्रासमे हवा ठीक नही है, तो अुसके बननेका अिन्तजार कीजिये। तब तक आप अपनी लडकियोको सेवाग्राम भेज सकते हैं।

बुनियादी तालीमका साहित्य

अविनाशिलिगम्—अेक और दिक्कत है। बुनियादी तालीमका साहित्य नही है। अगर अेक जगह भी वह बन जाय, तो अुसे हम अपने प्रान्तकी जरूरतीके मुताबिक ढाल सकते हैं। तालीमी सघको यह काम करना चाहिये। सस्ते ब्लॉक बनवाये जा सकते हैं। सब तसवीरें तैयार करवायी जा सकती हैं। वगैरा।

आर्यनाथकम्—हमारे पिछले शिक्षण-शिविरोमें १० आदमी अैसे थे, जो साहित्य तैयार कर सकते हैं। अुनमें से दो मद्रासमें हैं। अुन्हें हम दे दें।

अविनाशालिगम् — अगर मैं सुझाव दे सकूँ, तो कहूँगा कि ये किताबें सुन्दर ढंगसे छपवायी जानी चाहिये।

गाधीजी — दुनियादी तालीमका मतलब घटिया दरजेका काम नहीं है।

अविनाशालिगम् — किताबोंकी शकल-सूरत अैसी होनी चाहिये कि बच्चे मुनकी तरफ अपने आप खिंच जायें।

लोकल बोर्डके स्कूल

जाकिर साहब — यू० पी० की रिपोर्ट पढी गयी। सबने अैसा महसूस किया कि दुनियादी स्कूल सरकारी लोकल बोर्डोंके हाथसे लेकर हम खुद चलाये। अेक तरहसे तो यह अच्छा है कि अैसे काम कमेटियाँ ही करें। पर आप तो जानते हैं कि वहाँ किस तरह काम चलता है। अभी भी प्रोग्राम तो सरकार ही बनाती है। लेकिन खुसे अमलमें लानेवाले लोकल बोर्ड होते हैं। वे पैसे पा जाते हैं। अुस्तादोंको तनखाहें नहीं मिलती है। डिमलिअे स्कूल सरकार ही चलाये तो अच्छा।

गाधीजी — मुझे आज कुछ पता नहीं। अगर देव मकूँ कि लोकल बोर्डोंमें कैसे काम चलता है, तो कुछ कह सकूँ। अभी नहीं कहूँगा। अितना कह सकता हूँ कि अगर सरकार समझती है कि वह बिना कामको कर सकती है और बोर्ड खुसे अपने स्कूल मरजीमे दे देने हैं, तो वह ले ले।

जाकिर साहब — फिर अुत्तर-दुनियादी तालीमकी रिपोर्ट पढी गयी। अेत महीनेके बाद ५ घंटे काम करके विद्यार्थी ८ आने रोज आना नरते हैं। और फिर जमी तो काम शुरू ही हुआ है। डिमका अँ — अन्दाजा तो कुछ देरके बाद ही लगाया जा माना है। तीसरे मास अन्दाजअन्तनी हूजी। वह जाजुजी सुनायेंगे।

रवायलमन्त

गाधीजी — यह दरम दुनियादी तालीमकी हो गये। अत्र भी यह रि अगमें में निराने हूअे अरके अपने पांव पर गदें हूे गकेंगे

या नहीं। कमाजी अलग-अलग दस्तकारियोंमें अलग-अलग होती है। बढाजीगिरीमें विद्यार्थी दो-तीन रुपये रोज कमा सकता है। कताजीके घरेमें बहुत कम मिलता है। आजके जमानेमें मिलवाला काम हाथसे करनेमें आमदनी मिलके मुकाबले बहुत थोड़ी होती है। चरखा-सघके निखंसे तो अन्हें ६ आने या ८ आने रोज मिल जायेंगे। लेकिन अगर प्रान्त भरमे बुनियादी शालाओं चलें, तो चरखा-सघ सारा सूत नहीं खरीद सकेगा। आज भी बहुतसा सूत अँसा है, जो चरखा-सघ नहीं खरीद सकता। और बाजार भावसे बेचने पर तो बहुत कम दाम मिलेंगे। चाहिये तो यह कि स्कूलोका सारा सूत सरकार खरीद ले। किस हालतमें कौनसा बुद्योग अपनाया जाय ?

गाधीजी — आज हम पैसैका हिसाब करते हैं। वह हमें भूल जाना चाहिये। खादी हमारा मध्य-विन्दु है, क्योंकि हम सबको कपडेकी जरूरत पडती है और मेरे सामने तो हिन्दुस्तानके ७ लाख गाँवोका प्रश्न है। आज हमे बुनकरोको लालच देकर, ज्यादा पैसा देकर सूत बुनवाना पडता है। यह मेरी भूल थी कि जितना जोर मैंने किस बात पर दिया कि हरजेक आदमी कातना सीखे, मुतना किस धात पर नहीं दिया कि हरजेक बुनना भी सीखे। लेकिन हाँ, जिसमें वक्त सिर्फ वचतके मुताबिक ही खर्च होना चाहिये। अगर जिसमें सारा समय चला जाय, तो फिर मुझे सोचना होगा। नजी तालीमका शिक्षक भी कारीगर होगा, सिर्फ तनख्वाह लेनेवाला नहीं। युसकी बीबी और बच्चोको भी खुसमे जाना होगा। तब तन्खा सहयोग पैदा होगा। अगर हिन्दुस्तानके गाँव-गाँवमे नजी तालीम चन् नके तो बडा काम हो।

नजी तालीममें खेतीका स्थान

कुछ लोग पूछते हैं कि क्या खेतीको नजी तालीमका मध्य-विन्दु बन सकते हैं। खेतीमे हाथकी कला नहीं मीनी आ मन्ती और नजी तालीम कोजी अँक पैसा निवानेके लिये नहीं है। पर फारसी तालीम देकर मनुष्य बनानेवाली है। अन्गत मरानद रिजार्जिरीके

जीवनका रस दिलाना है। नबी तालीम अपूर्ण जिन्सानोको पूर्ण बनाती है।

जिसलिये मैं खेतीसे शुरू नहीं करता। पर आखिरकी तालीममे खेती आ ही जाती है। जिसके सिवाय काम नहीं चल सकता। फल और तरकारी जुगानेमे तो दिमागको भी काफी तालीम मिलती है। और फिर लडके-लडकियोंके लिये गेहूँ भी पैदा करना है। अन्हे दूब देना है। यह काम पुराने ढाँचेमें नहीं हो सकता। नबी तालीमका क्षेत्र बहुत बड़ा है। उसे तो सारी जिन्दगीका फैसला करना है। नबी तालीमका शिक्षक आला दरजेका कारीगर होगा। देहातके मच लडके कुदरती तौर पर देहातमें ही रहेंगे और शिक्षकमे मिलकर अपनी जरूरतीका सब सामान पैदा करेंगे। जिस तरह सबको मुफ्त शिक्षा मिलेगी।

आज हिन्दुस्तानकी हालत ऐसी है कि देहातमें जो फल और तरकारियाँ पैदा होती हैं, उन्हें देहाती नहीं खाते। श्रावणकोरके देहातमें नारियल पैदा होते हैं, पर वहाँके लोग नारियल नहीं खा सकते। एक जगह पर अकट्टा होकर वे शहरोंमें चले जाते हैं। नबी तालीमके मदरसे होंगे, तो पहले वहाँके लोग नारियल खायेंगे। फल पहले देहाती खायेंगे, फिर दूसरे। आज हम ऐसी फसलें बोते हैं, जो ज्यादासे ज्यादा पैसे लावें, जैसे, तम्बाकू, कपास और नील वगैरा। नबी तालीमके सीखे हुअे लोग ऐसी फसलें पैदा करेंगे, जो जीवनके लिये जरूरी हो।

कांग्रेसकी रचनात्मक समिति

जाकिर साहब — अखिल भारत कांग्रेसकी तरफसे एक रचनात्मक कार्य-समिति बनी है, जिसके मेम्बर आर्यनायकमजी, जाजूजी, कुमारप्पा, शंकरराव देव, जुगलकिशोर, निर्मलदाबू, जयरामदास दौलतराम और सुचेता कृपलानी हैं। जिसकी एक बैठक अलाहाबादमें हुयी। वहाँ यह तय हुआ कि तालीमी सबकी तरफसे हर सूबेके एक मण्डित जिलेकेमें एक ट्रेनिंग स्कूल और एक वुनियादी स्कूल चले।

जाजूजी — अके कार्यक्रम भी बनाया गया, जिसके मुताबिक यह तय हुआ कि प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके भारफ्त काम हो। चन्दा जमा करके वही पैसा भी दे। इस तरह देशभरमें अके लाख वस्त्र-स्वाववम्बी बनानेकी योजना है।

गाधीजी — आज कांग्रेसका तत्र विगड रहा है। जहाँ कांग्रेसके हाथमें सत्ता है, वहाँ तो प्रान्तीय कांग्रेस समिति और सरकार अके होनी चाहिये। वे अके-दूसरीको शक्ति दे। आज सब अपनी-अपनी चलते हैं। किसीको अके-दूसरीकी परवाह नहीं। अन्हे अकेदिल और अकेजान होना चाहिये।

मपूर्णानन्दजी — यह चीज चल नहीं सकती। कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल काम करना चाहते हैं। आप अन्से काम लें, लेकिन कांग्रेस कमेटियोंके भारफ्त आप यह काम नहीं ले सकेंगे। कांग्रेस कमेटी आज सरकारको हुक्म देना चाहती है। यह नहीं बन सकता।

गाधीजी — असा कह सकते हैं कि सरकारको अपनी मर्यादा बनानी चाहिये। आज हम लोगसे चन्दा अकट्टा नहीं कर सकते। वे कहेंगे कि हमने सरकारको दे दिया। अब आपको क्या दें? हमें मन्त्रियोसे कहना चाहिये कि हमे इस रचनात्मक कामके लिये अितने पैसेकी जरूरत है। वे न दे तो हम अूनका विरोध करें और लोगोको सच्ची हालत बता दें। लेकिन जो काम सरकार कर सकती है, उसके लिये हम लोगसे पैसा नहीं माँग सकते।

अविनाशालिंगम् — हरिजनोके लिये तो हम पैसा अकट्टा करते हैं।

गाधीजी — वह दूसरी बात है। वह प्रायश्चित्त है।

अविनाशालिंगम् — सरकारके पान अितने पैसे नहीं हैं कि यह सब काम कर सके।

गाधीजी — हाँ, असा कोभी काम, जो हुक्मत नहीं कर सकते, माँग करें। अ्सके लिये चन्दा भी माँग सकते हैं।

सूची

- अमेरिका ८५, ९८, ९९, — की
'प्रोजेक्ट' पद्धति ८६
- अविनाशिलिगम् चेट्टियर १५३
- आयननायकम् ८८, ९१, १२९, १४२
- आशादेवी ८८, ११५, १३५, १३७
- औस्ट्रियन इंडिया कम्पनी ६०, ११६
- ओ० आर० जे० आर० कजिन्स
१४२, — का पत्र १४२-३
- ओ० डब्ल्यू० विस्को १३९, — का
पत्र १४०-१
- 'अज्युकेशन फॉर लाइफ' ८४
- ओ० लक्ष्मीपति, डॉ० १९
- 'ओरियट' ५३
- कांग्रेस, — का रचनात्मक कार्यक्रम
४२-३; — का शिक्षासम्बन्धी
कार्यक्रम १६, — सरकारका
अर्थ है लोकतंत्रके प्रति
जिम्मेदार ४२-३
- काफा फाउलकर ८४, ८८
- कार्गी विद्यार्थी १६
- रिनी, डॉ० १५६-७
- विशोरलाल मथुराग ८८
- शपलाती, आचार्य १५
- के० टी० शाह, प्रो० ९, १३, ८८,
—की योजना ७२, ७५-६
- कैलन बैंक ८०
- खंभाता, प्रो० ९
- स्वाजा गुलाम सैयदुद्दीन ८८
- गांधीजी, ०अर्थशास्त्र अनैतिक और
नैतिक दोनो ३६-७;
०अहिंसा ४३, —वित्त योजना
का हृदय है ९७, —के जरिये
समाम भ्रमस्याओका हल १०२;
—के जरिये रचनात्मक शिक्षा
१२४, ०अक्षरज्ञान, —को शिक्षा
कहना गलत है १०; —बुद्धि
का विषय नहीं है १३२-३,
०का तकलीफ मुदाहरण
११७-८, ०की शिक्षककी
कल्पना ४०, ०बुधोग, —की
शिक्षाका जग ही गमजना
चाहिये १३२-३; —नवामीग
विज्ञानका मायन ३३, ०दम्न-
कारीके जरिये शिक्षा ११;
०धार्मिक शिक्षाके बारेमें ८३,
११८; ०नबीनामीम १०१-८;

-को जिन्दगीकी तालीम
 बन जाना चाहिये १४८, -मे
 खेतीका स्थान १७२-३,
 ० प्राथमिक शिक्षा ७, १२,
 ३३, ३९, ४३, ४४, ५८, ७९,
 १०८, -पर होनेवाली वर-
 वादी १२६-७, ०प्राथमिक शिक्षा
 के बारेमें ८, १०४, १४६,
 ०वुनियादी तालीम १०९,
 -का असली मुद्दा कोवी न
 कोवी प्रामोद्योग है १२५; -का
 दूसरा पहलू है राष्ट्रीय जाग्रति
 १२८-९, -का ध्येय है पूरी
 प्राथमिक शिक्षा १२२, -के
 मुख्य सिद्धान्त १६१-२,
 ०भाषावार नये विश्व-विद्या-
 लयके बारेमें १५७-६२;
 ०माध्यमिक शिक्षाके बारेमें
 १५, ०युनिवर्सिटीकी शिक्षाके
 बारेमें १५७-६२, ०लेखन-
 कलाके बारेमें ८, ०शरीर-श्रम
 २१, -के जरिये बुद्धिका
 विकास १३३-४, ०शिक्षा
 अनिवार्य और मुक्त होनी
 चाहिये ३६, -और शराबकी
 भाव १४-५, -और शराव-
 बन्दी १६, २३, -का नारभ

कैसे करना ७-८, -का मध्य-
 बिन्दु गावकी दस्तकारी ८, -
 का माध्यम बुद्योग हो ४१,
 -की वर्तमान पद्धति मूलत
 गलत है ५७, -से अग्रजीको
 निकाल देना चाहिये ५९,
 -स्वावलम्बी हो १०, २३-४,
 १२८, ०सम्पत्ति-करके बारे
 में ९-१०, ०सहशिक्षाके
 बारेमें ११०, ०साहित्यिक
 शिक्षाके खिलाफ नहीं ८२,
 ०स्त्रियोंकी शिक्षाका ध्येय
 क्या हो? १४६; ० हाथ
 द्वारा मनको शिक्षा ११५

गूजरात विद्यापीठ १६

जनरल आर्मस्ट्रांग ८४

जवाहरलाल नेहरू ९९, १६७

जाकिर हुसैन, डॉ० ८८, १४८,

-समिति ९१, ९४

जामिया मीलिया अिस्लामिया,
 दिल्ली १६, १०२

जी० असे० अरडेल, डॉ० ५३

जे० सी० कुमारस्वामी ८८

जॉन डी० बोअर, डॉ० ९६

डॉल्स्टॉय ८४, * -फार्मे ३४, ७९

तिलक विद्यापीठ १६

दक्षिण अफ्रीका, ३४, ३५, ५८, ७९

दिलखुश दीवानजी ४४, —का बुनियादी शिक्षाका प्रयोग ४४-८	रामचन्द्रम् १६३ रेवरेड आर० अने० अुसर विलसन १३९
देवप्रकाश १६५	लॉवेक, प्रो० ८
नरहरि परीख २९, ३३, १३१	वर्धा ४९, ९०-१
पुणताम्बेकर ७१	विनोवा ६३-४, ८४, ८८
वालासाहव खेर १४८	श्रीकृष्णदास जाजू ८८
बिहार विद्यापीठ १६	श्री ताबो १२५
बीजापुर १३९	श्रीमन्नारायण अग्रवाल ४९
वेगम हालिदा हानूम १०२	श्री रामकृष्ण ३१
भागवत, प्रो० ८	सर आर्यर जेडिंगटन ५४
मवुन्दन दाम ८४	नावरमती हरिजन आश्रम २९
मनु सूत्रेदार ६४	सुगीला नय्यर, डॉ० १०६
मालवीयजी महाराज ८९	नेगाव ३, ७, ८, २४, ३८
मुनोलिनी ८३, १०२, १०३	हरिजन ४४, ४९, ५७, ६६, १२१
मौलाना साहव (अबुल कलाम आजाद) १६७	हरिजनवन्धु ४४
रविशंकर शुक्ल १२४, १२६, १२९	हरिजनसेवक ६४
	हिटलर १०२, १०३, १२४

